संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

मई-अगस्त 2016

झलकियाँ

अनुवाद पुरस्कार 2015 • लेखक से भेंट • अभिव्यक्ति • अस्मिता • संगोष्ठी • अनुवाद कार्यशाला • परिसंवाद • मेरे झरोखे से • लेखक सम्मिलन • नारी चेतना • साहित्य मंच • व्यक्ति एवं कृति • कवि संधि • नए प्रकाशन

सचिव की क़लम से...

1954 में जब साहित्य अकादेमी की स्थापना हुई, अकादेमी के संस्थापकों ने विविध सांस्कृतिक और भाषायी व साहित्यिक परंपराओं को जोड़े रखना अनिवार्य किया और कहा कि साहित्य अकादेमी का राष्ट्रीय एकता और विकास के लिए यह साहित्यिक योगदान होगा। अनुवाद के द्वारा साहित्य अकादेमी उस शासनादेश को पूरा कर रही है।

साहित्य अकादेमी की गतिविधियों में प्रमुख कार्य अनुवाद है। अनुवाद के द्वारा ही देश के एक क्षेत्र/भाषा को दूसरे क्षेत्रों/भाषाओं तक पहुँचाया जा सकता है। यदि यह कहा जाए कि अकादेमी के कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य भाषांतर प्रक्रिया है, तो अतिश्योक्ति न होगी। जैसा कि ऊपर कहा गया है अनुवाद साहित्य अकादेमी के कामकाज और विकास की कुंजी है। यहाँ तक कि हमारी नई प्रमुख योजना 'विदेश में भारतीय साहित्य' के मूल में अनुवाद ही है। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए विभिन्न क्षेत्रों में कई अनुवाद कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।

मई-जून में विभिन्न भाषाओं के परामर्श मंडलों की बैठक का आयोजन भी किया गया कि आने वाले महीनों में विभिन्न भाषाओं में होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जा सके। अकादेमी के विकास और उन्नति में भाषा परामर्श मंडल के सुझावों और सहयोग की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पूरे वर्ष उनकी सहभागिता और सक्रियता अकादेमी की सफलता का आधार है।

साहित्य अकादेमी द्वारा जून माह में बाल साहित्य पुरस्कार एवं युवा साहित्य पुरस्कार विजेताओं की घोषणा की जाती है। ये पुरस्कार युवा रचनाकारों एवं बाल साहित्यकारों को प्रोत्साहित करते हैं। ये पुरस्कार भारत के युवा रचनाकारों द्वारा रचित उत्कृष्ट रचनाओं का प्रमाण हैं और हमें इन कार्यक्रमों के आयोजन पर गर्व होता है। बच्चे हर सभ्यता का आधार होते हैं, और वे भविष्य के बीज हैं। अतः बच्चों के लिए अच्छा साहित्य उपलब्ध कराना और उनमें पढ़ने की आदत पैदा करना हम सबके लिए ज़रूरी है। अगस्त 2016 में साहित्य अकादेमी ने इंफ़ाल में एक भव्य समारोह में 24 भारतीय भाषाओं के योग्य विजेताओं को अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया।

अकादेमी द्वारा देश की साहित्यिक विभूतियों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए अनेक जन्मशती संगोष्ठियों एवं परिसंवादों का आयोजन तथा उन अवसरों पर उनपर पुस्तकों का प्रकाशन भी किया जाता है।

मैं अपने सभी संरक्षकों एवं साहित्य पारखियों के प्रति नियमित सहयोग एवं समर्थन के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है आप सभी हमारी इस समाचार पत्रिका का आनंद लेंगे।

डॉ. के. श्रीनिवासराव

संपादक की ओर से

साहित्य और जीवन में क्या रिश्ता है — वह किस क़िस्म का है! साहित्य और जीवन में फ़र्क़ क्या है। क्या साहित्य जीवन का अनुसरण मात्र है। यदि जीवन की पुनरावृत्ति या अनुकरण ही साहित्य है तो फिर मूल सृजन और अनुकृति में भेद क्या है?

साहित्य यदि जीवन का सरल अनुकरण मात्र है तो निश्चय ही वह एक निरर्थक प्रक्रिया है जो अधिक से अधिक मनोरंजन में सहायक हो सकती है। वास्तविकता यह है कि साहित्य ज़िंदगी का हिस्सा है और ज़िंदगी नाम है एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया का। बाह्य और यथार्थमूलक, आंतरिक और काल्पनिक। एक लेखक इन दोनों के द्वंद्व के प्रति खूब जागरूक होता है और उससे सृजन में लाभान्वित होता है। मैथ्यू अर्नाल्ड ने साहित्य को जीवन की समालोचना कहा था तो उनका मंतव्य यही था कि साहित्य सामाजिक और वैयक्तिक ज़िंदगी का चित्र भर नहीं है, उसकी आलोचना है। साहित्य यदि जीवन की आलोचना है तो वह केवल वर्तमान से संतुष्ट नहीं हो सकता है। आलोचना का उद्देश्य हमेशा नया निर्माण होता है जिसके लिए कल्पना की आवश्यकता होती है जिसमें एक विशेष दृष्टिकोण समाहित होता है।

संपादक : डॉ. ख़ुर्शीद आलम
ई-मेल : po.ho1@sahitya-akademi.gov.in

अनुवाद पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह

4 अगस्त 2016, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी द्वारा 24 भाषाओं के अनुवाद पुरस्कार विजेताओं को महाराजा चंद्रकीर्ति ऑडिटोरियम, इंफ़ाल में एक शानदार समारोह में 4 अगस्त 2016 को वर्ष 2015 के लिए अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह का प्रारंभ मणिपुरी में पारंपरिक स्तुति से हुई। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गणमान्यों, पुरस्कृत अनुवादकों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा यह भी बताया कि कैसे अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में शामिल हुई और कैसे देश के सर्वत्र भागों में 24 अनुसूचित भाषाओं में अनुवाद के प्रचार के लिए अकादेमी ने अनेक क़दम उठाए। सुप्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. रघुवीर चौधरी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में अनुवाद के महत्त्व विशेषकर भारत जैसे बहुभाषी समाज में और उसकी प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अनुवाद कैसे वास्तविक रूप से प्रायोगिक अनेकता में एकता के दर्शन को उजागर करती है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में क्षेत्रीय साहित्य के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं भारतीय साहित्य की संपन्नता में अनुवाद की क्या भूमिका है, के बारे में बात की। उन्होंने इस बात की भी प्रसन्नता ज़ाहिर की कि अकादेमी मणिपुर में पहली बार पुरस्कार महोत्सव का आयोजन कर रही है। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम का सार प्रस्तुत करते हुए प्रशस्ति पत्र का वाचन किया, वहीं डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले अनुवादकों का स्वागत किया। सभी पुरस्कृत अनुवादकों ने स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र और रु. 50,000/- का चेक प्राप्त किए। अनुवाद पुरस्कार 2015 के पुरस्कृत अनुवादकों (विजेताओं) की सूची इस प्रकार है :

स्वागत वक्तव्य देते डॉ. के. श्रीनिवासराव

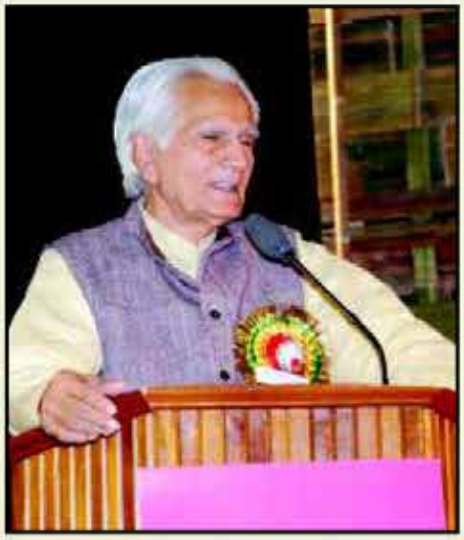

मुख्य अतिथि प्रो. रघुवीर चौधरी

अध्यक्षीय वक्तव्य देते डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

कुछ पुरस्कृत रचनाकार

अनुवाद पुरस्कार 2015

भाषा	अनूदित शीर्षक	अनुवादक	मूल शीर्षक, विधा, भाषा तथा लेखक
असमिया	गणदेवता	सुरेन तालुकदार	गणदेवता (उपन्यास), बाङ्ला, ताराशंकर बंद्योपाध्याय
बाङ्ला	अनामदासेर पुथि	मौ दासगुप्त	अनामदास का पोथा (उपन्यास), हिंदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी
बोडो	जाहारनि मोन्थाइ	धनश्री स्वरगियारि	अरण्येर अधिकार (उपन्यास), बाङ्ला, महाश्वेता देवी
डोगरी	किन्ने पाकिस्तान	छत्रपाल	कितने पाकिस्तान (उपन्यास), हिंदी, कमलेश्वर
अंग्रेज़ी	भारतीपुरा	सुशीला पुनीता	भारतीपुरा (उपन्यास), कन्नड, यू.आर. अनंतमूर्ति
गुजराती	जेणे लाहौर नथी जोयुं ए जन्म्यो ज नथी	शरीफ़ा वीजलीवाला	जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ (नाटक), हिंदी, असग़र वज़ाहत
हिन्दी	बारोमास	दामोदर खड़से	बारोमास (उपन्यास), मराठी, सदानंद देशमुख
कन्नड	कोचेरेती	एन. दामोदर शेट्टी	कोचेरेती (उपन्यास), मलयाळम्, नारायण
कश्मीरी	लाल दद्य	रतन लाल शांत	लल दद्य (उपन्यास), डोगरी, वेद राही
कोंकणी	राम दरबारी	जयमाला ना. दनैत	राग दरबारी (उपन्यास), हिंदी, श्रीलाल शुक्ल
मैथिली	बदलि जाइछ घरेटा	देवेंद्र झा	बाड़ी बदले जाय (उपन्यास), हिंदी, बाङ्ला, रमापद चौधुरी
मलयाळम्	गोरा	के.सी. अजय कुमार	गोरा (उपन्यास), बाङ्ला, रवींद्रनाथ ठाकुर
मणिपुरी	लीशीङ अमा शुपना मरिफू मरिगी ममा	नाओरम खगेन्द्र	हजार चौरासीर मा (उपन्यास), बाङ्ला, महाश्वेता देवी
मराठी	दोन उँगलिया च दरमियान	बलवंत वसंत जेउरकर	दो पंखुड़ियों के बीच (कविता), हिंदी, राजेश जोशी
नेपाली	बिराटाकी पद्मिनी	शंकर प्रधान	विराट की पद्मिनी (उपन्यास), हिंदी, वृंदावनलाल वर्मा
ओड़िया	कावेरी भली झिअटिए	शकुंतला बलिआर सिंह	आरु काबेरयाइ पोला (उपन्यास), तमिळ, त्रिपुरसुंदरी लक्ष्मी
पंजाबी	मनोज दास दीआं कहानीआं	बलबीर परवाना	मनोज दासंक गल्प (कहानी), ओड़िया, मनोज दास
राजस्थानी	मदन बावनियो	मदन सैनी	मदन बावनिया (उपन्यास), हिंदी, राजेंद्र केडिया
संस्कृत	अहमेव राधा अहमेव कृष्णः	ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'	मैं ही राधा मैं ही कृष्ण (कविता), हिंदी गुलाब कोठारी
संताली	बापलानीज़	ताला टुडु	परिणीता (उपन्यास), बाङ्ला, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय
सिंधी	लल दद्य	सरिता शर्मा	लल दद्य (उपन्यास), डोगरी, वेद राही
तमिळ	मीतची	गौरी किरुबनंदन	विमुक्त (कहानी), तेलुगु, वोल्गा
तेलुगु	सुफ़ी चोप्पिना कथा	एल.आर. स्वामी	सूफ़ी परंज कथा (उपन्यास), मलयाळम्, के.पी. रामनुन्नी
उर्दू	गीतांजलि	सुहैल अहमद फ़ारूक़ी	गीतांजलि (कविता), बाङ्ला, रवींद्रनाथ ठाकुर

श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

6 अगस्त 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता प्रख्यात बाङ्ला कवि श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में 6 अगस्त 2016 को आयोजित शानदार समारोह में प्रदान किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती का स्वागत किया और श्रोताओं को उनका परिचय दिया। उन्होंने महत्तर सदस्यता का सम्मान-पत्र पढ़ा। अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया और कहा कि नीरेंद्रनाथ जी को साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हुए उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। श्री तिवारी ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की आधुनिक भारतीय साहित्य के प्रति निष्ठा को रेखांकित करते हुए उनकी कुछ कविताओं का पाठ किया एवं उनकी कविताओं की अनेक अद्वितीय विशेषताओं को उजागर भी किया। अपने स्वीकृति वक्तव्य में श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती ने उन्हें यह सम्मान प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी का धन्यवाद किया। श्री चक्रवर्ती ने साहित्य अकादेमी के साथ अपने लम्बे सम्बंध को स्मरण किया तथा अपनी पुस्तक 'उलंगा राजा' को अनेक भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करने के लिए अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कविता-युग के बारे में बात की और अपने कविता लेखन में प्लेटो, अरस्तु, शेली और कुछ अन्य के प्रभाव को उद्धृत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य का समापन यह कहते हुए किया कि लोग कविता क्यों पढ़ते हैं और इसे रेखांकित किया कि कविता प्रसन्नता देती है, हमारे दर्द को शांत करती है तथा जीवन के साथ आशा को बनाए रखती है।

महत्तर सदस्यता कार्यक्रम के साथ ही 'संवाद' कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें सुप्रसिद्ध साहित्यकारों प्रो. नबनीता देव सेन, प्रो. पवित्र सरकार एवं श्री सुबोध सरकार ने भागीदारी की और श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती के जीवन और कार्य के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सिरशेन्दु मुखोपाध्याय ने की। प्रो. नबनीता देव सेन ने श्री नरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की हाज़िर जवाबी और उनकी संवेदनशीलता का उनपर प्रभाव के बारे में बात की। प्रो. पवित्र सरकार ने उनके दिलचस्प तथ्यों को उजागर किया, जैसे वे एक पत्रकार थे। उन्होंने गद्य एवं रोमांच तथा जी.के. चेस्टरटॉन सहित अनेक अनुवाद किए हैं। प्रो. सुबोध सरकार ने कहा कि श्री नीरेंद्रनाथ जी की कितनी कविताओं का अनुवाद अनेक भारतीय भाषाओं में हुआ है और अनेक उभरते कवियों को उन्होंने प्रेरित किया तथा श्री चक्रवर्ती की कविता की अनेक बारीकियों के बारे में बात की। श्री सिरशेन्दु मुखोपाध्याय ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की मानवीयता, साहित्यकारों का समर्थन, पत्रिकाओं के संपादन में उनकी दक्षता को उजागर किया और रोचक यादों को भी साझा किया। सचिव, साहित्य अकादेमी डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को सम्मानित करते विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साथ में अकादेमी के सचिव

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा 9 मई 2016 को 'टैगोर और गाँधी : दुविधाएँ, संवाद, मतभेद' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन अकादेमी के सभागार में किया गया जिसमें विषय से संबंधित विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव।

अभिव्यक्ति

5-6 अगस्त 2016, इंफ़ाल

अभिव्यक्ति कार्यक्रम का आयोजन अनुवाद पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह के साथ ही महाराजा चंद्रकीर्ति समागार, इंफ़ाल में किया गया। सचिव, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण दिया, साथ ही पूर्वोत्तर क्षेत्र में अकादेमी द्वारा साहित्य के उन्नयन हेतु उठाए जा रहे क़दमों के बारे में संक्षेप में जानकारी दी। उन्होंने अभिव्यक्ति कार्यक्रम के बारे में भी बताया। प्रो. एच. बेहारी सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल ने बताया कि यह कार्यक्रम कैसे अभिव्यक्ति का एक बेहतर माध्यम है। उन्होंने अपने कुछ सुझाव दिए। साथ ही इस बहुभाषिक कार्यक्रम का हिस्सा होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। प्रो. तमुसला आवो, प्रतिष्ठित कवि, लेखक और लोक कलाकार ने रचनात्मक अभिव्यक्ति के बारे में बताते हुए कहा कि केवल लेखक ही यह काम नहीं करते बल्कि पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक आम आदमी समाज का गहरे रूप में निरीक्षण करता है। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने कहा कि अभिव्यक्ति विचारों का अभव्यक्तिकरण है और कविताओं का ईश्वर है। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा मंच है जहाँ रचनाकार अपने

वक्तव्य देते प्रो. एच. बेहारी सिंह

अनुभवों और भावों को अभिव्यक्त करते हैं। इस सत्र में आठ लेखकों ने अपने आलेख का वाचन किया जिनमें पंकज गोविंदा मेधी (असमिया), बिजॉय बग्लरी (बोडो), शिवदेव सुशील (डोगरी), हरिराम द्विवेदी (हिंदी), एल. इबीम्हल देवी (मणिपुरी), इंदु प्रवा देवी (नेपाली), यूमा वसुगी (तमिळ) अैर ए.एस.पी.एस. रवि प्रकाश (तेलुगु) शामिल थे। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अंत में प्रतिभागियों एवं गणमान्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र में लघु कहानियों का पाठ आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता के. राधा कुमार ने की जिसमें चार कथाकारों - जयप्रकाश माविनकुलि (कन्नड), शीला कोलंबकर (कोंकणी), के. ए. बीना (मलयाळम्) तथा जी.के. एनापुरे (मराठी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। अध्यक्ष के. राधाकुमार ने भी अपनी दो कहानियों का पाठ किया। वहीं दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. हरीश त्रिवेदी ने किया, जिसका विषय था 'लेखन में मेरी प्रेरणाएँ'। पाँच प्रख्यात लेखकों अमर मित्र (बाङ्ला), महेंद्र सिंह परमार (गुजराती), संतोष एलेक्स (हिंदी), एल. लोयाचंद्र सिंह (मणिपुरी) और सीतेश त्रिपाठी (ओडिया) ने अपने आलेख पढ़े। प्रो. हरीश त्रिवेदी ने समापन वक्तव्य में अपने अनेक प्रकार के अनुभव और लेखन के लिए प्रेरक तत्त्वों को बताया। तृतीय सत्र में कविता पाठ का आयोजन था जिसकी अध्यक्षता डॉ. सुदीप सेन ने किया। इस सत्र में 9 कवियों रहीम रहबर (कश्मीरी), कुमार मनीष अरविंद (मैथिली), एन. किरनकुमार (मणिपुरी), बलजीत सिंह रैना (पंजाबी), मीयेश निर्मोही (राजस्थानी), बनमाली बिस्वाल (संस्कृत), जोबा मुर्मू (संताली), नामदेव ताराचंदानी (सिंधी), शकील शम्सी (उर्दू) और तेमसुला आवो (अंग्रेज़ी) ने कविता-पाठ किया। श्री गोपाल च. बर्मन, क्षेत्रीय सचिव, कोलकाता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

एक सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते प्रो. हरीश त्रिवेदी

संगोष्ठी

राजेन्द्र सिंह बेदी जन्मशतवार्षिकी

7-8 मई 2016, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा तिलंगाना स्टेट उर्दू एकेडमी, हैदराबाद के सहयोग से दो-दिवसीय राजेन्द्र सिंह बेदी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन हैदराबाद के होटल ग्रांड प्लाज़ा में 7-8 मई 2016 को किया गया। 7 मई 2016 को उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध उर्दू कथाकार प्रो. अब्दुस्समद ने की। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी में आए अतिथियों का स्वागत किया। बीज-भाषण प्रसिद्ध उर्दू कहानीकार प्रो. बेग एहसास ने प्रस्तुत किए। उन्होंने राजेन्द्र सिंह बेदी के नाविलों के हवाले से अपना लेख पढ़ा तथा उनके जीवन के अन्य पहलूओं को भी रेखांकित किया। संगोष्ठी में उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रसिद्ध उर्दू कथाकार रतन सिंह ने बेदी के साथ गुज़ारे अपने समय को याद किया तथा उनके साथ अपने परिवारिक संबंध को भी बताया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अब्दुस्समद ने राजेन्द्र सिंह बेदी को उर्दू अफ़साने का रोल मॉडल क़रार दिया। तिलंगाना स्टेट उर्दू एकेडमी, हैदराबाद के डायरेक्टर प्रो. एस. ए. शकूर ने बेदी पर अकादेमी के इस आयोजन पर अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर की तथा साहित्य अकादेमी को हैदराबाद में ऐसे कार्यक्रम को बराबर आयोजित करने की सलाह दी और भरोसा दिलाया कि तिलंगाना स्टेट उर्दू एकेडमी साहित्य अकादेमी के साथ मिलकर आगे भी कार्यक्रम करेगी। उर्दू की प्रसद्धि लेखिका जीलानी बानो ने भी इस सत्र में भाग लिया तथा बेदी पर अपने ख़यालात का इज़्हार किया। सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने सभी का धन्यवाद किया।

8 मई 2016 को हुए पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाफ़े क़िदवई ने की तथा तारिक़ छतारी, मौला बख़्श एवं फ़िरोज़ आलम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. ख़ालिद क़ादरी ने की जबकि निज़ाम सिद्दीक़ी, शमीम तारिक़ एवं रहमान अब्बास ने अपने आलेख पढ़े। अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. अशरफ़ रफ़ी ने की जिसमें फ़ैयाज़ रिफ़अत, हबीब निसार एवं वसीम बेगम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

बायें से : रतन सिंह (माइक पर), के. श्रीनिवासराव, चंद्रभान ख़याल एवं अब्दुस्समद

कृष्ण वरियार एवं भारतीय कविता

13 मई 2016, त्रिशुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु द्वारा एन.वी. कृष्णा वारियर मैमोरियल ट्रस्ट, कालीकट के संयुक्त तत्त्वावधान में एन. वी.

वक्तव्य देते सी. राधाकृष्णन

कृष्ण वारियर एवं भारतीय कविता विषयक कृष्ण वरियर जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर केरल साहित्य अकादेमी सभागार त्रिशुर में 13 मई 2016 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संक्षेप में कृष्ण वारियर के भारतीय साहित्य में मलयाळम् कविता के द्वारा योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने श्री वारियर की बहुमुखी प्रतिभा का भी उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने श्री वारियर के साथ अपने बिताए गए क्षणों को साझा करते हुए उनके पत्रकारिता के मूल्यों को रेखांकित किया। मराठी के श्री चंद्रकांत पाटिल ने उन विभूतियों का संक्षेप में उल्लेख किया जिन्होंने मराठी कविता के रूप को बदला। श्री मनु चक्रवर्ती ने क्रमवार साहित्यिक घेराबंदियों को नकारते हुए सदियों से कन्नड कविता के अंतरसंबंधों का उल्लेख किया। हिंदी के श्री लीलाधर मंडलोई ने हिंदी कविता पर 'तार सप्तक' और 'मुक्तिबोध' के प्रभाव को रेखांकित किया। भोजनोपरांत के सत्र में श्री एस.के. वासंथन तथा श्री आत्मारामन ने मलयाळम् कवियों के विलक्षण प्रयोगों (विशेषतः एन. वी. के संदर्भ में) विभिन्न सामाजिक-राजनैतिक चुनौतियों का उल्लेख किया। संगोष्ठी का समापन सत्र एन.वी. के योगदान को समर्पित था जिसमें श्री सुनील पी. इलैयादम ने एस. वी. की कविता राजनैतिक अंतरलहरों की बात की। श्री एन. अजय कुमार ने एन. वी. की एक आलोचक के रूप में भूमिका को रेखांकित किया तथा श्री पी. पवित्रन ने एन. वी. की मलयाळम् कविता के विकास में स्वतः ज्ञान की बात की। अंतिम सत्र 'आदान प्रदान' का सत्र था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री एम. थॉमस मैथ्यू ने की। श्री पी. वी. कृष्णन नायर ने अनुवाद का सिद्धांत और विधि के बारे में बात की। प्रो. अरविंदाक्षन ने हिंदी से मलयाळम् और मलयाळम् से हिंदी के अनुवाद से संबंधित अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

तुलनात्मक साहित्य

14-15 मई 2016, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा कश्मीरी भाषा में 'तुलनात्मक साहित्य' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 14-15 मई 2016 को सेमिनार हॉल, जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ में किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने मेहमानों का स्वागत किया। इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं कश्मीरी भाषा के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान प्रो. रहमान राही ने की। हिंदी के विद्वान प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था जिन्होंने तुलनात्मक साहित्य पर एक विस्तृत आलेख प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने आरंभिक वक्तव्य दिया और साहित्य अकादेमी की कश्मीरी भाषा में किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। सत्र के अंत में सचिव महोदय ने अतिथियों का धन्यवाद किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. मजरूह रशीद ने की तथा फ़ारूक़ फ़ैयाज़, गुलाम रसूल जोश, सतीश विमल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता कल्चरल एकेडमी के सचिव डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने की तथा इस सत्र में गुलाम नबी ख़याल एवं शाद रमज़ान ने अपने आलेख पढ़े। तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. गुलाम नबी ख़याल ने की जबकि शफ़ी शौक़, बशर बशीर एवं वली मुहम्मद असीर ने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाद रमज़ान ने की। इस सत्र में फ़ारूक़ नाज़की, ओमकार एन. कौल एवं अब्दुर्रशीद लोन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में प्रो. मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने सभी प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद किया।

बायें से : गुलाम रसूल जोश, मजरूह रशीद, फ़ारूक़ फ़ैयाज एवं माइक पर मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा

यू. आर. अनंतमूर्ति : जीवन एवं दर्शन

19 मई 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा 'यू. आर. अनंतमूर्ति : जीवन एवं दर्शन' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन 19 मई

2016 को कृष्णराजा परिषणमंदिर में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने सचिव साहित्य अकादेमी का स्वागत भाषण पढ़कर सुनाया तथा यू. आर. अनंतमूर्ति के भारतीय साहित्य में योगदान का उल्लेख किया। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री अनंतमूर्ति के विभिन्न योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि ऐसे बहुमुखी व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के बारे में चर्चा करने के लिए एक दिन की यह संगोष्ठी अपर्याप्त होगी। प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रो. अनंतमूर्ति के रचनात्मक दृष्टि, अंतःप्रज्ञात्मक विश्लेषणात्मक योग्यता एवं प्रशासनिक दक्षता के बारे में बात करते हुए कुछ मार्मिक घटनाओं का उल्लेख किया। उन्होंने प्रो. अनंतमूर्ति के लोकतांत्रिक मूल्यों के विश्वास के बारे में भी बात की। डॉ. सी. एन. रामचंद्रन ने अपने बीज वक्तव्य में अनंतमूर्ति की तार्किक विशेषता के बारे में बात की और अंतर्निहित दोहरी विशेषताओं का उल्लेख किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. टी. वी. अशोक ने की तथा डॉ. यू. एन. गणेश, डॉ. के. सत्यनारायण एवं श्री कृष्णा मसादी ने अनंतमूर्ति की रचना प्रक्रिया, अनंतमूर्ति की भारतीय मूल्यों की अवधारणा और अनंतमूर्ति सबसे अधिक ग़लत समझे जाने वाले लेखक के बारे में बात की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. गिरड्डी गोविंदराज ने की तथा यह सत्र क्षेत्रीय भाषाओं पर अनंतमूर्ति के साहित्य का प्रभाव विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में प्रो. सुशीला पुनीता, डॉ. ए. के. रामकृष्णन, प्रो. पी. राजा एवं श्रीमती सुजाता पटवारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने की। श्री सुब्रह्मण्यम ने अनंतमूर्ति के साथ बिताए गए अपने साठ वर्षों की यादों को साझा किया और बताया कि अनंतमूर्ति ने साहित्य में संवाद संस्कृति की स्थापना की। डॉ. बालसुब्रह्मण्यम ने आधुनिक कन्नड साहित्य में अनंतमूर्ति के योगदान को रेखांकित किया। क्षेत्रीय सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अतिथियों का स्वागत करते अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

अध्यक्षीय वक्तव्य देते डॉ. चंद्रशेखर कंबार

ग़दर और ओडिया साहित्य

22-23 मई 2016, खुर्दा, ओडिशा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बरौनी ओ खुर्दागढ़ विकास परिषद् के सहयोग से 22-23 मई 2016 को प्रसिद्ध विद्रोह की 200 वीं वर्षगाँठ पर 'ग़दर और ओडिया साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। खुर्दा का प्रसिद्ध पइका विद्रोह ओडिशा इतिहास का अविस्मरणीय अध्याय है। यह 1817 में आरंभ हुआ था तथा वर्षों तक जारी रहा। ओडिया पइका के प्रसिद्ध योद्धा बक्शी जगबंधु विद्याधर महापात्र के नेतृत्व में ब्रिटिश उत्पीड़न के विरुद्ध गंभीरता से लड़े।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात

ओडिया कथाकार विभूति पटनायक ने किया। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री डोलगोबिंद प्रधान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अकादेमी के ओडिया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने ग़दर साहित्य पर अपना आरंभिक वक्तव्य दिया तथा निवेदिता मोहंती ने बीज-वक्तव्य दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बरौनी ओ खुर्दागढ़ विकास परिषद् के अध्यक्ष श्री दिलीप श्रीचंदन ने की। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल चंद्र बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में ओडिशा राज्य अभिलेखागार के भाग्यलिपि मल्ला द्वारा पइका विद्रोह पर एक ऑडियो विज़ुअल प्रस्तुत किया गया। प्रसिद्ध लेखक व आलोचक श्री प्रीतिश आचार्य व श्री लक्ष्मीनारायण सिंह ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता श्री देवाशीष पाणिग्रही ने की। दूसरे सत्र में श्री अशोक पटनायक, देवेंद्र कुमार दाश एवं वंशीधर राउत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के ओडिया परामर्श मंडल के अध्यक्ष श्री विजयानंद सिंह ने की।

तीसरे सत्र में सर्वश्री लालतंदु दास महापात्र एवं सत्यवादी बलियार सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र में सर्वश्री बाबाजी चरण पटनायक एवं गोपालकृष्ण दास ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र की अध्यक्षता क्रमशः प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्रीमती आदरमणि बराल एवं श्री भीमसेन प्रधान ने की। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री नारायण राव ने की तथा समापन वक्तव्य श्री अतुलचंद प्रधान ने दिया। अकादेमी के ओडिया परामर्श मंडल के अध्यक्ष श्री बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पारसमणि : व्यक्तित्व और कृतित्व

27-28 मई 2016, कलिम्पोङ

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कलिम्पोङ के संयुक्त तत्त्वावधान में

संगोष्ठी का एक दृश्य

27-28 मई 2016 को वर्शिप सेंटर, कलिम्पोङ में नेपाली के प्रतिष्ठित साहित्यकार पारसमणि प्रधान के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रतिष्ठित नेपाली आलोचक तथा सिक्किम विश्वविद्यालय के डीन प्रो. प्रतापचंद्र प्रधान ने किया।

संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। इस अवसर पर आरंभिक वक्तव्य देते हुए अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने पारसमणि प्रधान के साहित्यिक महत्त्व को उजागर किया। प्रतिष्ठित नेपाली आलोचक डॉ. जस योञ्जन 'प्यासी' ने अपने बीज वक्तव्य में पारसमणि प्रधान के व्यक्तित्व का रेखांकन करते हुए उनके संपूर्ण साहित्य का आकलन प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अध्ययन समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञान सुतार ने की।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित नेपाली साहित्यकार डॉ. गोकुल सिन्हा ने की। इस सत्र में नवीन पौड्याल (नेपाली भाषा को पारसमणि प्रधान का योगदान), श्री परशुराम पौड्याल (नेपाली व्याकरण लेखन और कोश निर्माण में पारसमणि प्रधान की भूमिका), श्री महेश प्रधान (नीतिवादी साहित्यकार के रूप में पारसमणि प्रधान) तथा श्री भुवन खनाल (पारसमणि प्रधान की जीवनी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र श्री एम. बी. प्रधान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसके अंतर्गत श्री मेहमान सुब्बा, श्री बीनेश प्रधान और श्री दिवाकर प्रधान ने क्रमशः 'बालसाहित्यकार के रूप में पारसमणि प्रधान', 'नेपाली गद्य के विकास में 'चंद्रिका' और 'भारती' पत्रिका की भूमिका' तथा 'भाषा अध्यवसायी पारसमणि प्रधान' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का तृतीय सत्र दूसरे दिन प्रो. कृष्णराज घतानी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में श्री संजय बिष्ट (संपादक के रूप में पारसमणि प्रधान) तथा श्री मेघनाथ छेत्री (पाठ्य पुस्तक लेखक के रूप में पारसमणि प्रधान) ने अपने आलेखों का पाठ किया।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता श्री कुमार छेत्री ने की। समापन व्याख्यान प्रख्यात नेपाली कवि और आलोचक डॉ. जीवन नामदुङ

ने दिया। संपूर्ण संगोष्ठी का संचालन तथा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन अध्ययन समिति के महासचिव प्रो. बी.बी. शर्मा ने किया।

मौखिक कविता : प्रदर्शन और सौंदर्य

18 जून 2016, कोकराझार, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'मौखिक कविता : प्रदर्शन और सौंदर्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन कोकराझार में 18 जून 2016 को किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बोडो साहित्यकार श्री जनिल कुमार ब्रह्म ने किया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध बोडो कवि ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा बोडो मौखिक कविता के संरक्षण और अन्वेषण के महत्त्व को बताया। उन्होंने कई आधुनिक कवियों को उद्धृत किया जिन्होंने व्यापक रूप से अपने लेखन में मौखिक सामग्री का प्रयोग किया है।

बीज वक्तव्य श्री अनिल बोरो ने प्रस्तुत किया। उन्होंने बोडो मौखिक कविता के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की। यद्यपि लिखित बोडो साहित्य अब भी शैशवावस्था में है लेकिन वे मौखिक लोक आख्यान में बहुत समृद्ध हैं। यू. एन. एकेडमी के निदेशक कृष्ण गोपाल बसुमतारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता जनिल कुमार ब्रह्म ने की। इस सत्र में अदरम असुमतारी ने 'बोडो क़सीदेः मौखिक गायन और सौंदर्यशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र में दूसरा आलेख श्री नरेश्वर नार्जरी ने 'बोडो संस्कारिक गीत' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र में तीसरा आलेख गोपीनाथ बरगयारी ने 'बोडो सागू गीत' विषय पर प्रस्तुत किया। सत्र में अंतिम आलेख संसुमा खुंगुर बोरो ने 'रेडियो प्रस्तुति में बोडो लोकगीत' विषय पर प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री अनिल बोरो ने की। इस सत्र में 'गीत/खेल गीत : प्रदर्शन और सौंदर्यशास्त्र' विषय पर इंदिरा बोरो द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया। दूसरा आलेख तुलन मुसहरी 'मौखिक लिखित सातत्य : जीबी बिथाई और अन्य मौखिक कविता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तीसरा आलेख रहेंद्र ब्रह्म द्वारा 'नई मीडिया में बोडो मौखिक गीत' विषय पर प्रस्तुत किया गया। सत्र में अंतिम आलेख रवीरब ब्रह्म 'बोडो विवाह गीत और फुसली हबा गीत' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता सुबंग बसुमतारी ने की। सत्र में प्रथम आलेख भूपेन बोरा ने 'रामू मौखिक कविता : प्रदर्शन एवं सौंदर्यशास्त्र' विषय पर प्रस्तुत किया। सत्र में अंतिम आलेख राजीव बारदोलोई द्वारा 'तिवा मौखिक कविता' विषय पर प्रस्तुत किया गया।

संगोष्ठी का एक दृश्य

कलाचंद्र शास्त्री का कृतित्व

21 जून 2016, इंफ़ाल

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा नहारोल साहित्य प्रेमी समिति इंफ़ाल के सहयोग से 21 जून 2016 को दवे लिट्रेचर सेंटर इंफ़ाल में कलाचंद्र शास्त्री के कृतित्व पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नहारोल साहित्य प्रेमी समिति के अध्यक्ष प्रो. पी. नाबाचंद्र सिंह ने की तथा आरंभिक वक्तव्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने दिया। अकादेमी के सहायक संपादक गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान कलाचंद्र सिंह शास्त्री ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतियों से मणिपुरी साहित्य को समृद्ध करने में बड़ा योगदान दिया है। श्री शास्त्री को 'महाभारत' के मणिपुरी अनुवाद के लिए अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अपने उद्घाटन संबोधन में श्री एच. बिहारी सिंह ने कहा कि कलाचंद्र शास्त्री का व्यक्तित्व बहुमुखी था जिसने एक संस्कृत विद्वान की हैसियत से मणिपुरी साहित्य के विकास एवं संस्कृति में सराहनीय योगदान दिया।

प्रो. पी. नाबाचंद्र सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि यह संगोष्ठी एक संस्कृत विद्वान के उपलब्धियों पर आयोजित की जा रही है जिसने अपने लेखन से मणिपुरी साहित्य को समृद्ध किया। नाहारोल साहित्य प्रेमी समिति के महासचिव एच. बिनोद कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित ख. प्रकाश सिंह ने की। श्री अभुसना शर्मा शास्त्री ने 'कलाचंद्र शास्त्री के संस्मरण', एलाङ्गम् दिनामणि ने 'कलाचंद्र शास्त्री एक अनुवादक के रूप में' तथा आई. एस. काङ्जम ने 'कलाचंद्र शास्त्री की भाषा और साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान अभुसना शर्मा ने कलाचंद्र शर्मा से व्यक्तिगत लगाव एवं विद्वान के जीवन की यादों को साझा किया।

दूसरे सत्र में पी. नाबाचंद्र सिंह ने कलाचंद्र शास्त्री की कृतियों पर, ना. प्रेमचंद सिंह ने 'कलाचंद्र शास्त्री : एक नाटककार और कलाकार के रूप में' तथा लनचेन मीतै ने 'कलाचंद्र शास्त्री एक लेखक के रूप में' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता एवं संयोजन पुनः ख. प्रकाश सिंह ने की।

संगोष्ठी में भारी संख्या में मणिपुरी एवं संस्कृत विद्वान मौजूद थे।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

कन्नड काव्यशास्त्र के स्वरूप

25-26 जून 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा सुचित्रा सिनेमा एंड कल्चरल एकेडमी के सहयोग से 'कन्नड काव्यशास्त्र के स्वरूप' विषय पर 25-26 जून 2016 को बेंगळूरु में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए भारतीय भाषाओं के काव्यशास्त्र के अध्ययन के विकास के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों की संक्षेप में चर्चा की। अपने आरंभिक वक्तव्य में प्रसिद्ध कन्नड विद्वान प्रो. के. एस. मधुसूदन ने अकादेमी द्वारा इस विषय पर संगोष्ठी के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में इस प्रकार की संगोष्ठी अन्य क्षेत्रों की भाषाओं में भी आयोजित की जाएगी। श्री मधुसूदन ने कहा कि कन्नड साहित्य का शिष्ट साहित्य के काव्यशास्त्र में बड़ा योगदान है, किंतु अभी अदृश्य लोक साहित्य में किए गए कार्यों का मूल्यांकन करना शेष है। अपने बीज वक्तव्य में श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने समस्त भारतीय भाषाओं पर विशेषतः काव्यशास्त्र के अध्ययन पर औपनिवेशिक प्रभाव की भ्रांतियों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि हम अब भी उन भ्रांतियों से बाहर नहीं आ सके हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इसको मूलरूप से अनुभव किया जाना चाहिए बजाय इसके कि इसका सूखे शब्दों में विश्लेषण किया जाए। सुचित्रा सिनेमा एंड कल्चरल एकेडमी के चेयरमैन श्री के. वी. आर. टैगोर भी इस सत्र में उपस्थित थे तथा बेंगळूरु यूनिवर्सिटी की एच. शशिकला ने कार्यक्रम का संचालन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. बी. एन. सुमित्रा बाई ने की। डॉ. श्रीराम भट् तथा प्रो. ओ. एल. नागभूषण स्वामी ने 'संस्कृत काव्यशास्त्र' तथा 'ग्रीक-लैटिन काव्यशास्त्र' पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. सुमित्रा बाई ने कहा कि यद्यपि कन्नड साहित्य स्वयं औपनिवेशिक प्रभाव से बाहर आया और उससे लाभ उठाया, महत्त्वपूर्ण यह है कि हमें उसके बाद स्वयं को प्रक्षेप करना चाहिए था।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. पी. वी. नारायण ने की। प्रो. एच. शशिकला ने 'प्रकृति काव्यशास्त्र के पक्ष' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. एस. कॉर्लोस ने 'द्रविड़ काव्यशास्त्र के लक्षण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. बसवराज कलगुडी ने की। प्रो. ओ. एल. नागभूषण स्वामी तथा प्रो. केशव शर्मा ने 'कन्नड काव्यशास्त्र के लक्षण तथा विलक्षण' तथा 'कन्नड काव्यशास्त्र पर पाश्चात्य काव्यशास्त्र का प्रभाव' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. गिरडडी गोविंदराज ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. आर. शेषास्त्री ने समापन वक्तव्य दिया। सुचित्रा फ़िल्म एंड कल्चरल एकेडमी के ट्रस्टी आनंद सभापति ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संताली साहित्य का इतिहास

17-18 जुलाई 2016, बारीपदा (ओडिशा)

साहित्य अकादेमी ने उत्तर ओडिशा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में बारीपदा, ओडिशा के विश्वविद्यालय के ट्राइबल स्टडीज़ सेंट्रल हॉल में 17-18 जुलाई 2016 को

संगोष्ठी का एक दृश्य

'संताली साहित्य का इतिहास' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन उत्तर ओडिशा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रफुल्ल कुमार मिश्र ने किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में किसी भाषा की गहराई की साफ़ तस्वीर के बारे में बताया। कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने सभी का स्वागत किया और भारतीय भाषाओं के उत्थान के लिए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इस प्रकार के संगोष्ठी की विशेषता बताई। उन्होंने कहा कि मानव स्पर्धा में संताली साहित्य उतना ही पुराना है।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. धनेश्वर माँझी ने की। डॉ. नकु हांसदा, डॉ. सनत हांसदा और डॉ. रामू हेम्ब्रम ने संताली के मौखिक परंपरा और साहित्य पर लोक कथा, लोक संगीत और बिंती बखेन पर अपने आलेख पढ़े।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री माधवचंद्र हांसदा द्वारा किया गया जिसमें डॉ. अन्पा मरांडी, श्री मदन मोहन सोरेन और माधव हांसदा ने अपने आलेख पढ़े जो संताली पत्र-पत्रिकाओं पर आधारित थे। साथ ही दो चर्चित लेखक श्री रघुनाथ मुर्मू और श्री साधू रामचंद्र मुर्मू भी शामिल हुए।

अनुभाष्य

21-24 जुलाई 2016, गोवा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं गोवा कोंकणी एकेडमी के संयुक्त तत्त्वावधान में एक संगोष्ठी तथा तीन दिवसीय अनुवाद एवं शब्दावली सृजन कार्यशाला का आयोजन 21-24 जुलाई को किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन 21 जुलाई 2016 को गोवा यूनिवर्सिटी के सेमिनार हॉल में किया गया। प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. रमेश ढोंगडे बीज-वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हालंकर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए भाषाओं में दी गई शब्दावलियों की महत्ता को रेखांकित किया। गोवा यूनिवर्सिटी की अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष एवं डीन फ़ैकल्टी ऑफ़ लैंग्वेजेज़ डॉ. किरण बुडकुले ने संगोष्ठी एवं कार्यशाला की रूपरेखा के बारे में बताया। डॉ. रमेश ढोंगडे ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि किस प्रकार दी गई भाषा की शब्दावली को पहचान कर चिन्हित शब्दावली को अन्य भाषा में अनुवाद किया जाता है। उन्होंने कार्यशाला में सम्मिलित प्रतिभागियों को अच्छे और बुरे शब्दावली की रचना के सुझाव दिए।

बीज-वक्तव्य के बाद के सत्र में सुश्री अंबिका कामत ने 'ए.एन. महाम्ब्रो के पणजी आत्म म्हात्री जालिया में हास्य यथार्थवाद' पर तथा सुश्री श्वेतलाना फ़र्नांडिस ने 'दीर्घ मौन टेम में काल्पनिक अंतरंग मित्र की जाँच : स्वकथनात्मक स्त्री' पर तथा सुश्री सुनैना गवडे ने 'अंग्रेज़ी कोंकणी यांत्रिक अनुवाद का संकर दृष्टिकोण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. ढोंगडे ने की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. किरण बुडकुले ने की। इस सत्र में सुश्री ग्लेनिस मेंडोसा ने 'भावजो की कहानियों का पुनर्पाठ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री पालिया गौंवकर पंडित ने 'उदय भेंब्रे के कर्णपर्व के गुप्त उपविजय' विषय पर तथा सुश्री दीक्षा पंडित ने भी अपना आलेख प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के दूसरे दिन कोंकणी पत्रिका 'जाग' को प्रतिभागियों में वितरित किया गया तथा लेख विशेष से शब्दावलियों की पहचान करने को कहा गया। शब्दावलियों की पहचान कर उनके अंग्रेज़ी पर्याय का चुनाव शब्दकोश के माध्यम से किया गया। इस कार्य में विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन किया।

तीसरे दिन प्रतिभागियों ने कोंकणी के आलोचनात्मक आलेख का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया तथा पहले दिन चिन्हित पर्यायों का प्रयोग किया।

चौथे दिन भी अनुवाद का कार्य किया गया। श्री शांताराम बार्डे वालावालिकर, श्री एस. एम. बोर्गिस एवं डॉ. किरण बुडकुले समानांतर रूप से नए शब्दावलियों की रचना में व्यस्त थे।

धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यशाला समाप्त हुआ।

जानकी वल्लभ शास्त्री जन्मशतवार्षिकी

28 जुलाई 2016, मुज़फ़्फ़रपुर

साहित्य अकादेमी ने हिंदी विभाग, बी.आर. अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय के सहयोग से सुप्रसिद्ध हिंदी कवि श्री जानकी वल्लभ शास्त्री के जन्मशतवार्षिकी पर पूरे दिन उनके स्मरण में एक संगोष्ठी का आयोजन 28 जुलाई 2016 को मुज़फ़्फ़रपुर में विश्वविद्यालय परिसर में किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा किया गया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि कालजयी साहित्यकारों की प्रासंगिकता और उनका महत्त्व हमेशा होता है। उन्होंने श्री जानकी वल्लभ शास्त्री की कविताओं के प्रभावशाली योगदान को उजागर किया। अपने आरंभिक वक्तव्य में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री खगेंद्र ठाकुर ने शीर्षस्थ भारतीय कवियों में श्री शास्त्री जी के स्थान के बारे में बताया और अंतिम छायावाद आंदोलन के कवि के रूप में श्री नलिन विलोचन शर्मा और श्री शास्त्री जी का स्मरण किया। सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री मदन कश्यप ने अपने बीज-वक्तव्य में शास्त्री जी के सभी कलात्मक क्रियाकलापों की सफलता और सीमा तथा शास्त्री जी के विविध साहित्यिक कार्यों को और उनके अद्वितीय एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों को उजागर किया। श्री अनुपम तिवारी, संपादक, साहित्य अकादेमी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र 'हिंदी काव्यात्मक कविता और जानकी वल्लभ शास्त्री' को समर्पित था। इसकी अध्यक्षता प्रो. राजेंद्र गौतम ने की, दो सुप्रसिद्ध विद्वान– प्रो. सतीश कुमार रॉय और प्रो. पूनम सिन्हा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए जो शास्त्री जी की काव्यात्मक शैली एवं उनकी संपूर्ण कृतियों और उत्तर छायावाद पर केंद्रित था।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. रेवती रमन ने की जो जानकी वल्लभ शास्त्री की 'कथा एवं कथेत्तर गद्य' को समर्पित था। इस सत्र में दो प्रसिद्ध विद्वानों - डॉ. राजीव कुमार झा और डॉ. संजय पंकज ने श्री शास्त्री के कथा एवं कथेतर गद्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र समर्पित था– 'जानकी वल्लभ शास्त्री का लेखन कौशल और समालोचनात्मक दृष्टि' और अध्यक्षता प्रो. प्रमोद कुमार सिंह द्वारा की गई। दो प्रसिद्ध विद्वानों प्रो. देवशंकर नवीन और प्रो. रवींद्र उपाध्याय ने लेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र कविता पाठ को समर्पित था और अध्यक्षता प्रो. अरुण कमल द्वारा किया गया। छः चर्चित कवियों ने अपनी कविता का पाठ किया – मदन कश्यप, राजेंद्र गौतम, शंभु बादल, विनय कुमार, पूनम सिंह और रश्मि रेखा। श्री अनुपम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी समारोह

20-21 अगस्त 2016, लखनऊ

संस्कृति मंत्रालय, भारत-सरकार एवं साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी संस्थान, लखनऊ के निराला सभागार में आयोजित अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी समारोह के पहले दिन 20 अगस्त 2016 को बीज वक्तव्य देते हुए प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि नागर जी अकेले बहुविध साहित्यकार थे। उनका व्यक्तित्व एवं लेखन दोनों ही विपुलताओं से भरे थे। प्रो. दीक्षित ने अनेक अवसरों पर नागर जी के साथ गुज़ारे वक़्त के अनेक संस्मरण भी सुनाए। नागर जी की सुपुत्री अचला नागर ने उनके व्यक्तित्व तथा लेखन के विभिन्न पक्षों को लेकर चर्चा की। अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि लेखक की उम्र बहुत लंबी होती है। वह साहित्य का दर्पण होने के साथ ही उसका निर्माता भी होता है। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त गुजराती साहित्यकार रघुवीर चौधरी भी मौजूद थे। उन्होंने कहा कि प्रयोगधर्मिता अमृतलाल नागर की पहचान थी। उन्होंने आम जन-जीवन को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में कठिन श्रम किया। समारोह के प्रारंभ में नागर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित चित्र प्रदर्शनी एवं पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं अन्य साहित्यकारों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। चित्र प्रदर्शनी में नागर जी की पूरी रचनात्मक जीवन-यात्रा को 21 पैनल में प्रदर्शित किया गया। नागर जी की लिखी और उन पर लिखी गई पुस्तकों की प्रदर्शनी ने एक ही जगह पर नागर जी की संपूर्ण रचनात्मक उपस्थिति को महसूस करवाया। यह प्रदर्शनी साहित्य प्रेमियों द्वारा खूब सराही गई।

इस विशेष अवसर पर अमृतलाल नागर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित हिंदी विनिबंध (मोनोग्राफ) का गुजराती, तमिळ और मलयाळम् भाषा में अनूदित विनिबंध का लोकार्पण हुआ। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त नागर जी के उपन्यास 'अमृत और विष' का मराठी अनुवाद का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम के संचालक कुमार अनुपम ने बताया कि शीघ्र ही शेष भारतीय भाषाओं में हो रहे अनुवाद भी पुस्तकाकार में प्रकाशित होंगे।

'अमृतलाल नागर की औपन्यासिक कृतियाँ' विषय पर केंद्रित प्रथम सत्र में प्रख्यात कथाकार ममता कालिया ने कहा कि नागर जी ने हिंदी गद्य को अभिव्यक्ति के सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया। उनका मानवतावाद बेहद उदार था। 'नाच्यौ बहुत गोपाल' में उन्होंने जाति-वर्ण व्यवस्था को खुली चुनौती दी। चर्चित साहित्यकार माधव हाडा ने रामविलास शर्मा के कथन को उद्धृत करते हुए कहा कि उपन्यास उनकी प्रतिभा का उचित क्षेत्र था, और नागर जी के अंदर कथाकार हमेशा मौजूद रहा। वरिष्ठ आलोचक रोहिणी अग्रवाल ने कहा कि नागर जी ने समय से आगे की बात कही

अमृतलाल नागर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन

है। 'बूँद और समुद्र' में साक्षात व जीवंत जीवन है जो रचनाकार के विराट व्यक्तित्व को दर्शाता है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात कथाकार गोविंद मिश्र ने कहा कि नागर जी के व्यक्तित्व में खुलापन था और इसीलिए उनके लेखन में रेंज था। उनकी रचनाओं में कथात्मकता थी। उत्तरोत्तर हिंदी उपन्यासों में कथात्मकता पर जोर कम हुआ जबकि आज के उपन्यासों में जीवन की व्याख्या पर अधिक ज़ोर दिया जाता है।

'अमृतलाल नागर की कहानियाँ एवं बाल साहित्य' विषयक द्वितीय सत्र में वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति ने कहा कि कहानियाँ उनके साहित्य में हाशिए पर रहीं। इस संबंध में उन्होंने नागर जी के इस कथन को उद्धृत किया कि आलोचकों ने मेरी कहानियों का विशेष नोटिस नहीं लिया। प्रख्यात बाल साहित्यकार प्रकाश मनु ने कहा कि नागर जी उस्ताद किस्सागो थे जिनको पाठक दीवानगी की हद तक प्यार करते थे। बड़ी बात यह है कि उन्होंने बच्चों के लिए भी लिखा है। कवि और 'लमही' पत्रिका के संपादक विजय राय ने कहा कि बनारस का तत्त्व नागरजी की कहानियों में मौजूद है। वह प्रेमचंद की परम्परा के उत्तराधिकारी माने जाते हैं। सहज अंदाज के इस कुशल गद्य शिल्पी की रचनाओं में प्रेमचंद के बाद सबसे ज़्यादा मुस्लिम किरदार गढ़े गए हैं। नूर ज़हीर ने कहा कि नागर जी ने महिलाओं की विभिन्न समस्याओं को बेहद ख़ूबसूरती के साथ उभारा है, जिसकी कोई मिसाल नहीं है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए रमेशचंद्र शाह ने कहा कि भारतीय समाज में परिवर्तन न हो पाना नागर जी की प्रमुख चिंता थी। उपन्यासों से उनको स्थायी कीर्ति प्राप्त हुई।

तृतीय सत्र का विषय था 'अमृतलाल नागर का कथेतर गद्य एवं हास्य व्यंग्य', जिसमें इतिहासकार, उपन्यासकार योगेश प्रवीन ने अपने विशिष्ट अंदाज में नागर जी और तत्कालीन लखनऊ की तमाम ख़ूबियों के बयान से श्रोताओं को अचम्भित और प्रफुल्लित किए रखा। नागर जी की पौत्री और लोकभाषाविद् दीक्षा नागर ने इस बात पर चिंता जताई कि आज के दौर में साहित्य से जुड़ने की कोई कोशिश नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि आत्मकथ्य आत्मावलोकन एवं आत्मीय प्रसंगों के माध्यम से नागर जी के साहित्य को जानना अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। आलोचक योगेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि नागर जी का अध्ययन क्षेत्र व्यापक है। उनका साहित्य 'डिस्कवरी ऑफ़ अवध' है।

'नाटक, रंगमंच, फ़िल्म एवं रेडियो के क्षेत्र में अमृतलाल नागर' विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ रंगकर्मी प्रतिभा अग्रवाल ने लखनऊ के संदर्भ में उन्हें 'नाटकों का भरत मुनि' बताते हुए कहा कि वह नाटकों को लोकप्रिय बनाने के लिए बहुत चिंतित रहते थे। वरिष्ठ रंगकर्मी उर्मिल कुमार थपलियाल ने कहा कि नागर जी गाँव-मुहल्ले के थियेटर को पेशेवर थियेटर मानते थे। इस बारे में उनका कहना था 'पश्चिमी थियेटर से सीखो मगर अपने थियेटर को मत भूलो'। सिने निर्देशक व रंगकर्मी अतुल तिवारी ने सिनेमा के विभिन्न पक्षों की बात करते हुए उसमें नागरजी के विशिष्ट योगदान पर चर्चा की, उन्होंने कहा कि नागर जी ने फ़िल्मों में हिंदी डबिंग के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई।

उसी दिन शाम को नागर जी की रचना 'युगावतार' का नाट्य मंचन भी ललित सिंह पोखरिया के निर्देशन में आयोजित हुआ। यह नाटक हिंदी लेखक भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन पर आधारित है। नाटक के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना, बंधुत्व, परदुखकातरता, स्वाधीनता के लिए संघर्ष और समृद्ध भारतीय संस्कृति की प्रेरणादायी प्रस्तुति की गई। इस नाटक का मंचन यशपाल सभागार में संपन्न हुआ।

समारोह के दूसरे दिन 21 अगस्त 2016 को 'स्मृति में अमृतलाल नागर' विषयक चतुर्थ सत्र के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार गिरिराज किशोर ने कहा कि नागर जी ने अपने समय की बहुत बड़ी पीढ़ी का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा कि नागर जी रचनाएँ उनके विराट व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। नागर जी की खोजी प्रवृत्ति रचना को पाठकों के और क़रीब लाती रही है। सत्र में रामविलास शर्मा के पुत्र व चर्चित साहित्यकार विजय मोहन शर्मा ने कहा कि नागर जी ने बहुत सी रचनाएँ उपनाम से लिखी हैं, जिसमें तस्लीम लखनवी एक नाम है। वह साइकिल पर सामान रखकर शहर आ गए थे। उन्होंने अपना काफ़ी समय निराला जी के साथ और मेरे पिता के साथ गुज़ारा था। पुरातत्त्वविद राकेश तिवारी ने नागर जी के साथ अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि नागर जी हमेशा लिखने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा करते थे कि ज़िंदगी लैला है, इसे मजनू की तरह

प्यार करो। उन्होंने कहा कि नागर जी युवाओं को बहुत प्रेरित करते थे। रंगकर्मी व नागर जी के परिवार के संदीपन नागर ने अम तलाल जी की यादें ताज़ा करते हुए कहा कि वे किसी भाषा के विरोधी नहीं थे बल्कि उन्हें अपनी मातृभाषा से बहुत प्यार था। उन्होंने हमेशा अपने परिवार को अपने बल पर आगे बढ़ने की सीख दी।

समारोह के छठे सत्र में 'भारतीय भाषाओं में अमृतलाल नागर की उपस्थिति' विषय पर परिचर्चा हुई, जिसमें गुजराती, मलयाळम्, तेलुगु व उर्दू के रचनाकारों ने अपने विचार रखे। सत्र की अध्यक्षता श्रीनिवास उद्गाता ने की। सत्र में साहित्यकार व अनुवादक आलोक गुप्त ने कहा कि नागर जी ने एक लेखक की ज़िंदगी जी है। नागर साहब ने कहा था कि 'लेखक की कमाई खाई है, जिसके लिए वह अपनी मेहनत व राम के सिवा किसी के एहसानमंद नहीं हैं। सुधांशु चतुर्वेदी ने मलयाळम्, एस. शेषारत्नम ने तेलुगु, शकील सिद्दकी ने उर्दू भाषा में नागर जी की उपस्थिति को रेखांकित किया। समापन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना ने की और समापन वक्तव्य अचला नागर ने दिया। नरेश सक्सेना ने कहा कि अमृतलाल नागर आम आदमी को अपना मालिक मानते थे। उनके जैसा कला का धनी आज के युग में होना बहुत ही मुश्किल है। वह साहित्य की दुनिया के वैज्ञानिक थे। 'निकाह' और 'बागवान' जैसी चर्चित फ़िल्मों की लेखिका व अमृतलाल नागर की सुपुत्री अचला नागर ने संस्कृति मंत्रालय और साहित्य अकादेमी को इतने विशाल और सुंदर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए हार्दिक बधाई और धन्यवाद दिया। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। दोनों दिवसों के कार्यक्रमों का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) कुमार अनुपम ने किया।

शाम को नागर जी की कहानियों पर आधारित 'नागर कथा' नामक नाटक का चित्र मोहन के निर्देशन में मंचन संपन्न हुआ। इस नाटक में नागर जी की दो कहानियों -'शकीला की माँ' और 'क़ादिर मियाँ की भौजी' का कोलाज प्रस्तुत किया गया। नाटक में लखनऊ की तत्कालीन नवाबी परंपरा के अंतिम दिनों और स्त्री की विकट जीवनदशा की मार्मिक झलक दिखी, जिसने दर्शकों को भावुक कर दिया।

दोनों ही दिन लखनऊ के अनेक गणमान्य नागरिक, लेखक, संस्कृतिकर्मी, छात्र और मीडियाकर्मी भारी संख्या में उपस्थित रहे।

समकालीन तेलुगु एवं तमिळ साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन

26-27 अगस्त 2016, चेन्नै

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा यूनिवर्सिटी ऑफ़ मद्रास के तेलुगु विभाग के सहयोग से 'समकालीन तेलुगु एवं तमिळ साहित्यः तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर यूनिवर्सिटी परिसर में 26-27 अगस्त 2016 को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए तमिळ एवं तेलुगु साहित्य की समानताओं की बात की। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद एवं तुलनात्मक साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने तमिळ एवं तेलुगु साहित्य के रिश्तों के बारे में बात की। प्रो. एम. संपत कुमार ने संगोष्ठी के विषय के बारे में चर्चा की। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध तमिळ कवि सिरपी बालासुब्रह्मण्यम ने तमिळ और तेलुगु साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के बारे में बात की और संगोष्ठी में अनुवाद की भी चर्चा की। क्षेत्रीय सचिव एस.पी.महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. एल.बी. शंकरराव ने की तथा डॉ. एम. मनिरत्नम एवं श्री रोशिस्मान ने 'तेलुगु और तमिळ के साहित्यिक संबंध' तथा 'तेलुगु और तमिळ कविता के आधुनिक रुझान' विषय पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस.वी. सत्यनारायण ने की। डॉ. पी. सीतम्मा, डॉ. जे.वी. सत्यवाणी एवं डॉ. नलिमेला भास्कर ने 'तेलुगु और तमिळ की समकालीन कविता', 'तेलुगु और तमिळ की नारीवादी कविता' तथा 'नानीलू—श्री कविराई' विषय पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी.मृणालिनी ने की और चार विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. अंबरुनी ने 'अखिलन के उपन्यास—मालतीचंदूर' विषय पर, डॉ. जी. नरसिंहमन ने 'मधुरांतकम राजाराम और जयकांतन की कहानियाँ' विषय पर, डॉ. टी. मोहन श्री ने 'काँगुनाडु कहानियाँ' विषय पर तथा डॉ. डी. विजयलक्ष्मी ने 'तमिळ और तेलुगु में लघु कविताएँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. जी.वी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने की। डॉ. पी. शंकर राव, श्री वेनलकंती एवं डॉ. जी. नलिनी ने 'तमिळ और तेलुगु में लोक कविताएँ', 'तमिळ एवं तेलुगु की समकालीन सिने कविता' तथा 'तमिळ एवं तेलुगु के मध्य अनुवाद' विषय पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. इरोड तमिलांबन ने समापन वक्तव्य दिया। श्री ए.एस. इलंगोवन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

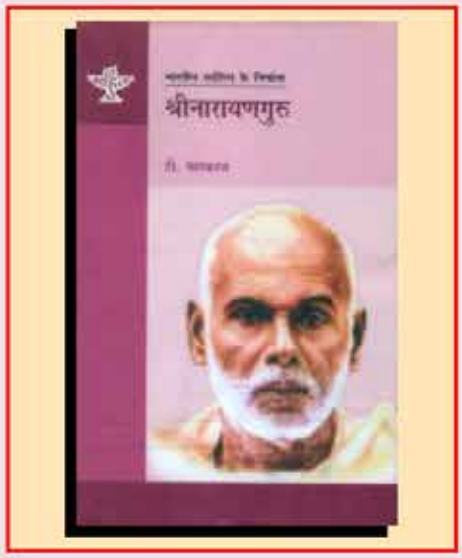

शोक सभा

महाश्वेता देवी

2 अगस्त 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 2 अगस्त 2016 को अकादेमी परिसर, नई दिल्ली में एक शोक सभा का आयोजन किया जिसमें प्रतिष्ठित बाङ्ला साहित्यकार एवं समाजसेविका महाश्वेता देवी को स्मरण एवं श्रद्धांजलि अर्पित की गई, जिनका निधन 28 जुलाई 2016 को हो गया था। महाश्वेता देवी के लेखन के अनेक साहित्यिक परीक्षक एवं प्रशंसक इस सभा में शामिल हुए। प्रतिष्ठित विद्वानों जैसे डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. चंद्रशेखर कंबार, प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी, डॉ. भालचंद्र नेमाडे, डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय, श्री पी. सच्चिदानंदन, सुश्री गीता धर्मराजन, प्रो. मालाश्री लाल, श्रीमती पद्मा सचदेव, श्रीमती मृदुला गर्ग, श्री सी. राधाकृष्णन, प्रो. हरीश त्रिवेदी, डॉ. केदारनाथ सिंह, स्वामी अग्निवेश, श्री एन. के. भट्टाचार्जी और श्री विश्वनाथ त्रिपाठी ने साहित्यकार, महिला प्रकर्ष की चिंतक एवं समाज सुधारक महाश्वेता देवी के बारे में बात की। प्रारंभ में डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और दिवंगत साहित्यकार के लेखन एवं साहित्य अकादेमी के साथ उनके संबंध के बारे में संक्षिप्त में बताया। सभी वक्ताओं ने उत्पीड़ितों और दलितों के लिए उनकी भावना, उनकी शिल्पगत सुंदरता और उनके महान व्यक्तित्व को उद्घाटित किया। वह व्यावहारिक थीं। उनके लेखन में ग़रीबी से पीड़ित एवं दमित लोगों की जीवंत कल्पना शक्ति और गहन भावना थी। उनका लेखन कई तरीक़े से मूक लोगों की आवाज़ देती थी। महाश्वेता देवी कथावाचक थीं जो सिर्फ़ उनके पास आने वालों की कहानी नहीं बताती थी, बल्कि कई अनजाने लोगों की कहानी भी बताती थी।

शोक सभा का प्रारंभ महाश्वेता देवी के सम्मान में एक मिनट के मौन के साथ हुआ।

स्व. महाश्वेता देवी

गुरदयाल सिंह

29 अगस्त 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 29 अगस्त 2016 को अकादेमी परिसर, नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं विद्वान डॉ. गुरदयाल सिंह को स्मरण करने और श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एक शोक सभा का आयोजन किया। डॉ. गुरदयाल सिंह को साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त था और वे साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य थे। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. गुरदयाल सिंह एक महत्त्वपूर्ण साहित्यकार थे जो 'जैसा जिया वैसा लिखा' में विश्वास करते थे। उन्होंने कहा कि वे पंजाबी पाठकों के बीच ही चर्चित नहीं थे बल्कि दूसरी भाषा के पाठकों के बीच भी चर्चित थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. मनजीत सिंह ने कहा कि डॉ. गुरदयाल सिंह ने पंजाबी साहित्य को नई ऊँचाई तक पहुँचाया। कवि मोहनजीत सिंह ने कहा कि गुरदयाल सिंह के उपन्यास 'मरही दा दीवा' ने इस मिथक को तोड़ा कि सिर्फ़ दलित ही दलितों के बारे में ज़्यादा अच्छा चित्रित कर सकते हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भी डॉ. गुरदयाल सिंह के प्रति

स्व. गुरदयाल सिंह

अपनी हार्दिक भावना को साझा किया।

सुप्रसिद्ध पंजाबी कवयित्री डॉ. वनिता, लब्धप्रतिष्ठ हिंदी कवि और ज्ञानपीठ के निदेशक श्री लीलाधर मंडलोई और साहित्य अकादेमी पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवैल सिंह ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इनके साथ अन्य वक्ताओं – पंजाबी अकादमी के सचिव श्री गुरमेज गुआया, सचिव, डॉ. मोहिंदर सिंह, साहित्य सदन के भाई वीर सिंह ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

परिसंवाद

भारतीय नेपाली ग़ज़ल

8 मई 2016, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी द्वारा गोर्खा जन पुस्तकालय, खरसाङ (पश्चिम बंगाल) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली ग़ज़ल' विषयक परिसंवाद का आयोजन 8 मई 2016 को पुस्तकालय सभागार में किया गया। परिसंवाद के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि जल्दी ही अकादेमी द्वारा भारतीय नेपाली ग़ज़लों का एक संचयन भी प्रकाशित किया जाने वाला है। इस अवसर पर अपने आरंभिक वक्तव्य में भारतीय नेपाली ग़ज़ल पर बात करते हुए नेपाली भाषी क्षेत्रों में अकादेमी के कार्य-विस्तार का उल्लेख किया। उन्होंने अकादेमी द्वारा नेपाली भाषा के संवर्द्धन के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की चर्चा भी की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्ष श्रीमती विंध्या सुब्बा ने ग़ज़ल लेखन की सैद्धांतिकी पर अपनी बात रखते हुए इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि बड़ी संख्या में युवा लेखक इस विधा में अपनी क़लम चला रहे हैं।

परिसंवाद का विचार सत्र डॉ. जस योञ्जन 'प्यासी' की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री वासुदेव पुलामी ने 'भारतीय नेपाली ग़ज़ल के संदर्भ में ग़ज़ल का संक्षिप्त इतिहास' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने मोतीराम भट्ट से आरंभ करके अद्यतन भारतीय नेपाली ग़ज़ल की विकास यात्रा का उल्लेख किया और बताया कि वर्तमान में सोशल वेबसाइट और माध्यम इसके प्रसार और लोकप्रियता में विशेष भूमिका निभा रहे हैं। श्री शैलेंद्र समदर्शी ने 'भारतीय नेपाली ग़ज़ल की परंपरा और विकास' विषयक आलेख का पाठ किया। उन्होंने पारसमणि प्रधान को नेपाली का प्रथम ग़ज़लकार बताया, जिनकी ग़ज़ल 'गोर्खा ख़बर' अख़बार में 1916 में प्रकाशित हुई। कार्यक्रम का संचालन श्री विनोद रसायली ने किया, जबकि गोर्खा जन पुस्तकालय के महासचिव श्री प्रकाश उपाध्याय ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

चिल्का एवं कोणार्क

21 मई 2016, पुरी, ओडिशा

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा चिल्का एवं कोणार्क विषय पर परिसंवाद का आयोजन गोपबंधु आयुर्वेद कॉलेज ऑडिटोरियम, पुरी में 21 मई 2016 को किया गया। ओडिशा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री हरिहर मिश्र ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि चिल्का नीले जल का भारत का सबसे बड़ा झील है जो ओडिशा के तीन जनपदों तक फैला हुआ है तथा कोणार्क 13वीं सदी का सबसे महत्त्वपूर्ण स्मारक है। श्री मिश्र ने कहा कि ओडिया कविता और उपन्यास, नाटक व कहानियों के प्रेरणास्रोत ओडिशा के ये दो महत्त्वपूर्ण स्थल हैं।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए ओडिशा में अपनी तरह के इस प्रकार के पहले परिसंवाद के प्रस्ताव के लिए ओडिया परामर्श मंडल के पहल की सराहना की। अकादेमी के ओडिया परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास ने कहा कि चिल्का प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ कृति है जबकि कोणार्क ओडिया कारीगरी का एक चमत्कार है। डॉ. भगवान जयसिंह ने अपने बीज वक्तव्य में कला के सौंदर्य पर चर्चा की तथा रोमन व भारतीय मूर्तिकला और वास्तुकला के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री गोपालचंद्र बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता कथाकार एवं विद्वान श्री अध्यापक विश्वरंजन ने किया तथा प्रसिद्ध कवि श्री पवित्रमोहन दास ने चिल्का एवं कोणार्क का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया।

भोजनोपरांत सत्र में ओडिया की कुछ क्लासिक कविताओं को प्रस्तुत किया गया। ये कविताएँ उत्कलमणि गोपबंधु दास, राधानाथ रे, मायाधरमान सिंह, दिलीप स्वेन, सुचेता मिश्र,

बायें से : डॉ. के. श्रीनिवासराव (माइक पर), गोपाल च. बर्मन, मधुसूदन दास

सुरेंद्र पाणिग्रही, सुषमा मिश्र एवं श्याम प्रकाश सेनापति की थीं। सत्र की अध्यक्षता श्री शंकर परीदा ने की।

अपने समापन वक्तव्य में श्री संग्राम जेना ने कहा कि चिल्का प्रकृति के आश्चर्य का जबकि कोणार्क मानव रचनात्मकता का प्रतीक है। इन दोनों की उपस्थिति ने कथा और साहित्य के माध्यम से ओडिशा के आम लोगों के जीवन को स्थानों में बदल दिया है।

प्रसिद्ध कवि श्री अमरेश पटनायक ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हर लेखक की रचना में उसका अपना आख्यान, व्यक्तिगत विचार दर्शन होता है। श्री नीलकांत दास ने कोणार्क को राष्ट्रवाद का प्रतीक बताया जबकि सचि राउत राय ने इसे शोषण का स्मारक बताया। अकादेमी ओडिया परामर्श मंडल के सदस्य बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मणिपुरी साहित्य के विकास में समाचार-पत्रों की भूमिका

20 जून 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा हुएन लेंपू के सहयोग से 'मणिपुरी साहित्य के विकास में समाचार पत्रों की भूमिका' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 20 जून 2016 को इंफ़ाल में किया गया। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए परिसंवाद के विषय पर संक्षेप में प्रकाश डाला। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि मणिपुरी समाचार-पत्रों ने साहित्यिक आलेखों को प्रकाशित कर साहित्य के विकास में एक बड़ी भूमिका निभाई है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री पो. धनकुमार सिंह आई. पी. एस. ने कहा कि किस प्रकार साहित्य की उन्नति सभ्यता के उन्नति की पहचान होती है और इनके प्रचार में समाचार-पत्रों की भूमिका हो सकती है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता ऑल इंडिया रेडियो, इंफ़ाल के पूर्व संयुक्त निदेशक श्री बी. बी. शर्मा ने की तथा सत्र में छः विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री ए. इबोम्चा शर्मा ने समाचार-पत्रों एवं साहित्यिक कृतियों के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया। प्रो. जोधाचंद्र संसम ने कहा कि समाचार-पत्र अगली पंक्ति में बैठे फ़िल्म, थियेटर, नाटक देखने वालों की तरह होते हैं। समाचार-पत्रों द्वारा बहुत बारीकी से इन पर नज़र रखी जाती है। डॉ. के. शांतिबाला देवी ने कहा कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि समाज के सदस्यों के बीच संवाद स्थापित करने के लिए उन दोनों के मध्य संबंध बनाने का है। समाचार-पत्र के लिए यह संभव बनाने का साधन है। श्री सोइबम्चा इंद्र कुमार ने कहा कि साहित्य लिखे गए शब्द की एक कला है। हर शब्द साहित्य नहीं होता। शब्द संप्रेषण का माध्यम होते हैं, दिन-प्रतिदिन प्रयोग की गई भाषा साहित्य नहीं होता।

श्री एल. शरतचंद्र शर्मा ने कहा कि अख़बार समाज का दर्पण होता है। अख़बार की विभिन्न लोगों की दिन-प्रतिदिन के विचारों को प्रसारित करने की ज़िम्मेदारी होती है। श्री लइशरम ढबालो ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

परिसंवाद के एक सत्र का दृश्य

असमिया विज्ञान साहित्य

26 जून 2016, जोरहट, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा असमिया विज्ञान लेखक संघ के संयुक्त तत्वावधान में असमिया विज्ञान साहित्य विषय पर एक 'परिसंवाद' का आयोजन 26 जून 2016 को साइंस सेंटर एंड प्लेनेटेरियम कान्फ्रेंस हॉल, जोरहाट में किया गया। क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया।

परिसंवाद का उद्घाटन अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कर्बी डेका हजारिका ने किया। श्री दिनेश चंद्र गोस्वामी ने बीज वक्तव्य दिया जबकि श्री बेजबरुआ ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। श्री धीरेंद्र कुमार गोगोई ने धन्यवाद ज्ञापन किया। परिसंवाद के प्रथम सत्र में श्री खिरधर बरुआ एवं नीलिमा सईकिया ने विज्ञान साहित्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता प्रोमुदचंद्र तामुली ने की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता मुकुंद राजबंशी ने की। रमेशचंद्र गोस्वामी, राजबंशी व अभिजीत शर्मा बरुआ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

बिहुरम बोरो एवं साहित्यिक रचना

30 जून 2016, उदालगुरी, असम

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा उदालगुरी कॉलेज के बोडो विभाग के सहयोग से 'बिहुरम बोरो एवं साहित्यिक रचना' विषय पर एक 'परिसंवाद' का आयोजन 30 जून 2016 को किया गया। उदालगुरी कॉलेज के एसोसिएट प्रोफ़ेसर श्री रोबिंसन नार्ज़री ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. राजेंद्र कुमार बसुमतारी ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. अनिल कुमार बोरो ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए अपने वक्तव्य में बिहुरम बोरो की साहित्यिक योगदान की चर्चा की।

श्री नबीन मल्ला बोरो ने अपने बीज वक्तव्य में बिहुरम बोरो के साथ के अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बात की। उन्होंने बिहुरम बोरो की बोडो समाज के लिए अमूल्य योगदान की बात की। बीज वक्तव्य के बाद डॉ. नरेश्वर नार्ज़री ने समापन वक्तव्य दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. अनिल कुमार ने की। अदरम बसुमतारी ने 'जीबी बिथाई महाकाव्य का नायक' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री चितरंजन मुशहरी, श्री निरन ब्रह्म ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मनेश्वर गोयरी के आलेख प्रस्तुति के बाद सत्र समाप्त हुआ।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता नवीन मल्ल बोरो ने की। प्रणव ज्योति नार्ज़री, रीता बोरो तथा राजेंद्र कुमार बसुमतारी ने 'बहुरम बोरो का रचना संसार' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। धन्यवाद ज्ञापन के बाद परिसंवाद समाप्त हुआ।

अली जव्वाद ज़ैदी : कृतित्व एवं व्यक्तित्व'

23 जुलाई 2016, लखनऊ

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 23 जुलाई 2016 को राय ऊमानाथ बली ऑडिटोरियम, लखनऊ में 'अली जव्वाद ज़ैदी : कृतित्व एवं व्यक्तित्व' शीर्षक से एक-दिवसीय जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उर्दू के लब्धप्रतिष्ठ आलोचक एवं विद्वान प्रो. शारिब रुदौलवी ने की। उन्होंने कहा कि हमें अपने बुज़ुर्गों को याद रखना चाहिए ताकि हम अपने साहित्य को परख सकें, आज का परिसंवाद इस बात का सबूत है कि अली जव्वाद ज़ैदी हमारे ज़ेहनों और दिलों में ज़िंदा व क़ायम हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम के लिए साहित्य अकादेमी का हार्दिक अभिनंदन किया।

इस अवसर पर बीज-वक्तव्य देते हुए उर्दू आलोचक प्रो. अनीस अशफ़ाक़ ने विस्तारपूर्वक अली जव्वाद ज़ैदी की सभी साहित्यिक पहलूओं पर बात की। उन्होंने कहा कि ज़ैदी साहब एक ऐसे व्यक्तित्व के मालिक थे जो बहुमुखी थी। उनके शोध और आलोचनाओं पर फिर से शोध की आवश्यकता है। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. वसीम बेगम, सदस्य, उर्दू परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि आज इस कार्यक्रम में बहुत से ऐसे लोग उपस्थित हैं जिनके अली जव्वाद ज़ैदी से व्यक्तिगत संबंध थे। उन्होंने कहा कि ज़ैदी साहब तहदार व्यक्तित्व के मालिक थे। वह विद्वान, कवि, पत्रकार, ख़ाकानिगार, शोधकर्त्ता एवं आलोचक थे, उर्दू साहित्य में ऐसे लोग कम पैदा होते हैं।

परिसंवाद के दूसरे सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी कार्यकारिणी के सदस्य एवं वरिष्ठ उर्दू आलोचक प्रो. शाफ़े क़िदवई ने की। इस सत्र में वज़ाहत हुसैन रिज़्वी ने 'अली जव्वाद ज़ैदी : बहैसियत सहाफ़ी', रज़ा हैदर ने 'मीर अनीस के सलाम और अली जव्वाद ज़ैदी' एवं परवीन शुजाअत ने 'ज़ैदी की जीवनी' पर अपना आलेख पढ़ा।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ विद्वान फ़ैयाज़ रिफ़अत ने की। इस सत्र में अम्बर बहराइची ने अली जव्वाद ज़ैदी की शायरी के हवाले से, शाहनवाज़ क़ुरैशी ने 'अली जव्वाद ज़ैदी के ख़ाके' और डॉ. वसीम बेगम ने 'अली जव्वाद ज़ैदी बहैसियत मुहक़्क़िक़ व नक़्क़ाद' शीर्षक से अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। आख़िर में प्रकाशन सहायक मो. मूसा रज़ा के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

प्रो. शारिब रुदौलवी अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए, साथ में वसीम बेगम एवं अनीस अशफ़ाक़

मलयाळम् में दलित लेखन

17 अगस्त 2016, कोझीकोड

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा कालिकट यूनिवर्सिटी के मलयाळम् विभाग के सहयोग से डॉ. भीमराव अंबेडकर के 125वीं जयंती के उपलक्ष में मलयाळम् साहित्य में दलित लेखन विषय पर परिसंवाद का आयोजन 17 अगस्त 2016 को यूनिवर्सिटी प्रांगण में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी.महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि साहित्य अकादेमी 24 भाषाओं के दलित साहित्य के विकास के लिए कार्य करती है। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अनिल वल्लाथल ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के.पी. रामानुन्नी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में समकालीन दलित लेखन पर प्रकाश डाला और कहा कि दलित लेखन महत्त्वपूर्ण माध्यम है। कालिकट यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के. मोहम्मद बशीर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारत में गर्म राजनीतिक माहौल के बारे में बात की और जाति वर्ग की बाधाओं के बिना भारतीयों में एक सार्वभौमिक सद्भावना पैदा करने पर बल दिया। डॉ. के.के. कोचू ने समकालीन दलित लेखन और दलितों से भिड़ने के मुद्दों के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री एम.बी. मनोज ने की तथा श्री प्रदीपन पंबीरी कुन्नु एवं श्री अजय शेखर ने 'दलित और साहित्यिक इतिहास' तथा 'अंबेडकर जो अछूत थे में अस्पृश्यता की वंशावली?' विषय पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री पी. सोमनाथन ने की तथा श्री के.वी. शशि, श्री आर. वी.एन. दिवाकरण एवं के.पी. रवि ने 'दलित आलोचना, काव्यशास्त्र, राजनीति पूँजी', 'हाशिए की फ़िल्में' तथा 'अंबेडकर की धार्मिक विचार धारा और आलोचना' विषय पर क्रमशः आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री एल. थॉमस कुट्टी ने की। श्री दिलीप राज ने समापन वक्तव्य दिया और भारतीय समाज में असमानता, अंबेडकर के बौद्ध धर्म अपनाने और समकालीन दलित लेखन के बारे में बात की। श्री ई.पी. ज्योति ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

गत 25 वर्षों का मराठी साहित्य और श्रम की संस्कृति

19 अगस्त 2016, नांदेड

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा स्वामी रामतीर्थ मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी, नांदेड के सहयोग से 'गत 25 वर्षों का मराठी साहित्य और श्रम की संस्कृति' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 19 अगस्त 2016 को किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. पंडित विद्यासागर ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि श्रम एवं श्रमिकों को कभी महत्त्व नहीं दिया गया। मराठी साहित्य में मुश्किल से श्रमिकों का संसार दिखाई देता है। इस आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को बधाई दी। लब्धप्रतिष्ठ मराठी कथाकार श्री सदानंद देशमुख ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि खेती का आविष्कार महिलाओं ने किया तथा पहला मराठी गीत का लेखन एवं गायन एक महिला द्वारा किया गया। वैश्वीकरण के इस युग में हमें श्रम की संस्कृति को गंभीरता से समझने की ज़रूरत है। और उन्होंने मराठी लेखकों से अपने लेखन में श्रम से संबंधित मुद्दों को उल्लेख करने की अपील की।

उद्घाटन सत्र में अपना अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए श्री दत्ता भगत ने कहा कि हमारे सोचने का ढंग सत्ता के अधीन है, और जब तक हमारी सोच स्वतंत्र और निर्दोष नहीं होगी श्रम की संस्कृति हमारी रचनात्मक सोच और लेखन के केंद्र में नहीं आ सकती। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री भगवंत क्षीर सागर ने की तथा श्री महेंद्र कदम, श्री आशुतोष पाटिल, श्रीवीरा राठौड़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री महेंद्र कदम ने कहा कि हमारी राजनीतिक नैतिकता आपातकाल के बाद ख़राब हो गई थी तथा तकनीक और मीडिया के क्षेत्र में विकास हुआ किंतु गंभीर मुद्दे जैसे जाति और धर्म के मुद्दे। श्री आशुतोष पाटिल ने अपने आलेख में मराठी कविता में श्रम की चर्चा की और कहा कि कविता में यदा-कदा श्रम की चर्चा है और उसके मुद्दों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने में नाकाम रही है। श्री वीरा राठौड़ ने कहा कि मानवीय मूल्यों को वस्तुओं द्वारा बदल दिया गया है। उन्होंने कहा कि मज़दूरों और महिलाओं की जटिल वास्तविकता को गंभीरता से मराठी के लेखकों एवं कवियों को अपने लेखन में उठाया जाना चाहिए।

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री केशव देशमुख ने की और श्री नंद कुमार मोरे व आसाराम लोमटे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मोरे ने कहा कि महाराष्ट्र में 1990 के बाद ग्रामीण जीवन इतना जटिल हो गया कि रचनात्मक लेखक को ठीक से इसकी प्रस्तुति एक चुनौती थी।

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी के सेंटर फ़ॉर लैंग्वेजेज़ के निदेशक श्री रमेश ढागे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अनुवाद : रुझान और तकनीक (भाषांतर अनुभव)

21 अगस्त 2016, विशाखापत्तनम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा मोज़ैक लिटरेरी एसोसिएशन के सहयोग से 'अनुवाद : रुझान और तकनीक (भाषांतर अनुभव)' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 21 अगस्त 2016 को विशाखापत्तनम में किया गया। उद्घाटन सत्र में क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा अनुवाद को प्रोत्साहित करने के प्रयासों एवं भाषांतर चेतना के बारे में बात की। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने कहा कि यहाँ पर अनुभवी अनुवादकों द्वारा अनुवाद तकनीक और रुझान के अपने अनुभवों को साझा करेंगे। प्रसिद्ध तेलुगु लेखक एवं अनुवादक डॉ. वाय. लक्ष्मी प्रसाद जो कि इस सत्र के मुख्य अतिथि थे, ने कहा कि संसार में अनुवाद समग्र मानव संस्कृति की नींव है और उन्होंने आगे कहा कि कई भाषाओं में साहित्यिक परंपरा को संरक्षित रखने का अनुवाद एक श्रोत है। मोज़ैक लिटरेरी सोसायटी के श्री रामतीर्थ ने इस आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री एल.आर. स्वामी ने अपने बीज-वक्तव्य में विद्वान एवं अनुवादक जो दोनों दिशाओं में काम कर सकते हैं और अतीत के अनुवादक जो इस क्षेत्र में अग्रणी थे, को याद किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्ष श्री ए. शेषारत्नम ने की तथा दो विद्वान डॉ. महिधरा रामशास्त्री, डॉ. अब्दुल वाहि ने क्रमशः ओडिया-तेलुगु और ओडिया-उर्दू अनुवाद के अनुभवों को साझा किया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री जगधत्तरी ने की तथा श्री राम तीर्थ, श्री सखामुरु रामगोपाल एवं श्री मातृश्रीनिवास ने क्रमशः बाङ्ला-तेलुगु, कन्नड-तेलुगु और अंग्रेज़ी-तेलुगु अनुवाद के अनुभवों को साझा किया। डॉ. चांगाटि तुलसी ने अपने समापन वक्तव्य में अनुवाद के महत्त्व को रेखांकित करते हुए अकादेमी को इस प्रकार के और भी कार्यक्रम करने के सुझाव दिए।

कन्नड भाषा में अल्पसंख्यक साहित्य

26 अगस्त 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने क्राइस्ट यूनिवर्सिटी के कन्नड विभाग के सहयोग से 'कन्नड में अल्पसंख्यक साहित्य' विषय पर यूनिवर्सिटी प्रांगण में परिसंवाद का आयोजन 26 अगस्त 2016 को किया। उद्घाटन सत्र में क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती पी. चंद्रिका ने अपने बीज-वक्तव्य में भारत के संदर्भ में अल्पसंख्यक साहित्य की चर्चा करते हुए लोगों से राजनैतिक उद्देश्य से बचने का आग्रह किया अन्यथा शुद्ध साहित्य का बचना मुश्किल होगा। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध कन्नड लेखिका श्रीमती बी.टी. ललिता नाइक ने कहा कि जनजातीय समुदायों को अल्पसंख्यक समुदाय का हिस्सा होना चाहिए और इसलिए उनका साहित्य भी अल्पसंख्यक साहित्य का हिस्सा होना चाहिए। मुख्य अतिथि श्री के.जे. वर्गीज ने अकादेमी को इस परिसंवाद के आयोजन पर धन्यवाद दिया और कहा कि मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में पढ़ने की अच्छी आदत पैदा करने के लिए भी धन्यवाद दिया कि पढ़ने की आदत भाषा तथा हमारी कल्पना शक्ति को समृद्ध करती है। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में समाज में सौहार्द और शांति बनाए रखने में साहित्य की भूमिका और जनजातीय और अल्पसंख्यक साहित्य के संरक्षण और उनके विकास में अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों की भी संक्षेप में चर्चा की। श्री मुकुंड नरगुंडा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. वाय. एस. शिव प्रसाद ने की तथा सुश्री शांता नाइक एवं डॉ. बी.एस. तलवाडी ने 'कन्नड साहित्य और आदिवासी विचार' तथा 'कन्नड साहित्य में ईसाइयों का योगदान' विषय पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. शिव प्रसाद ने समाहार प्रस्तुत किया और पढ़े गए आलेखों पर अपने विचार प्रकट किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. मीरसाविहाली शिवन्ना ने की। श्री सिराज अहमद एवं श्री बी.एम. मदरी ने 'कन्नड साहित्य और मुस्लिम विचार' तथा 'कन्नड साहित्य और ख़ानाबदोश जनजाति' विषय पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. पी. कृष्णा स्वामी ने अपने समापन वक्तव्य में ज्ञान के आदान-प्रदान के बारे में बात की। डॉ. एम.टी. राठी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

तसव्वुफ़ और भक्ति की शेरी रिवायत

27 अगस्त 2016, पुणे

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा दकन मुस्लिम इंस्टीट्यूट के सहयोग से एक-दिवसीय परिसंवाद 'तसव्वुफ़ और भक्ति की शेरी रिवायत' का आयोजन 27 अगस्त 2016 को आज़म कैम्पस, पुणे में किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उर्दू के लब्धप्रतिष्ठ आलोचक प्रो. क़ुद्दूस जावेद ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने पूरी शताब्दी को समेटने की कोशिश की और कहा कि तसव्वुफ़ न तो मज़हब है न मज़हब का बदल, अदब व आदाब का दूसरा नाम तसव्वुफ़ है।

आज के हालात में इस विषय पर ऐसे परिसंवाद की बहुत आवश्यकता है।

बीज-भाषण उर्दू के वरिष्ठ आलोचक एवं साहित्य अकादेमी उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य श्री शमीम तारिक़ ने दिया। उन्होंने अपने भाषण में वृहद दृष्टिकोण में तसव्वुफ़ और भक्ति की काव्यात्मक प्रवृति के ऐसे बिंदुओं को बताया जिनके प्रभाव सामान्य लोगों की ज़िंदगियों पर पड़े हैं। उन्होंने कहा कि शेरी रिवायत के प्रभाव भारत की सभी भाषाओं पर दिखाई देते हैं। परिसंवाद का उद्घाटन दकन मुस्लिम इंस्टीट्यूट की अध्यक्ष श्रीमती आबिदा इनामदार ने की। उन्होंने इस कार्यक्रम के लिए साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया और कहा कि भारत गंगा जमुनी तहज़ीब का गहवारा है। इस सभ्यता को सूफ़ी संतों ने अपने विचार और दर्शन से एकजुट किया है और इंसान दोस्ती का पैग़ाम दिया है।

प्रो. क़ुद्दुस जावेद अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए, साथ में श्रीमती आबिदा इनामदार एवं शमीम तारिक़

परिसंवाद के दो अन्य सत्रों में प्रो. साहेब अली, डॉ. जमशेद अहमद नदवी, डॉ. सादिक़ा नवाब सहर, डॉ. शबीब अनवर अलवी, नज़ीर फ़तहपुरी और डॉ. अज़ीज़ अम्बेकर ने अपने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में सवाल व जवाब का सिलसिला भी चला। इस अवसर पर भारी संख्या में उर्दू प्रेमी, छात्र छात्राएँ मौजूद थे।

लेखक से भेंट

नरबहादुर दाहाल

27 मई 2016, कलिम्पोङ

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कलिम्पोङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 27 मई 2016 को वर्शिप सेंटर, कलिम्पोङ में नेपाली के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री नरबहादुर दाहाल के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम की संकल्पना पर प्रकाश डालते हुए श्री दाहाल का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। भारतीय नेपाली कविता के स्वच्छंदतावादी स्वर्णकाल के प्रखर एवं वरिष्ठ कवि श्री दाहाल ने कहानी, निबंध, आलोचना, यात्रवृत्त, जीवनी आदि विधाओं में भी प्रचुर लेखन किया है। इस अवसर पर श्री दाहाल ने अपनी रचनात्मक यात्रा के बारे में बहुत ही रोचक ढंग से बताया। उन्होंने प्रबुद्ध श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए तथा अपनी कुछ कविताएँ भी सुनाईं। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्री नरबहादुर दाहाल

बादल हेम्ब्रम

5 जून 2016, राँची

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा संताली के प्रतिष्ठित कथाकार और नाटककार श्री बादल हेम्ब्रम के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम 5 जून 2016 को राँची (झारखंड) में आयोजित किया गया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए श्री हेम्ब्रम का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्री हेम्ब्रम ने अपनी रचनात्मक यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि बचपन में ही उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था, जिसके कारण उन्हें बहुत से संघर्षों का सामना करना पड़ा। उन्होंने अपना लेखन कविता से शुरू किया और उनकी पहली कविता कॉलेज की पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। बाद में उन्होंने प्रचुर मात्रा में नाट्य साहित्य, कथा साहित्य और बाल साहित्य का लेखन किया। अपने सामाजिक सरोकारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि ग्रामीण समाज को अशिक्षा की समस्या ने बेतरह जकड़ा हुआ है, जिसके लिए कार्य किए जाने की ज़रूरत है। उन्होंने श्रोताओं द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब भी दिए। अंत में अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच

नेपाली ग़ज़ल पाठ

8 मई 2016, खरसाङ

साहित्य अकादेमी द्वारा गोर्खा जन पुस्तकालय, खरसाङ (पश्चिम बंगाल) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली ग़ज़ल पाठ' का कार्यक्रम 8 मई 2016 को पुस्तकालय सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिष्ठित नेपाली आलोचक और अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जस योञ्जन 'प्यासी' ने की। इस कार्यक्रम में नोर्जाङ् स्याङ्देन, कमल रेग्मी, निर्दोषिका तामाङ्, संजीव छेत्री और लील बहादुर छेत्री ने अपनी ग़ज़लों का पाठ किया, जबकि अजनिश राई, सुजित खवास और सौरभ राई ने नेपाली के सुपरिचित ग़ज़लकारों की ग़ज़लों का गायन किया। डॉ. प्यासी ने साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली ग़ज़लों के पाठ के इस तरह के दूसरे कार्यक्रम के आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार प्रकट किया और आशा जताई कि भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन अकादेमी द्वारा किया जाता रहेगा। पठित ग़ज़लों में समकालीन समाज की विविध रंगी भावनाओं, समस्याओं को चित्रित किया गया था।

मणिपुरी संस्कृति एवं साहित्य में मिथक

10 मई 2016, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा मालेम अयीकोल, खाबाम्ल लम्नी के सहयोग से मणिपुरी संस्कृति एवं साहित्य मिथक विषयक साहित्य मंच का आयोजन 10 मई 2010 को किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं

आलेख प्रस्तुत करती श्रीमती वी. आङ्ला देवी

अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पुरानी मणिपुरी संस्कृति और साहित्य मौखिक भजनों, धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों से जुड़ा हुआ है। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि मिथक धर्म में परिवर्तन के साथ अलग ढंग से आता है, लेकिन किसी हद तक मिथक को वैज्ञानिक रूप से समझाया जा सकता है, लेकिन तर्कों से साबित नहीं किया जा सकता है। इस दुनिया का हर राष्ट्र या समुदाय का अपना मिथक होता है। यह लोगों के विश्वास पर आधारित होता है।

मणिपुरी संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन. खगेन्द्र सिंह जो कि मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित थे, ने कहा कि मनुष्य और मिथक के बीच गहरा संबंध है। अतः हर समुदाय का अपना मिथक होता है। उन्होंने अलग-अलग ढंग से मिथक के अर्थ की व्याख्या की। उनके अनुसार मानव प्रेम दिन-प्रतिदिन लुप्त होता जा रहा है। मुख्य अतिथि के वक्तव्य के बाद श्रीमती वी. आङ्ला देवी ने मणिपुरी संस्कृति और साहित्य में लार्ड थाङ्जिङ् विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मणिपुरी अपने पूर्वजों की उपासना करते हैं। ऐसी स्थिति में पूर्वजों का देवी-देवताओं की तरह सम्मान किया जाता है। उनमें से मोएरंग के इबोधू थाङ्जिङ् एक है, जिनकी पूजा मणिपुरी आज भी ईश्वर के रूप में करते हैं। नूबंबा एवं थोइबी की प्रेम कथा साहित्यिक महाकवि अंगनथाल की कृति है। ऐसी स्थिति में इबोधू थाङ्जिङ् मणिपुरी संस्कृति और साहित्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डॉ. माखोनमनी मोंगसाबा ने मणिपुरी संस्कृति और साहित्य में लार्ड कोबरु पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कोबरु ईश्वर का नाम नहीं है। यह एक पहाड़ी का नाम है। ईश्वर का वास्तविक नाम कोरेङ नगेङ है। पहाड़ी पर बसने वाले कोबरु पहले मणिपुरी व्यक्ति हैं। ईश्वर कोबरु से आने वाला साहित्य उसकी प्रशंसा में लिखा या गाया जाने वाला गीत है।

तीसरा आलेख मणिपुरी संस्कृति और साहित्य में लार्ड मार्जिंग विषय पर ए. नाङ्पोक निगंथू ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह

ईश्वर हेनगांग हिल पर स्थापित हैं। आज तक लोग भगवान की पूजा करते हैं। भगवान की महिमा का गायन सचमुच समृद्ध है।

दूसरे सत्र में टी. गुलामजट सिंह, मनी ताङ्जम एवं ठा. जाय सिंह ने अपनी कहानियों का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में वैकोम महेंद्र सिंह, अध्यक्ष मालेम अइकोल ने कहा कि अकादेमी के सहयोग से इस प्रकार के अन्य कार्यक्रम भविष्य में भी होते रहना चाहिए।

हमार, पाइते, तांगखुल और तादूकुकी के समकालीन साहित्य के विकास में जनजातियों के मौखिक साहित्य का योगदान

11 मई 2016, चुरचंदपुर, मणिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'हमार, पाइते, तांगखुल और तादूकुकी के समकालीन साहित्य के विकास में जनजातियों के मौखिक साहित्य का योगदान' विषय पर चर्चा का आयोजन दिनांक 11 मई 2016 को इंफ़ाल में किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए समकालीन साहित्य में स्वदेशी साहित्य और उनकी भूमिका को रेखांकित किया। NECOL के निदेशक श्री एच. कामखेंताङ ने प्रतिभागियों का परिचय दिया तथा विषय के बारे में जानकारी दी। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि मणिपुरी में मौखिक साहित्य की एक समृद्ध विरासत है तथा अकादेमी जनजातीय साहित्य की जानकारी एकत्र करने और उनके प्रकाशन द्वारा उनके दस्तावेजीकरण की संभावना तलाश रही है। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री पन्नीर सेलवन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में तादूकुकी लिट्रेचर सोसायटी के सचिव खेमांग चांगलोइ ने उनकी सोसायटी को पेश आ रही समस्या के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि परीक्षाओं के विभिन्न स्तरों पर अन्य जनजातियों के मध्य कक्षा 10, 12 तथा स्नातक स्तर पर तादु भाषा में छात्रों की संख्या सबसे अधिक है। उन्होंने आगे कहा कि उनका तादूकुकी और अन्य जनजातियों के लिए समकालीन साहित्य के लिए मौखिक साहित्य के योगदान के स्रोत का कोई सुझाव नहीं है।

तादूकुकी लिट्रेचर सोसायटी के अध्यक्ष श्री. एस. जी. किपगेन ने भी पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन के लिए धन की आवश्यकता को दोहराया। उन्होंने भी मौखिक साहित्य का उपयोग कर समकालीन साहित्य के विकास के किसी भी संभव साधन के उपयोग का सुझाव भी दिया। हमार विद्वान श्री रुइवेमरं ने कहा कि हमार की पारंपरिक या विद्या साहित्य के मौजूदा स्वरूप का आधार है। मौखिक साहित्य के मौजूदा स्वरूप से बाहर हम रचनात्मकता बना सकते हैं। अच्छी फ़िल्मों और अच्छे नाटकों के लिए हम लोक कथाओं का प्रयोग कर सकते हैं।

श्री इम्मानुल वर्ते ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आशावादी टिप्पणी करते हुए कहा कि यदि हम सूक्ष्मता और गहराई से अपने पूर्वजों के साहित्य का अध्ययन करें तो उसमें से भावी पीढ़ी के साहित्य के विकास के लिए बहुत सारी महत्त्वपूर्ण सामग्री बाहर आ सकती है।

दूसरे सत्र में पइते साहित्य के अध्यक्ष चिंखोकम हांगसिंग ने मौखिक साहित्य का एक अच्छा सौदा परंपरागत ढंग, प्रयासों, विश्वासों और सर्वव्यापी पाइते अस्तित्व के अन्य सभी पहलुओं के बारे में सूचना दी। उन्होंने कहा कि ईसाई धर्म में लोगों के धर्मांतरण के बाद मौखिक साहित्य ने मुद्रित साहित्य में पहले अध्याय का योगदान दिया।

हमार विद्वान थाङ्सोहमांग ने इस बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि मौखिक साहित्य में गहराई तक निहित हुए बिना हमार साहित्य का लेखन नहीं हो सकता था। सभी जनजातियों की लोककथा तत्त्व एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। उन्होंने कहा कि जनजातियों का मौखिक साहित्य आदिवासी साहित्य की बुनियाद है।

सत्र के अध्यक्ष श्री एच. एच. माता ने गंभीरता से पढ़े गए आलेखों का मूल्यांकन किया और कहा कि लोक तत्त्वों का प्रयोग विभिन्न ढंग और शैली में उत्कृष्ट साहित्य लेखन में किया जा सकता है।

साहित्य मंच

13 मई 2016, श्रीनगर

13 मई 2016 को अपराह्न 3 बजे सेमिनार हॉल, जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर,

कवियों का परिचय कराते प्रो. मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा

एंड लैंग्वेजेज़, लाल मंडी, श्रीनगर में कश्मीरी कवियों के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने प्रतिभागियों का परिचय कराया तथा कार्यक्रम का संचालन भी किया। प्रो. आज़ुर्दा ने अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में शफ़क़ सोपोरी, बशीर चिराग़, बशीर आरिफ़, फ़ैयाज़ तिलगामी, शहनाज़ रशीद एवं नुरुद्दीन होश ने अपनी कश्मीरी कविताओं का पाठ किया।

कविता पाठ

21 मई 2016, क्योंझर, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी द्वारा 21 मई 2016 को सिलसुआन गाँव, ज़िला-क्योंझर, ओड़िशा में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ओलचिकी लिपि के जनक और संताली के पुरोधा लेखक पंडित रघुनाथ मुर्मू की जयंती के अवसर पर आयोजित यह कार्यक्रम अकादेमी में संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसके अंतर्गत श्री रघुनाथ मरांडी, श्री हलधर मुर्मू और श्री कान्हेई हेम्ब्रम ने अपनी संताली कविताओं का पाठ किया। श्री हांसदा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में पठित कविताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी की और अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताते हुए कहा कि पिछले कुछेक वर्षों में अकादेमी सुदूर भाषा क्षेत्रों में भी अपने कार्यक्रम करती रही है, उसी कड़ी में आज इस गाँव में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ है।

कहानी पाठ

25 मई 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 25 मई 2016 को अकादेमी सभाकक्ष, नई दिल्ली में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत बहुभाषी कहानी पाठ का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत श्रीमती कविता (हिंदी), श्री सैफ़ी सिरोंजी (उर्दू) और श्री श्रीदेव (मैथिली) ने क्रमशः 'यह डर क्यों लगता है', 'सरस्वती सम्मान' तथा 'बड़की छोटकी' शीर्षक कहानियों का पाठ किया। तीन भिन्न पृष्ठभूमियों पर पठित इन कहानियों को श्रोताओं की भरपूर प्रशंसा मिली। श्री श्रीदेव ने अपनी कहानी का पाठ हिंदी अनुवाद में किया। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच कार्यक्रम का दृश्य

व्याख्यान - नगेन सइकिया

26 मई 2016, नूनमती, असम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा लब्धप्रतिष्ठ असमिया लेखक श्री नगेन सइकिया को 26 मई 2016 को उनके विचार और समकालीन असमिया साहित्य लेखन पर असम जातीय विद्यालय नूनमती में व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन असम

श्री नगेन सइकिया

जातीय विद्यालय के सहयोग से किया गया। असम जातीय विद्यालय की श्रीमती अपर्णा देवी तथा श्रीमती अपराजिता दत्त के स्वागत से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने आमंत्रित अतिथि का स्वागत करते हुए डॉ. सइकिया का परिचय दिया तथा कहा कि श्री सइकिया ने अपने लेखन द्वारा साहित्य को समृद्ध करने में अपना योगदान दिया है तथा अपने लेखन द्वारा अपनी पहचान बनाई है।

डॉ. सइकिया ने अपने व्याख्यान में आधुनिक समकालीन असमिया साहित्य के अंतर को स्पष्ट किया। उन्होंने 'रामधेनु युग' तथा

'उत्तर रामधेनु युग' की चर्चा की। उन्होंने कहा कि समय के अनुसार साहित्य में किस प्रकार अपनी दशाएँ एवं दिशाओं का परिवर्तन होता है। उन्होंने असम के कई लेखकों के उदाहरण प्रस्तुत किए जैसे सौरव कुमार चलिहा, महिम बोरा, मोनिका देवी, अनामिका बोरा, अरुण सरमा, प्रशांत राजगुरु, देवव्रत दास, मनोज गोस्वामी, कवियों जैसे निलिम कुमार के नाम विशेष रूप से रेखांकित किए जिनकी पहचान असमिया साहित्य में नई शैली एवं फ़ॉर्म के रूप में होती है। डॉ. सइकिया ने इंगित किया कि भाषाओं के परिवर्तन भी असमिया साहित्य के नए युग का सूचक हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान का समाहार करते हुए कहा कि असमिया साहित्य का परिदृश्य गतिशील है तथा यह एक सकारात्मक राह पर नई शैली और फ़ॉर्म में बदल रहा है। व्याख्यान के बाद श्रोताओं द्वारा चर्चा में भाग लिया गया। धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

उद्घाटन वक्तव्य देते प्रो. एच. बेहारी सिंह

सिनेमा और साहित्य

19 जून 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा आशंगबा कम्यूनिकेशन के सहयोग से 'सिनेमा और साहित्य' विषय पर एक साहित्य मंच का आयोजन दवे लिटरेचर सेंटर इंफ़ाल में 19 जून 2016 को किया गया। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए सिनेमा और साहित्य के संबंधों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। श्री आर. के. बिदुर, श्री मेघचंद्र कोंगबम् एवं डॉ. माखोनमनी मोङ्शाबा ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री आर. के. बिदुर ने मणिपुरी सिनेमा का रुझान, श्री मेघचंद्र कोंगबम् ने सिनेमा और मणिपुरी साहित्य तथा डॉ. माखोनमनी मोङ्शाबा ने वृत्तचित्र एवं मणिपुरी साहित्य पर अपने विचार प्रकट किए। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा प्रायोजित बहुत से प्रोजेक्ट और कार्यक्रमों की संभावनाएँ हैं। अशंगबा कम्यूनिकेशन के सलाहकार श्री एल. उपेंद्र शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि मणिपुरी सिनेमा अपने शिखर पर प्रतिभावान लोगों के सतत प्रयास से पहुँचा है और यह परंपरा जारी रहनी चाहिए। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के सदस्य श्री ए. सी. नेत्रजी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

सिंधी कविता पर विमर्श

25-26 जून 2016, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा गोवर्धन स्मृतिखंड, गुजरात साहित्य परिषद्, अहमदाबाद में 25-26 जून 2016 को सिंधी कविता पर विमर्श का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य श्री हुंदराज बलवानी ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के ही परामर्श मंडल के एक अन्य सदस्य श्री अर्जन चावला ने विमर्श का उद्घाटन करते हुए कहा कि साहित्य जीवन में आवेश और भावानाओं को दर्शाता है। साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने कार्यक्रम की संक्षेप में रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अतिथि लेखकों से आग्रह किया कि सिंधी साहित्य के गत पाँच वर्षों की ग़ज़ल एवं कविता के विकास के बारे में बात करें। इस संदर्भ में उन्होंने आमंत्रित लेखकों से अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। प्रसिद्ध सिंधी कवि श्री अर्जन हासिद ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ग़ज़ल और कविता के बीच के अंतर को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि कविता ग़ज़ल के बाद वजूद में आई और हमें इन दोनों विधाओं के काव्यात्मक रूप को ढूँढ़ना होगा।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध सिंधी कवि मोहन हिमथाणी ने की। श्री खीमन मूलाणी ने 'सिंधी कविता में भावनाएँ : ग़ज़ल के संदर्भ में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कुछ समकालीन ग़ज़लें भी प्रस्तुत कीं। इस सत्र में सर्वश्री वासदेव मोही, अर्जन चावला, लक्ष्मण दूबे ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। दूसरा सत्र 'समकालीन सिंधी ग़ज़ल : आज' विषय पर केंद्रित था तथा सत्र की अध्यक्षता एवं संचालन श्री वासदेव मोही ने की। श्री मोही ने समकालीन ग़ज़ल पर अपनी चिंता व्यक्त की। सर्वश्री अर्जन

चावला, खीमन मूलाणी एवं लक्ष्मण दूबे ने चर्चा में भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए। श्री लक्ष्मण दूबे ने इस बात की पुष्टि की कि सिंधी साहित्य में गंभीर कवियों का अभाव है। उन्होंने अपनी कुछ ग़ज़लें भी प्रस्तुत कीं। श्री अर्जन चावला ने कहा कि ग़ज़ल दिल की धड़कन है। इसमें ख़ुशी की आवाज़ सुनी जा सकती है। समकालीन ग़ज़ल काव्य की तुलना में अधिक यथार्थवादी है। यह वक़्त के साथ बदल रही है। खीमन मूलाणी ने कहा कि देखभाल एवं गुणवत्ता के बीच एक संक्रमण है। वासदेव मोही का विश्वास था कि गत दस वर्षों में और अधिक श्रोता ग़ज़लों से जुड़ रहे हैं। प्रस्तुति और अपनी कलात्मक भाषा से ग़ज़ल और अधिक सार्थक बन गई है।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता सुश्री रश्मि रमानी ने की तथा मोहन हिमथाणी ने 'सिंधी कविता में भावनाएँ : कविता के संदर्भ में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनका पहला प्रश्न था 'भावनाएँ क्या हैं?और उनकी परिभाषा क्या है।' उन्होंने कुछ सिंधी कवियों एवं उनकी भावनात्मक कविताओं के उदाहरण प्रस्तुत किए। श्री विनोद आसुदाणी ने 'सिंधी भाषा में रचनात्मकता : ग़ज़ल के संदर्भ में' विषय पर अपने आलेख में सिंधी ग़ज़ल में सशक्तीकरण की बात की तथा कहा कि पुराने संदर्भ किस प्रकार आधुनिक संदर्भों में बदल रहे हैं। आलेख प्रस्तुति के बाद विनोद आसुदाणी एवं नरेश उधानी ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री ढोलन राही ने की तथा विम्मी सदारंगाणी ने 'सिंधी भाषा में रचनात्मकता : कविता (गत पाँच वर्ष)' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सर्वश्री प्रेम प्रकाश, वेरहो रफ़ीक़, नामदेव ताराचंदानी, मीना शहदादपुरी एवं हरीश करमचंदानी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। पाँचवें सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण दूबे ने की। श्री अर्जन चावला ने 'सिंधी कविता में व्यंग्य : ग़ज़ल (गत पाँच वर्ष)' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा श्रीचंद केसवानी, रश्मि रमानी, विम्मी सदारंगाणी, कमला गोकलाणी एवं अर्जन हासिद ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

छठे सत्र का विषय था 'समकालीन सिंधी कविता : आज' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री नामदेव ताराचंदानी ने की। श्री विनोद आसुदाणी, विम्मी सदारंगाणी एवं मोहन हिमथाणी ने चर्चा में भाग लिया। श्री अर्जन चावला ने सातवें सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. कमला गोकलाणी ने 'सिंधी कविता में व्यंग्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा भगवान निर्दोष, मोहन हिमथाणी, श्रीचंद दूबे एवं ढोलन राही ने अपनी कविताओं का पाठ किया। डॉ. प्रेम प्रकाश ने समापन वक्तव्य दिया। धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कवि समाय

26 जून 2016, सिद्दपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा प्रयोग स्वयं सेवा संस्थान के सहयोग से 'कवि समाय' कार्यक्रम का आयोजन 26 जून 2016 को सिद्दपुर में किया गया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य श्री श्रीधर बलगार ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए काव्यात्मक संवेदना की बात की और प्रयोग स्वयं सेवा संस्था का इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया। प्रसिद्ध कथाकार श्री गंगाधर कोलकागी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया कि अकादेमी ने इस ग्रामीण क्षेत्र में कार्यक्रम का आयोजन किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि युवा रचनाकारों में गंभीर साहित्य के प्रति रुचि पैदा होगी। सर्वश्री सुबरे मत्तीहल्ली, काव्यश्रीनायर, के. बी. वीरलंगन गौड एवं तमन्ना बीगार ने अपनी रचनाओं का पाठ किया तथा अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। पढ़ी गई रचनाओं पर श्रोताओं द्वारा चर्चा भी किया गया।

बहुभाषी रचना पाठ

8 जुलाई 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 8 जुलाई 2016 को अकादेमी सभाकक्ष, नई दिल्ली में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत बहुभाषी रचना पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत सुश्री (डॉ.) तृष्णा चक्रवर्ती (बाङ्ला) ने

बायें से : देवेंद्र कुमार देवेश, तृष्ण चक्रवर्ती, रवि प्रकाश टेकचंदानी, कुमार मनीष अरविंद एवं अरविंद श्रीवास्तव

अपनी कविताओं का पाठ मूल भाषा सहित हिंदी एवं अंग्रेज़ी अनुवाद में किया, जबकि श्री कुमार मनीष अरविंद ने अपनी कविताएँ मूल मैथिली तथा हिंदी अनुवाद में प्रस्तुत कीं। हिंदी कवि डॉ. अरविंद श्रीवास्तव ने अपनी जिन कविताओं का पाठ किया, उनमें चवन्नी पर लिखी गई उनकी कविता 'चवन्नी की याद में' बेहद पसंद की गई। प्रतिष्ठित सिंधी लेखक डॉ. रविप्रकाश टेकचंदाणी ने अपनी कहानी 'ज़ीरो' का पाठ हिंदी अनुवाद में किया। प्रस्तुत कहानी पति-पत्नी के संवेदनशील रिश्ते पर आधारित थी, जिसे काफ़ी सराहना मिली। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

ग़ज़लें प्रस्तुत करते सैयद ज़िया अलवी, अन्य प्रतिभागी

बहुभाषी रचना पाठ

29 जुलाई 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 29 जुलाई 2016 को अकादेमी सभाकक्ष, नई दिल्ली में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत बहुभाषी रचना पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत श्रीमती सुसान विश्वनाथन (अंग्रेज़ी), श्रीमती रीता सिंह (हिंदी), श्रीमती वनीता (पंजाबी) और श्री सैयद ज़िया अल्वी (उर्दू) ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। श्रीमती रीता सिंह की कविताएँ स्त्री विमर्श, जंगल विमर्श और दलित विमर्श की संवेदना को अपने में समेटे हुए थीं, वहीं श्री सैयद ज़िया अल्वी ने अपनी सूफ़ियाना ग़ज़लों से सबका मन मोह लिया। श्रीमती वनीता ने अपनी कविताएँ मूल पंजाबी के साथ-साथ हिंदी एवं अंग्रेज़ी में अनूदित करके भी प्रस्तुत कीं। उनकी बारिश पर लिखी कविताएँ बहुत सराही गईं। श्रीमती सुसान विश्वनाथन ने अपनी कथा-रचना के एक अंश का पाठ किया। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

साइनो-इंडियन साहित्य मंच

22 अगस्त 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने साइनो-इंडियन साहित्य मंच की तीसरी बैठक का आयोजन नई दिल्ली के अकादेमी परिसर में 22 अगस्त 2016 को किया, जिसमें फ़िल्म प्रदर्शित की गई और चीनी प्रतिनिधि मंडल तथा विशिष्ट हिंदी रचनाकारों के बीच बातचीत हुई। चीनी प्रतिनिधि मंडल में श्री ही जियानमिंग, उपाध्यक्ष, चाइनीज़ राइटर्स एसोसिएशन, श्री चेन यजुन, सुश्री लिन जियुमाई, श्री ली हाव, श्री हू वाई, इंटरनेशनल लाइज़न डिपार्टमेंट ऑफ़ चाइनीज़ राइटर्स एसोसिएशन तथा प्रो. अरुण कमल, डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय और प्रो. सी. मृणालिनी एवं अन्य साहित्यकारों ने भारतीय लेखक समुदाय का प्रतिनिधित्व किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा भारत और चीन के बीच के साहित्यिक विनिमय के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने बताया कि अकादेमी और एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ चाइना पब्लिशर्स के

चाइनीज़ राइटर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव

बीच पारस्परिक अनुवाद का अनुबंध हुआ है और कुछ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जैसे 'सुर सागर'। श्री ही जियानमिंग ने इस बैठक के आयोजन के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया और साहित्य अकादेमी और चीनी लेखक समिति के बीच विनिमय के बारे में बात की। साथ ही भारत और चीन के बीच की समरूपता को उजागर किया। सुप्रसिद्ध हिंदी कवि एवं अनुवादक प्रो. अरुण कमल ने 'नॉन फ़िक्शन : रिकॉर्डिंग हिस्ट्री एंड रियलिटी' विषय पर लेख प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने आज पाठकों में कथेतर गद्य की बढ़ती भूमिका के बारे में बताया। सुश्री चेन यजुन ने अपना लेख 'दि सिटी एंड कंट्रीसाइड इन लिटरेचर' पढ़ा जिसमें उन्होंने साहित्य में शहर एवं गाँव के विविध अवधारणाओं के बारे में बात की और कहा कि ग्रामीण क्षेत्र पिछड़ेपन और अज्ञानता के समकक्ष नहीं है तथा शहरी जीवन आवश्यक नहीं कि प्रगति को चित्रित करती हो। डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने 'नॉन फ़िक्शन : रिकॉर्डिंग हिस्ट्री एंड रियलिटी' विषय पर लेख प्रस्तुत किया और तीन प्रकार के व्यक्ति अध्ययन बिनोदिनी दासी, सुभाष मुखोपाध्याय और मीनाक्षी सेन पर अपने विचार रखे। श्री जिन जियुमाई ने अपना आलेख 'द कॉलिज़न एंड इंटीग्रेशन ऑफ़ लिटरेचर' विषय पर प्रस्तुत किया, जहाँ उन्होंने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बहुत से लेखक 21वीं सदी के जटिल वातावरण में अपने नगरीय साहित्य और ग्रामीण साहित्य, जो दर्द को बढ़ाता है और अपने मनोभाव में भ्रांति उत्पन्न करता है। श्री ली हाव ने 'द सिटीज एस्टाब्लिश्ड इन लिटरेचर' विषयक लेख में कुछ ख़ास शहरों में साहित्यिक कार्यों के कुछ स्मरणीय विवरण प्रस्तुत किए। डॉ. सी. मृणालिनी ने 'द सिटी एंड कंट्रीसाइड इन लिटरेचर : नूआन्सेज़ इन तेलुगु लिटरेचर' विषयक आलेख में अपना मत देते हुए कहा कि प्रत्येक अच्छा साहित्य, ख़ासकर सृजनात्मक लेखन, समय और स्थान का प्रतिनिधित्व करता है। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

साहित्य मंच

23 अगस्त 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा दिल्ली पुस्तक मेला के दौरान 23 अगस्त 2016 को प्रगति मैदान के हॉल नं. 8 में स्थित सभागार में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत हिंदी कविता पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत श्रीमती मृदुला प्रधान, श्रीमती नीलम मैंदीरत्ता, श्री संजय शुक्ल और श्री नित्यानंद गायेन ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

श्रीमती नीलम मैंदीरत्ता ने क्षणिकाएँ, गीत, ग़ज़ल, नज़्म और कविताओं का पाठ किया, जबकि श्री संजय शुक्ल ने अपनी ग़ज़लों के शेर, दोहे तथा गीत सुनाए।

श्री नित्यानंद गायेन द्वारा पठित कविताओं में 'सुंदरवन' पर केंद्रित कविता को बेहद पसंद किया गया।

श्रीमती मृदुला प्रधान ने स्त्री जीवन से जुड़ी सूक्ष्म गतिविधियों को अभिव्यक्त करने वाली सुंदर कविताएँ सुनाई। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

बायें से : श्रीमती मृदुला प्रधान, श्री संजय शुक्ल, श्रीमती नीलम मैंदीरत्ता और श्री नित्यानंद गायेन

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (हिंदी द्वैमासिक)

(अतिथि संपादक : रणजीत साहा)

एक प्रति : 25 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 125 रु., त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 350 रु.

लेखक सम्मिलन

संताली लेखक सम्मिलन

1 मई 2016, साहेबगंज, झारखंड

साहित्य अकादेमी द्वारा साहेबगंज कॉलेज, साहेबगंज (झारखंड) के सभागार में 'संताली रचना पाठ' कार्यक्रम का आयोजन 1 मई 2016 को किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन 'प्रगतिवार्ता' पत्रिका के संपादक डॉ. रामजन्म मिश्र ने किया। उन्होंने अकादेमी द्वारा सुदूर संताली भाषी क्षेत्रों में किए जा रहे इस तरह के आयोजनों के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की।

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला और संताली भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए अकादेमी की कार्य योजनाओं के बारे में बताया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने संताली भाषियों द्वारा व्यवहृत अनेक लिपियों के कारण आने वाली समस्याओं पर चर्चा करते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि संताली भाषा के लिए एक ही लिपि ओलचिकी को अपनाया जाना चाहिए।

रचना-पाठ का प्रथम सत्र कहानी पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता श्री श्याम बेसरा ने की। इस सत्र में श्री लाओस हांसदा, श्री सुबल कुमार मुर्मू और श्री सुशील हांसदा ने अपनी कहानियों का पाठ किया। कविता पाठ केंद्रित द्वितीय सत्र श्री विश्वनाथ हांसदा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसके अंतर्गत श्री शिवलाल मरांडी, श्री शिबू टुडु, श्री नाजिर हेम्ब्रम और श्री जयेन हांसदा ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई। समारोह में बड़ी संख्या में युवाओं और महिलाओं ने भागीदारी की।

राजस्थानी मौखिक साहित्य सम्मेलन

14-15 मई 2016, उदयपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा युगाधरी के सहयोग से राजस्थानी मौखिक साहित्य विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन 14-15 मई 2016 को उदयपुर में किया गया।

अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान में परंपरा और समुदाय आधारित मौखिक साहित्य के संरक्षण व देशी परंपराओं के पालन के लिए युवाओं से अपील की।

अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध राजस्थानी विद्वान डॉ. देव कोठारी ने लोक एवं मौखिक साहित्य की समानताओं को रेखांकित करते हुए देश की मौखिक परंपरा के संरक्षण की तुरंत आवश्यकता के बारे में बात की। डॉ. चंद्र प्रकाश देवल ने अपने बीज वक्तव्य में भागवत और पबजी से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने मौखिक परंपरा के अनुभवों को साझा किया तथा लोक कथाओं के संरक्षण पर बल दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कहानी वाचक एवं व्यंग्यकार श्री हरगम चौहान ने की तथा प्रसिद्ध राजस्थानी विद्वान डॉ. राजेंद्र बरहथ एवं कोटा के श्री ओम नागर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. बरहथ ने 'राजस्थानी लोक मौलिक संस्कृति में पहेलियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा अपनी प्रस्तुति में कई पहेलियों का पाठ किया। श्री ओम नागर ने अपनी प्रस्तुति में हदलोई मौखिक साहित्य के व्यापक क्षेत्र के बारे में बात की जो सदियों से प्रचलित हैं। सत्र के अध्यक्ष हरमन चौहान ने मौखिक नीतिवचन और मौखिक साहित्य की अज्ञानता को लेकर चिंता व्यक्त की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री भंवर सिंह सोमर ने की तथा बिकानेर से आए रामेश्वर गोदरा एवं राजेंद्र जोशी ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री रामेश्वर गोदरा का सुझाव था कि राजस्थानी मौखिक संस्कृति हरियाणा, पंजाब व राजस्थान का उदात मिश्रण है और प्रभु गोगा, इस क्षेत्र के लोक देवता व देवी हैं। श्री राजेंद्र

बायें से : प्रो. रामजन्म मिश्र (माइक पर), देवेंद्र कुमार देवेश एवं गंगाधर हांसदा

जोशी ने 'रवरारी रम्मादो' संस्कृति और मौखिक साहित्य वशील, जीना और होली बिकानेर शहर के आसपास उत्सवों की चर्चा की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. कुंदन माली ने की। डॉ. माली ने अपने वक्तव्य में राजस्थानी मौखिक संस्कृति को बचाने के लिए उसके संरक्षण और संरक्षण परियोजनाओं पर ज़ोर दिया। डॉ. राजेश कुमार व्यास ने भी मौखिक और लोक संस्कृति साहित्य और उनके संरक्षण तथा वर्तमान पीढ़ी के लिए उपलब्ध कराने के उपायों को तैयार करने पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया। डॉ. देवकरण सिंह ने अपने वक्तव्य में सुझाव दिया कि वास्तव में मौखिक साहित्य ही उच्च साहित्य के ख़ज़ाने का स्रोत है।

चौथे सत्र की अध्यक्षता मधु आचार्य ने की तथा अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि मौखिक साहित्य एक जीवित सांस्कृतिक साक्ष्य है तथा दूसरों की तरह उन्होंने भी उनके संरक्षण की वकालत की। श्री माधव नागर ने 'ग्वारी परंपरा' की बात करते हुए बताया कि पेंटर, लोकवाचक और संगीतकार अपनी प्रस्तुति को उत्सव के रूप में मनाने के लिए देवी पार्वती की आराधना करते हैं। डॉ. सुरेश रावडी ने राजस्थान के विभिन्न समुदायों द्वारा हलकारा परंपरा के लोकगीतों की अनूठी परंपरा पर एक प्रस्तुति पेश की।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. जी. उल. राठोर ने की तथा इस सत्र में डॉ. ज्योतिपुंज और ओम प्रकाश भाटिया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. राठोर ने मौखिक और मौखिक कलाकृतियों की साहित्यिकता के बारे में प्रश्न उठाए और सुझाव दिया कि उन्हें साहित्य से भ्रमित नहीं होना चाहिए। डॉ. ज्योतिपुंज ने याद दिलाया कि वैदिक साहित्य स्वभावतः मौखिक और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक हस्तांतरण के माध्यम से वर्षों तक बचा हुआ था।

डॉ. सोहन दान चरण ने समापन सत्र की अध्यक्षता की तथा डॉ. भगवती लाल व्यास ने समापन भाषण दिया। डॉ. व्यास ने राजस्थानी मौखिक संस्कृति के सांप्रदायिक प्रकृति के बारे में बात की।

पूर्वोत्तर एवं पश्चिम लेखक सम्मिलन

18-19 मई 2016, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी के सभागार में 'पूर्वोत्तर एवं पश्चिम लेखक सम्मिलन' का आयोजन 18-19 मई 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पूर्वोत्तर के लेखकों के प्रति सम्मिलन में शरीक होने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अकादेमी द्वारा इस प्रकार के सम्मिलनों के आयोजन से विभिन्न क्षेत्रों के साहित्यकारों को एक जगह एकत्र होने का अवसर मिलता है। यह मानवता की एक झलक देता है तथा समाज में सामंजस्य बनाए रखने में सहायता करता है। पूर्वोत्तर क्षेत्र जैव-विविधताओं, बहुत ही समृद्ध लोककथाओं की धरती है और प्राकृतिक सुंदरता का स्वर्ग है। उन्होंने आमंत्रित लेखकों का अतिथियों से परिचय कराया। असमिया के प्रसिद्ध लेखक व उपन्यासकार श्री ध्रुव ज्योति बोरा ने सम्मिलन का उद्घाटन किया। यद्यपि वे व्यवसाय से एक मेडिकल डॉक्टर हैं, दिल से एक साहित्यकार हैं। उन्होंने कहा कि भारत बहुभाषी देश है, लेकिन उनके स्थायी अस्तित्व के प्रति चिंता भी व्यक्त की। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं के प्रतिष्ठा को बहाल करने के लिए विद्वान दर्शकों से उचित क़दम उठाने की अपील की। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक श्री भालचंद्र नेमाडे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अपनी गुजरात यात्रा के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि उन्होंने हर 30 मील की दूरी पर एक महान व्यक्ति का निशान पाया। उन्होंने आगे कहा कि पूर्वोत्तर ने अपनी पहचान को बनाए रखा है जो उत्साहवर्द्धक है तथा भारत के पश्चिमी भाग ने पश्चिमी संस्कृति को शर्मिंदा किया है जो एक हतोत्साहित चिह्न है। उन्होंने पूर्णरूप से अनुसंधानपरक टिप्पणी की कि पूर्वोत्तर का कर्बी रामायण वाल्मीकि रामायण से अधिक प्राचीन है। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने

स्वागत वक्तव्य देते अकादेमी के सचिव

ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सम्मिलन का प्रथम सत्र काव्य पाठ के लिए था तथा सत्र की अध्यक्षता गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. बलवंत जानी ने की। उन्होंने सम्मिलन को कुंभ पर्व का नाम दिया जहाँ विभिन्न क्षेत्र के लेखक एकत्र हुए हैं। असमिया के ध्रुव कुमार तालुकदार, बोडो के देवकांत रामचेरी, मणिपुरी की शांति बाला देवी, नेपाली के जोगन दरनाल, सिंधी के अरुण बाबाणी, गुजराती के राजेश पंड्या, कोंकणी के आर. रामनाथ तथा मराठी के केशव देशमुख ने अपनी कविताओं का पाठ पहले अपनी मूल भाषा तत्पश्चात् उनके हिंदी, अंग्रेज़ी अनुवाद का पाठ किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री तानाजी हलंकर ने की। सत्र का विषय था 'मेरी मातृभाषा से इतर मेरा प्रिय साहित्य' जिसमें असमिया के श्री क़ुतबुद्दीन अहमद ने ग़ालिब पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

बोडो के श्री तुलोन मसहरी ने असम के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार कलागुरु बिशनु प्रसाद राभा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। गुजराती के युवा आलोचक अजय सरवैया ने हिंदी उपन्यासकार निर्मल वर्मा पर अपना आलेख

श्री ध्रुव ज्योति बोरा उद्घाटन वक्तव्य देते हुए। साथ में सचिव एवं भालचंद्र नेमाडे

प्रस्तुत किया। सत्र के अध्यक्ष श्री हलंकर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भाषा बाधक नहीं हो सकती क्योंकि किताबों के अनुवाद अलग अलग भाषाओं में हो रहे हैं। साहित्य लोगों की संस्कृति को दर्शाता है और अज्ञात भूमि के लिए एक वीज़ा है।

तीसरा सत्र कहानी पाठ को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता मराठी लेखिका सुश्री छाया महाजन ने की। इस सत्र में बोडो के श्री विद्यासागर नार्ज़री ने अपनी कहानी 'नो वेकेन्सी' का पाठ किया। गुजराती के श्री बिपिन पटेल ने 'संगीत शिक्षक' कहानी का पाठ किया। कोंकणी के श्री अजय बुवा ने एक 'एस एम एस' शीर्षक कहानी का पाठ किया।

चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री माधव बोरकार ने की तथा सत्र का विषय था 'मातृभाषा से इतर मेरा प्रिय साहित्य'। सुश्री लिथोङ्बी (मणिपुरी) ने प्रसिद्ध उपन्यासकार, राजनीतिज्ञ खुशवंत सिंह पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मराठी आलोचक एवं अनुवादक सुश्री शोभा नायक ने कन्नड लेखक एच. नागवेनी पर अपने विचार रखे। नेपाली लेखक श्री जे केक्टस ने भारतीय अंग्रेज़ी लेखक नीरद चौधरी पर अपने विचार रखे। वरिष्ठ सिंधी कवि श्री गावर्द्धन शर्मा घायल ने हिंदी कवि हरिनारायण व्यास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

पाँचवें और अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध सिंधी लेखक श्री प्रेम प्रकाश ने की। मराठी के श्री रवींद्र पंढरे ने 'डंगर' शीर्षक कहानी का पाठ किया। नेपाली के हरीश मकतान ने 'अलाऊ मी ए सेकेंड वाइफ़' शीर्षक अपनी कहानी का पाठ किया। सिंधी के श्री बंसी खूबचंदानी ने 'धुआँ' शीर्षक अपनी कहानी का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय युवा लेखक महोत्सव

28-29 मई 2016, अगरतला

साहित्य अकादेमी द्वारा त्रिपुरा सरकार के सूचना एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से शहीद भगत सिंह युवा आवास ऑडिटोरियम, अगरतला में 28-29 मई 2016 को अखिल भारतीय युवा लेखक महोत्सव का आयोजन किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। प्रसिद्ध असमिया लेखक ब्रजगोपाल राय ने आरंभिक वक्तव्य दिया। त्रिपुरा सरकार के संस्कृति विभाग के निदेशक श्री शांतनु देव बर्मन उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सर्वश्री विक्टर राजकुमार, पंकज बानिक, स्वप्ना बरुलरी, आसिया ज़हूर, अर्चना भैसरे, चिदानंद साली, ख. कृष्ण मोहन सिंह एवं सूर्यबाली ने इस सत्र में अपनी रचनाओं का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र में कंजालोचन पाठक, गोपीचंद ढंगर, उमेघ घनिया तथा मंसा मंदुलरी ने अपनी कहानियों का पाठ किया तथा सत्र की अध्यक्षता देवाशीष पाणिग्रही ने की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री चंद्रकांत मुरा सिंह ने की तथा संदीप सूफ़ी, शब्बीर मगामी, लिपिका देव बर्मा, उषा किरण 'सत्यदर्शी', गोरक सिरसाट, देवाशीष मिश्र, टेकचंद्र बेलवाल, सनत हांसदा, जे. येशुदास 'पूर्णा' ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

साहित्य उत्सव के तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री यतींद्र मिश्र ने की जबकि श्री आशुतोष भारद्वाज, राम मोरी, अर्ध्यम्बिका, जी. बीजाय कुमार शर्मा ने आलेख पाठ किया। किशोर मोंजीत बोरा, देतसंग स्वरगियरी, प्रशांत सरकार, कुसुम कांति चकमा, सी. दीपू सिंह, मोग चौधुरी, पवित्र लामा, चंदन कुमार झा, शालू कौर तथा रेखा पोहानी ने चौथे सत्र में अपनी कविताओं का पाठ किया तथा श्री कल्याण गुप्त ने सत्र की अध्यक्षता की।

उत्तर-पूर्व एवं दक्षिणी साहित्योत्सव

11-12 जून 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा 11-12 जून 2016 को भारतीय विद्याभवन में दो-दिवसीय उत्तर-पूर्व एवं दक्षिणी साहित्योत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव के स्वरूप और उपयोगिता के बारे में संक्षेप में बताया। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के

दीप प्रज्वलित करते डॉ. चंद्रशेखर कंबार, साथ में के.श्रीनिवासराव, श्री राधाकृष्णन एवं नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम

संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने उत्सव का उद्घाटन किया तथा अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि इस प्रकार के सम्मिलन की आवश्यकता अपनी परंपराओं से अज्ञानता का अतिक्रमण है। उद्घाटन सत्र के अंत में छः प्रसिद्ध कवियों कुशल दत्त (असमिया), प्रणव ज्योति नार्ज़री (बोडो), एम.एन. व्यास राव (कन्नड), गिरिजा पोपेकरा (मलयाळम्), कनमनी रासा (तमिळ) तथा कोटला वेंकटेश्वर रेड्डी (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। प्रथम सत्र कहानी पाठ को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता कलिंगनाथ गुदादुरु ने की। श्री नवीन मल्ला बोरो (बोडो), सुश्री गीतांजलि बोरा (असमिया) एवं सुश्री इंदू मेनन (मळयालम्) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। दूसरा सत्र काव्य गोष्ठी का सत्र था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. गोपी ने की। सुश्री के. जॉयमति देवी (मणिपुरी), श्री रोशन राय आदित्य (नेपाली), सुश्री विनय ओक्कुंड (कन्नड), श्री माधवन पुराचेरी (मळयालम्), सुश्री टी. परमेश्वरी (तमिळ) एवं श्री ई. सुब्बाराव (तेळुगु) ने अपनी कविता का पाठ किया। तीसरा सत्र कहानी पाठ का सत्र था तथा इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमती एच. बेनुबाला देवी (मणिपुरी) ने की। श्री संजीव क्षेत्री (नेपाली), श्री पवन्नन (तमिळ) एवं श्री चिंताकिंवी श्रीनिवासराव (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पूर्वोत्तर एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन

9-10 जुलाई 2016, पणजी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेंज़ेज ब्रगंजा के सहयोग से 'पूर्वोत्तर एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन' का आयोजन 9-10 जुलाई 2016 को पणजी में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध मराठी लेखक श्री आभा जी ढहाके ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि "आज कल कला एक उपभोग की वस्तु बनता जा रहा है। अपने बदलते स्वरूप के साथ, सेंसरशिप या प्रतिबंध की प्रकृति भी बदल रही है। ऐसे समय में लेखक, कलाकार, बुद्धिजीवी और आलोचक की ज़िम्मेदारी बढ़ गई है।" अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हर्लंकर ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा कहा कि साहित्यिक विमर्श को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न स्थानों पर इस प्रकार का आयोजन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इंस्टिट्यूट के श्री गोरख मंडरेकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्री देव प्रसाद तालुकदार (असमिया), सुश्री अंजलि डिमरी (बोडो), श्री प्रकाश कामत (कोंकणी), सुश्री वाय. नंदिनी (मणिपुरी), श्री ख़लील मोमिन (मराठी), श्री संजय बंतवा (नेपाली), श्री मोहन हिमथाणी (सिंधी), श्री किरीट दुधत ने श्री जयदेव शुक्ल (गुजराती) की कविताओं का पाठ किया।

बायें से : उद्घाटन वक्तव्य देते श्री आभा जी ढहाके, श्री कृष्णा किंबहुने, डॉ. के श्रीनिवासराव एवं श्री तानाजी हर्लंकर

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य श्री अविनाश सप्रे ने की। यह सत्र दूसरी क्षेत्रीय भाषा के 'मेरे प्रिय लेखक/कवि' के विमर्श पर आधारित था। श्री बिमल मजुमदार (असमिया), श्री हेमंत शाह (गुजराती), श्री सुधीर ताडकोदकर (कोंकणी) ने अपने विचार व्यक्त किए।

तीसरा सत्र कहानी पाठ के लिए था। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री हेमा नायक ने सत्र की अध्यक्षता की सुश्री मोनालिसा सइकिया (असमिया), डॉ. एम.एस. हाजोवरी (बोडो), श्री किरीट दूधत (गुजराती), श्री मधुसूदन जोशी (कोंकणी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एच. बेहारी सिंह ने 'दूसरी क्षेत्रीय भाषा के मेरे प्रिय लेखक/कवि' सत्र की अध्यक्षता की। सुश्री मृणालिनी कामत (असमिया), सुश्री मोनिका मुखिया (नेपाली), सुश्री रश्मि रमानी (सिंधी) ने अपने विचार व्यक्त किए।

अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता की। श्री मेसकुल खैरकपम (मणिपुरी), श्री जी.के. अनापुरे (मराठी), सुश्री जया जादवानी (सिंधी), सुश्री इंद्रमणि दरनाल (नेपाली) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्ण किंबहुने के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

उत्तर-पूर्व एवं पश्चिम लेखक सम्मिलन

24-25 अगस्त 2016, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा गुजराती परिषद्, अहमदाबाद के सहयोग से 24-25 अगस्त 2016 को गोवर्धन स्मृति खंड में सम्मिलन का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध गुजराती लेखक एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित श्री रघुवीर चौधरी ने सम्मिलन का उद्घाटन किया तथा उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. मालचंद्र नेमाडे ने की। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्ण किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि यह इस शृंखला का इस वर्ष का तीसरा सम्मिलन है।

श्री रघुवीर चौधरी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में इस आयोजन के लिए अकादेमी को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन से बहुत सी भाषाएँ जुड़ेंगी। उन्होंने रेखांकित किया कि इस प्रकार की गतिविधियों से राष्ट्र की साहित्यिक संस्कृति समृद्ध होती है। इस अवसर पर उन्होंने अपनी दो कविताएँ भी प्रस्तुत कीं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. नेमाडे ने हफ़ीज़ जालंधरी की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कहा कि "अपनी बोली मुहब्बत की बोली, न हिंदी न उर्दू न हिंदुस्तानी।" उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की। उन्होंने कहा कि एक मंच पर हमारी भाषायी अनेकता की उपस्थिति महत्त्वपूर्ण है। गुजराती साहित्य परिषद् के सचिव श्री प्रफुल्ल रावल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र कविता पाठ का सत्र था तथा सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने की। श्री मिहिर मोसुम रॉय (असमिया), सुश्री पी. नार्ज़री (बोडो), सुश्री इंदु जोशी (गुजराती), डॉ. हुनमंत चोपडेकर (कोंकणी), श्री अशाङ्बम नेत्रजीत (मणिपुरी), श्री लोकनाथ यशवंत (मराठी), श्री कमल रेगमी (नेपाली), श्री नरेश उधानी (सिंधी) ने अपनी कविताओं एवं गज़लों का पाठ पहले अपनी मातृभाषा में फिर उनके हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध गुजराती लेखक एवं आलोचक डॉ. चंद्रकांत टोपीवाला ने की। इस सत्र का शीर्षक था 'साहित्य में मेरी संस्कृति और अन्य कलाएँ। असमिया के श्री अरिंदम बरकटकी, बोडो के श्री बिरहसगिरी बसुमतारी, गुजराती की डॉ. उषा उपाध्याय तथा कोंकणी के श्री जोस लॉरेंस ने विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. हुंदराज बलवानी ने की। यह सत्र कहानी पाठ के लिए नियत था। श्री वित्य ज्योति बोरा (असमिया), डॉ. एम.एस. हजोवरी (बोडो), सुश्री रूपाली बेन ने श्री जिग्नेश ब्रह्मभट्ट (गुजराती) की कहानी का पाठ किया।

अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हर्लंकर ने 'साहित्य में मेरी संस्कृति और कला' विषयक सत्र की अध्यक्षता

रघुवीर चौधरी उद्घाटन वक्तव्य देते हुए

की। श्री माखोनमणी मोङ्साबा (मणिपुरी), श्री राजशेखर शिंदे (मराठी), श्री योगवीर सइकिया (नेपाली) एवं श्री वासदेव मोही (सिंधी) ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

बोडो परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. एम.एस. हाजोवरी ने समापन सत्र की अध्यक्षता की तथा यह सत्र कहानी पाठ का सत्र था। श्री नाँग मैकपम नवकुमार (मणिपुरी), श्री कालूसिंह (नेपाली) एवं श्री कलाधर मुतवा (सिंधी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। गुजराती साहित्य परिषद् के श्री प्रफुल्ल रावल के धन्यवाद ज्ञापन से सम्मिलन समाप्त हुआ।

आदिवासी साहित्यिक जतरा : आदिवासी लेखक सम्मिलन

27-28 अगस्त 2016, राँची

साहित्य अकादेमी और रमणिका फ़ाउंडेशन द्वारा दो दिवसीय आदिवासी साहित्यिक जतरा का आयोजन दिनांक 27-28 अगस्त 2016 को ह्यूमन पोटेंशियल डेवेलपमेंट सेंटर में किया गया, इसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से कुल 14 भाषाओं में कविता, कहानी और गीत प्रस्तुत किए गए। दिनांक 27 अगस्त 2016 को कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन सत्र के साथ हुई। उद्घाटन भाषण में रोज़ केरकेट्टा द्वारा सभी भाषाओं को साहित्य में जोड़ने की बात रखी गई साथ ही युवाओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज आदिवासी युवा पीढ़ी के कन्धों पर साहित्य का बोझ ज़्यादा है और हममें प्रतिभा की कमी नहीं है। आज के सभागार में उपस्थित युवा कवि, कवयित्री को देखकर काफ़ी ख़ुशी हो रही है क्योंकि हमारी स्थिति की अभिव्यक्ति ख़ुद हमारे अपने लोगों द्वारा ही की जा रही है। आरंभिक वक्तव्य की बागडोर श्री हरिराम मीणा, अध्यक्ष अखिल भारतीय आदिवासी साहित्य मंच जी ने सँभाली। उन्होंने आदिवासी साहित्यिक मंच की शुरुआत 1996 के सदस्य मंडल और सन् 2002 में हुए आदिवासी साहित्य पर आयोजित सम्मलेन की यादें साझा कीं। उन्होंने बिरसा पर कविता सुनाई जिसमें 'बिरसा मुंडा आज भी जीवित है, और अगर नहीं है तो जीवित करो अपने दिल में' जंगल में लगी आग बुझाने वाली चिड़िया की कहानी 'आज जंगल में आग लगी है, आदिवासी को उसे बुझाना है, अपने अस्तित्व को बचाना है' सुनाते हुए उन्होंने अपनी बातों को विराम दिया। बीज भाषण नीतिशा खलखो द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने अखिल भारतीय आदिवासी साहित्य मंच के बारे में जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि श्री. पॉल लिंगदोह, भूतपूर्व मंत्री, मेघालय ने अपनी खासी भाषा में लिखी कविता 'जिसे हमें वास्ता' प्रस्तुत की। कविता पाठ की शुरुआत अनुज लुगुन द्वारा की गई जिसमें मुंडारी भाषा में दो कविताएँ प्रस्तुत की गईं — 'अपिर सिरमा तयोम' और 'चूल्हों के सपनों में ही सबसे ज़्यादा सपने खौलते हैं' जैसी हक़ीक़त के सपनों से जुड़ी कविताएँ। स्ट्रीमलेट डखार जी ने अपनी खासी कविता पढ़ी जिसका हिंदी अनुवाद 'हम कौन हैं' को डॉ. मीनाक्षी मुंडा द्वारा किया गया। स्ट्रीमलेट डखार ने अपनी मातृभाषा खासी में 'हम कौन हैं?', 'भ्रष्ट', 'एक आशावादी उत्तरजीवी' कविताओं का वाचन किया। महाराष्ट्र से श्री. वाहरू सोनवाने द्वारा भेलारी भाषा में लिखी कविताएँ 'इस जंगल में कैसे जीते हो?', 'पेड़ छाँव में बैठनेवालों को उनकी जाती नहीं पूछता', 'प्रकृति संस्कृति गुलशन बहार' और 'बन्दूक़ की निति', 'जान लेने वाली निति से भी भयंकर होती है' जैसी कविताएँ पढ़ी।

रमणिका गुप्ता जी ने रमणिका फ़ाउंडेशन के उद्देश्यों के बारे में चर्चा की, आदिवासी समाज लेखन-लेखनी में हमेशा से वंचित रहा, उनके दर्द को किसी और ने बयाँ किया है। पूरे भारत में आदिवासियों की स्थिति और उनका संघर्ष एक सा है और ये उनके लोकगीतों से छलकता है, इसलिए आज सभी आदिवासी लेखकों को एक मंच पर जुटना आवश्यक है। एक दर्द का रिश्ता क़ायम हो और पूरे देश में आदिवासी समाज अपनी कविता, कहानियों के माध्यम से अपनी बातों को साझा करें। आदिवासी साहित्य पूरे देश के पाठ्यक्रम में शामिल होनी चाहिए। "भाषाओं को बचाने से ही आदिवासी बचेगा"।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्रीमती वासवी कीड़ो द्वारा की गई। रूपचंद हांसदा (संताली) ने 'हाथ है काम के वास्ते', 'आसमान', 'धूल में स्वप्न' और 'चिढ़' शीर्षक अपनी कविताएँ सुनाईं। ग्रेस कुजूर (कुड़ुख) ने 'नाल', 'अपने हिस्से का पानी', 'तुम पृथ्वी के नमक हो!', 'स्मार्ट सिटी' और 'ट्रेडमार्क', जबकि लिनुस कुजूर (कुड़ुख) ने 'उन्हें कहने दो', 'छोटा नागपुरिये की दशा', 'आदिवासी समाज की विशेषताएँ' शीर्षक अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। दयामणि बारला (मुंडारी) ने 'आत्मकथा', 'मेरी

बायें से : देवेंद्र देवेश, अनुज लगुन, वाहरू सोनवाने, हरिराम मीणा, रोज़ केरकेट्टा, रमणिका गुप्ता, लिंगदोह एवं नितिशा खलखो

उम्र की सच्चाई क्या है?', मोनालिसा चंकिजा (आओ/नागा) ने 'निरुत्तर लोग', 'मेरे लिए कुछ फूल ले आना', 'मेरी अपनी औरत को' शीर्षक कविताओं का पाठ किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शांति खलखो ने की और साथ ही कुड़ुख भाषा में अपनी कविता 'साहित्य में बँटना' का पाठ किया। निरल बागे (मुंडारी) ने 'गाँव की दुलारी', निर्मला समद (भूमिज) ने 'वर्षा ऋतु', लाल सिंह बोईपाई (हो) ने 'प्यारी बहना', 'धूमिल हो रही संस्कृति', 'धधकते फूल', हेसेल सारु (मुंडारी) ने 'मेरे गाँव देश', अनीता मिंज (कुड़ुख) ने 'जिद्दी', 'लतर सी इरोम', ज्योति लकड़ा (कुड़ुख) ने 'खोया बचपन', 'लाल गलियारा', 'सपना', सुरेश जगन्नाथ (एरुकला) ने 'ये जंगल किसका है?', 'जंगली', 'धरती', डोबरो बिरुउली (हो) ने 'हो भाषा का अनुकरण', नीतिशा खलखो (कुड़ुख) ने 'संघर्ष को विराम कहा', 'अजर अमर कहानियाँ', शताली शेडमाके (गोंडी) ने 'पेशी', 'बाताल मावा देस?' शीर्षक अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

दूसरे दिन के पहले सत्र का संचालन नीतिशा खलखो ने करते हुए पीटर पॉल एक्का, महादेव टोप्पो, वाल्टर भेंगरा 'तरुण', सी. आर. मांझी, मोनालिसा चंकिजा को मंच पर आमंत्रित करते हुए वाल्टर भेंगरा 'तरुण' को सत्र की अध्यक्षता सौंपी। कहानी पाठ का आरंभ कुड़ुख भाषी कथाकार महादेव टोप्पो की कहानी 'भाषा' से हुई, मोनालिसा चंकिजा ने नागा कहानी का पाठ किया जिसका हिंदी अनुवाद 'महज आकार से अधिक' का पाठ मधुरा केरकेट्टा ने किया, वरिष्ठ संथाली कथाकार सी. आर. मांझी ने 'चरित्र में परिवर्तन' कहानी का पाठ किया, कुड़ुख कथाकार पीटर पॉल एक्का ने 'राजकुमारों के देश में' तथा मुंडारी कथाकार वाल्टर भेंगरा 'तरुण' ने 'संशय' कहानी का पाठ किया। पहले सत्र में आशीर्वचन देते हुए डॉ. निर्मल मिंज ने आठवीं अनुसूची में और भी आदिवासी भाषा को शामिल किये जाने की माँग को लेकर सभी साहित्यकारों से साहित्य संवर्धन के लिए आह्वान किया कि वे निरंतर लिखते रहें और विभिन्न विधाओं में लिखते रहें, साथ ही वर्तमान में युवाओं की भाषा, समाज और संस्कृति के प्रति जागरूकता के लिए खुशी ज़ाहिर की।

अगले सत्र की अध्यक्षता दमयंती सिंकू ने की। सोनी तिरिया ने हो भाषा में 'दमा दुमड', सुषमा असुर ने असुरी भाषा में 'आदिम आदिवासी', 'झरना की पुकार', 'उजड़ता जंगल छूटती मृदंग', ओली मिंज ने कुड़ुख भाषा में 'परती ज़मीन', 'बाज़ार', 'पत्ते ताश के', 'मुर्ग़ा लड़ाई का आँखों देखा हाल', कुड़ुख भाषी आलोक कुजूर ने 'संधि', 'जल-जंगल ज़मीन', 'चेयरमैन माओ', 'मुढ़ी का पाईला', 'अब बनेंगे बाँध आंसुओं के', 'बिरसा आबा', 'बदबू', और 'देहरी', दमयंती सिंकू ने 'ज़िंदगी', 'लको बोदरा', और 'सूरज' कविता का पाठ साथ ही संतोष कीड़ो ने अंग्रेज़ी में लिखे उपन्यास 'द इंटर्नल मिस्ट्री' का हिंदी अनुवाद 'शाश्वत रहस्य' के कुछ अंश का पाठ किया और सत्र के अंत में सुरेश जगन्नाथम ने दक्षिण भारत की तीन आदिवासी भाषाओं के गीतों पर आधारित स्वनिर्देशित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता उषा किरण आत्राम ने की। इस सत्र में सिद्धेश्वर सरदार ने भूमिज में 'हमारी जन्म-भूमि', सुशीला धुर्वे ने गोंडी भाषा में 'वह ख़ुश है', 'वह फ्रेंच सीख रहा है', सरिता बड़ाईक ने नागपुरी भाषा में 'जोहार', 'ना हार', 'मैं कौन हूँ', नीलम भेंगरा ने हो भाषा में 'वीर बिरसा मुंडा', 'डिंडा छोड़ी', अनुराधा मुंडू ने 'दिल के अरमान ख़ामोशियों में' और उषा किरण अतराम ने गोंडी भाषा की 'जारवा औरतें', 'नागवंश की पुकार' और 'मुझे छोड़ के ना जा रे पंछी' का कहानी पाठ किया। मीनाक्षी मुंडा ने प्रथम दिन का और अनु सुमन बड़ा ने दूसरे दिन की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में रमणिका गुप्ता ने समापन भाषण देते हुए कहा कि आदिवासी भाषाओं को पढ़ाने से ही इन भाषाओं का संरक्षण संभव है, उन्होंने आदिवासी युवा रचनाकारों से क़लम को तीर बनाने का आग्रह भी किया।

कार्यशाला

बहुभाषी कहानी अनुवाद कार्यशाला

19-21 मई 2016, माउंट आबू

साहित्य अकादेमी द्वारा बहुभाषी कहानी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन 19-21 मई 2016 को माउंट आबू में किया गया। कार्यक्रम में उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न भाषाओं से 16 प्रतिभागी सम्मिलित हुए जिनमें डोगरी, कश्मीरी, पंजाबी, राजस्थानी, हिंदी, संस्कृत के दो-दो प्रतिभागियों के अतिरिक्त उर्दू एवं राजस्थानी से एक एक प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

अनुवाद कार्यशाला के निदेशक डॉ. आनंद प्रकाश थे तथा प्रो. मुहम्मद ज़मॉं आज़ुर्दा, डॉ. अर्जुनदेव चारण, एवं श्री चंद्रभान ख़याल विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित हुए। सुश्री सुमन के. शर्मा (डोगरी), डॉ. ललित के. गुप्ता (डोगरी), इसहाक़ अहमद वानी, प्रो. जावेद इक़बाल भट्ट (कश्मीरी), प्रो. हिना नंदराजोग, डॉ. माधुरी चावला (पंजाबी), प्रो. कल्पना पुरोहित (राजस्थानी), प्रो. एम. असदुद्दीन (उर्दू), डॉ. पूरबी पंवार, डॉ. संजीव कौशल (हिंदी), डॉ. रणजीत बेहरा एवं डॉ. चंद्रभूषण झा (संस्कृत) अनुवादक के रूप में शामिल हुए।

नेपाली-संताली कहानी अनुवाद कार्यशाला

3-5 जून 2016, राँची, झारखंड

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 3-5 जून 2016 को राँची (झारखंड) में नेपाली-संताली कहानी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में हिंदी माध्यम से बीस नेपाली कहानियों का संताली में अनुवाद किया

गया। कार्यशाला के निदेशक अकादेमी में संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा थे, जबकि विशेषज्ञ के रूप में श्री शोभानाथ बेसरा एवं श्री भोगला सोरेन को आमंत्रित किया गया था। अनुवाद-कार्य में छह अनुवादकों सर्वश्री चंद्रमोहन किस्कू, मंगल मुर्मू, सालखान हांसदा, गणेश ठाकुर हांसदा, श्याम चरण टुडु और रवींद्रनाथ मुर्मू ने अपनी भागीदारी की। इस अवसर पर सभी विद्वानों का औपचारिक धन्यवाद करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने बताया कि इस तरह की कार्यशालाओं का उद्देश्य सक्षम अनुवादकों की खोज और प्रोत्साहन है। उन्होंने आग्रह किया कि संताली विद्वानों द्वारा छोटी-छोटी अनुवाद कार्यशालाएँ अपने स्तर पर भी आयोजित करनी चाहिए, ताकि नए अनुवादक सामने आ सकें और कार्यशालाओं में हुए विमर्श से वे स्वयं को परिमार्जित कर सकें।

कार्यशाला - भारत में भक्ति परंपराएँ

26-27 मई 2016, गुवाहाटी

'भारत में भक्ति परंपराएँ' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन गुवाहाटी में 26-27 मई 2016 को किया गया जिसमें शंकरदेव, ललद्येद, अक्क महादेवी, तुलसीदास एवं तुकाराम जैसे विद्वानों एवं अनुवादकों को एक साथ लाया गया। अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भक्ति परंपरा न सिर्फ़ भक्ति के संदर्भ में है बल्कि व्यक्ति की पदोन्नति के संबंध में देखा जाना चाहिए। उन्होंने भजगोविंदम पर राजा जी को उद्धृत किया। उन्होंने कहा कि वास्तविक भक्ति धर्म-संस्कृति और साहित्य के आधार पर विश्लेषित किया जाना चाहिए। सहापेदिया की कार्यकारी निदेशक डॉ. सुधा गोपाल कृष्णन ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि ईश्वर को संबोधित करने के लिए किस प्रकार कवियों ने संस्कृत के अतिरिक्त अपनी मातृभाषा को चुना है। उन्होंने के. सच्चिदानंदन का उपमहाद्वीप में भक्ति के लेख का उल्लेख किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता असमिया के प्रसिद्ध विद्वान श्री नगेन सइकिया ने किया और अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कैसे संस्कृत विद्वान और समाजसुधारक, कवि, पेंटर और दार्शनिक की भूमिका में ख़ुद कैसे संयुक्त रूप से ब्रह्मपुत्र घाटी और भारत के तीनों क्षेत्रों को अपने फॉर्म द्वारा एजकुट करने में सफल हुए। उन्होंने शंकरदेव के 'नामधर्म' पर ज़ोर दिया। प्रो. बिरेंद्रनाथ दत्ता ने चंदेल और मुस्लिमों के अनुयायियों के बीच अभिजात वर्ग और लोकप्रिय कला शैली के बीच दो तरफ़ा आदान-प्रदान की उपलब्धि को रेखांकित किया। श्री दत्ता ने शंकरदेव के बर्गित तथा सत्रीय नृत्य की शैलियों के योगदान का उल्लेख किया तथा कला आलोचना (ह्रस्व या अर्थव्यवस्था तथा संतुलन पर ज़ोर देते हुए) और शंकरदेव के कांपोज़िशंस के रिकॉर्डिंग को प्रस्तुत किया।

प्रसिद्ध विद्वान प्रदीप ज्योति महंता ने विषय पर चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि यद्यपि शंकरदेव को बार-बार इधर-उधर करने के लिए विवश किया गया, इसने आंदोलन के प्रसार में केवल मदद की। श्रवण और कीर्तन द्वारा लोकप्रिय भागीदारी के विस्तार में सहायता प्रदान की, और जनसाधारण की भाषा ब्रज बोली को अंगीकार किया। डॉ. महंत ने स्पष्ट किया कि शंकरदेव की भक्ति अभिव्यक्ति मोक्ष की ओर निर्देशित नहीं करती है। प्रतिभागियों ने निर्गुण एवं सगुण भक्ति के संबंधों की चर्चा की।

हिंदुओं और मुसलमानों में समान रूप से प्रतिष्ठित मौखिक परंपरा की सूफ़ी कवयित्री ललद्येद पर सत्र का आरंभ हुआ। डॉ. जवाहर लाल भट्ट ने कहा कि किस प्रकार ललद्येद मानव जीवन के लिए अनमोल थी। डॉ. आर. के. भट्ट ने ललद्येद के मूर्ति पूजन की अस्वीकृति का उल्लेख किया। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि ललद्येद एक भक्ति कवि से अधिक एक फ़क़ीर और आध्यात्मिक गुरु की तुलना में पुरोहित शोषण और असमानता के ख़िलाफ़ अधिक बात की। सत्र की अध्यक्षता डॉ. गुलाम नबी ख़याल ने की।

अक्क महादेवी पर टिप्पणी करते हुए डॉ. आशा देवी ने कहा कि पुरुष कवियों के लिए भक्ति एक समर्पण है जबकि महिलाओं को पहचान प्राप्त करने के लिए उसे त्याग करना पड़ता है। कविता इस जगह को संभव बनाती है तथा सामाजिक संस्था के विकल्प के रूप में स्थापित करती है। डॉ. बी. एन. सुमित्रा बाई ने कहा कि उनका विचार है कि व्यवस्था ने व्यक्ति को अक्क की भाँति जो कि स्वघोषित सुधारक नहीं हैं, नकार के विरुद्ध प्रतिरोध के लिए प्रेरित किया है। सत्र के अध्यक्ष प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश का कहना था कि कविता दिल तक सीधे पहुँचती है। उन्होंने सुमित्रा बाई का उल्लेख किया कि उनकी सादगी भ्रामक थी। वहाँ भी उनके यौन व्याख्यान का संदर्भ था तथा वह एक भैरवी थी तथा चेन्नामलिकार्जुन एक तांत्रिक गुरु थे। उन्होंने शब्दावली 'भक्ति' पर प्रश्न उठाए।

तुलसीदास पर व्याख्यान देने वालों में डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित एवं डॉ. हरिमोहन बुधोलिया थे। श्री दीक्षित ने विविध भाषाओं में तुलसीदास की उपलब्धियों को रेखांकित किया और निर्गुण सगुण के बीच मैत्री प्रभावों का उल्लेख किया।

संत तुकाराम पर आधारित सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. भालचंद्र नेमाडे ने कहा कि तुकाराम शब्दों का प्रयोग हथियार के रूप में करते थे। उन्होंने आगे कहा कि वर्करी आंदोलन विकेंद्रीकरण द्वारा आगे बढ़ा। इस सत्र के दूसरे वक्ता डॉ. दिलीप ढोंठगे का विचार था कि पूर्ववर्ती महानुभाव आंदोलन अपने द्वंद्वात्मक तर्क के कारण स्थिर नहीं रह सका।

खुले सत्र की चर्चा में यह सुझाव दिया गया कि भविष्य में कार्यशाला में प्रस्तुत किए गए आलेखों को प्रस्तुति के साथ प्रस्तुत किया जाए। इस सत्र की अध्यक्षता निर्मलकांति भट्टाचार्य ने की। अपने समापन वक्तव्य में प्रो. एच. डी. मधुकुमारस्वामी ने 'भक्ति की गतिशीलता' विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि भज (वितरित करने के लिए) का व्युत्पत्तिशास्त्र संबंध भक्ति से है जिसका संबंध भागीदारी और विचारों से होता है। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कविसंधि

मदन कुमार ओझा

8 मई 2016, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी द्वारा गोर्खा जन पुस्तकालय, खरसाङ (पश्चिम बंगाल) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कविसंधि' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 8 मई 2016 को पुस्तकालय सभागार में प्रतिष्ठित नेपाली कवि मदन ओझा के एकल काव्यपाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए श्री ओझा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर

श्री मदन कुमार ओझा

श्री ओझा ने अपनी रचनात्मक यात्रा की चर्चा करते हुए अपनी कविताओं का प्रभावी पाठ किया। उन्होंने 'असीम साकार' तथा 'अनुरागी विनोद' शीर्षक दो लंबी कविताओं का पाठ भी किया। प्रबुद्ध श्रोताओं द्वारा उनकी कविताओं को बेहद पसंद किया गया, जिनमें भारतीय नेपाली समाज के सरोकारों और जनमानस को मुखर स्वर प्रदान किया गया था।

अदिटू मांडी

5 जून 2016, राँची

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा संताली के प्रतिष्ठित कवि श्री अदिटू मांडी के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन 5 जून 2016 को राँची (झारखंड) में किया गया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से विभूषित श्री मांडी हिंदी में भी कविताएँ लिखते हैं। इस अवसर पर उन्होंने अपना एकल कविता-पाठ किया। चूँकि वे रक्षा सेवा से जुड़े हैं, इसलिए उनकी कविताओं में देशभक्ति का जज़्बा विशेष रूप से हिलोरें लेता हुआ नज़र आया। उन्होंने संताली समाज, जनजीवन और उसके अनुभवों से जुड़ी हुई अपनी कविताएँ भी सुनाईं। संताली अस्मिता को उजागर करने वाली उनकी कविताएँ ख़ासतौर पर पसंद की गईं। कार्यक्रम में संताली साहित्य प्रेमियों की अच्छी उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने किया।

मृदुल दासगुप्त

13 जून 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा प्रसिद्ध बाङ्ला कवि मृदुलदास गुप्त के साथ

श्री मृदुल दासगुप्ता

'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन 13 जून 2016 को किया गया। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने अतिथि का स्वागत करते हुए श्री मृदुल दासगुप्त का परिचय प्रस्तुत किया। श्री दास गुप्त का पैतृक आवास बरिशल जनपद बांग्लादेश में है। उन्होंने कवि की काव्य कृतियों तथा 50 से अधिक पुरस्कारों का उल्लेख किया।

श्री दासगुप्त ने आत्म प्रशंसा एवं अपने काव्य जीवन की चर्चा करने से स्वयं को बचाते हुए अपने प्रसिद्ध काव्य-संग्रहों से काव्य पाठ किया। उन्होंने अपने बचपन के उन दिनों को याद किया जिसने उन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। 1971 में जब उन्होंने हायर सेकेंड्री परीक्षा उत्तीर्ण की, उस समय बंगाल का राजनीतिक परिदृश्य अशांत था। उन्होंने अपने काव्य-संग्रह 'जलपाय कयेर एसराज' से कुछ कविताओं का पाठ किया। उन्होंने अपनी कुछ अप्रकाशित रचनाओं का भी पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने भी कवि एवं उनकी रचनाओं के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

दिलीप दास

19 जून 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा स्टेट आर्काइव कॉन्फ्रेंस हॉल, भुवनेश्वर में 19 जून 2016 को 'कविसंधि' का आयोजन किया गया

श्री दिलीप दास

जिसके लिए प्रसिद्ध कवि दिलीप दास को आमंत्रित किया गया।

श्री दास ने अपने वक्तव्य में कहा कि एक लेखक ही समाज में परिवर्तन ला सकता है तथा क़लम की धार हमेशा से ज़्यादा तेज़ होती है। श्री दास ने साथी लेखकों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि जिस जगह से उनका संबंध है उस क्षेत्र का उन्हें स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। अपनी मातृभूमि का पर्याप्त ज्ञान हुए बिना न कोई अच्छा लेखक हो सकता है न ही अच्छा विधायक।

अपने बचपन के अनुभवों पर प्रकाश डालते हुए श्री दास ने कहा कि वह बचपन में बहुत शरारती थे और उनके माता-पिता बहुत चिंतित रहते थे। हालाँकि प्रकृति के प्रति प्रेम कविता के लिए उन्हें प्रेरित करती थी। उनका दाख़िला विज्ञान वर्ग में हुआ था, लेकिन उन्होंने मानविकी के लिए विज्ञान छोड़ दिया। वे अपने काव्यात्मक व्यक्तित्व को निखारने के लिए विश्वभारती, शांतिनिकेतन गए। उन्हें उस समय दुख हुआ जब ज्ञात हुआ कि वहाँ ओडिया साहित्य सीखने की कोई गुंजाइश नहीं है। श्री दास ने अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया।

ओडिया परामर्श मंडल के सदस्य बिजयानंद सिंह ने श्री दास का परिचय दिया तथा पितबास राउतरे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

समीर तांती

28 जून 2016, गुवाहाटी, असम

साहित्य अकादेमी और कॉटन कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में प्रसिद्ध असमिया कवि समीर तांती के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सोदू असम कवि सम्मेलन के अध्यक्ष अनीस उज़्ज़माँ, असमिया परामर्श मंडल के सदस्य श्री अतनु भट्टाचार्य, ऑल असम राइटर्स एंड आर्टिस्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. गणेश पेगू आदि भी उपस्थित थे। कॉटन कॉलेज नाबिन की अध्यक्ष प्रो. मंजू देवी पेगु ने अतिथियों का

कविता पाठ करते श्री समीर तांती

स्वागत करते हुए आमंत्रित कवि का परिचय प्रस्तुत किया। समीर तांती ने अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा करते हुए अपनी कविताओं का पाठ किया। श्री तांती ने बताया कि उनकी कविताओं के प्रेरणास्रोत उनके पिता थे। चाय बगानों के अपने पिता के संघर्ष और पीड़ा की यादें अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करने की प्रेरणा देती है। समीर तांती की कविता पाठ के बाद श्रोताओं द्वारा उनकी रचना एवं रचना प्रक्रिया संबंधी कुछ प्रश्न किए गए जिनके उत्तर श्री तांती ने बहुत सहजता से दिए।

जनजातीन कवि संधि (हो भाषा)

16 जुलाई 2016, बारीपदा (ओडिशा)

साहित्य अकादेमी ने उत्तर ओडिशा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 16 जुलाई 2016 को ओडिशा के बारीपदा विश्वविद्यालय के ट्राइबल स्टडीज़ सेंट्रल हॉल में जनजातीय कवि संधि का आयोजन किया।

इस संगोष्ठी का उद्घाटन उत्तर ओडिशा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रफुल्ल कुमार मिश्र द्वारा किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में जनजातीय भाषाओं पर केंद्रित कार्यक्रम आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उस भाषा का नाश हो जाएगा यदि उस भाषा के लोगों द्वारा नहीं बोला जाएगा। उन्होंने हिब्रू भाषा का उदाहरण दिया कि कैसे यह एक विशिष्ट भाषा बनी। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत किया और अकादेमी के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने अकादेमी द्वारा जनजातीय भाषाओं के उत्थान के लिए अकादेमी द्वारा उठाए गए क़दमों से भी अवगत कराया। संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने अपने बीज-वक्तव्य में हो भाषा एवं साहित्य का परिचय दिया। उन्होंने सूचित किया कि अकादेमी ने अनेक जनजातीय सम्मेलनों में कवियों/रचनाकारों को सम्मिलित किया है, किंतु पहली बार हो भाषा पर विशेष 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। इस समारोह में दो विशिष्ट अतिथि थे- श्रीमती सुशीला तिरिया, भूतपूर्व सांसद (राज्य सभा) और वरिष्ठ पत्रकार श्री विजय कुमार अग्रवाल। श्रीमती तिरिया जो स्वयं हो समाज से संबद्ध हैं, ने कार्यक्रम के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं। श्री अग्रवाल जी की अनुपस्थिति में उनका संदेश श्री संतोष मोहंती द्वारा पढ़ा गया। साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान से सम्मानित श्री विनोद कुमार नायक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने हो भाषा और साहित्य पर विशेषकर मौखिक परंपराओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर दो कविता-पाठ सत्र भी हुए जिसकी अध्यक्षता श्री रवींद्र कुमार कलुंदिया और श्री इशोरे बारदरा ने की। श्री प्रफुल्ल चंद्र तियु, श्री दिवाकर साय, श्री बुधन सिंह हेस्सा, श्री कैरा सिंह बदिया, श्री शंकरु सिंह, श्री यामिनीकांत तिरिया, श्री राठी बलाय और श्री जयपाल सिंह नायक ने कविता पाठ किया। कवियों ने अपनी कविताएँ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़ीं। इस अवसर पर काफ़ी तादाद में श्रोता उपस्थित थे और उन्होंने कवियों की प्रशंसा की तथा इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन के लिए अकादेमी को धन्यवाद किया।

कथासंधि

फणींद्र कुमार देव चौधुरी

26 मई 2016, डिब्रूगढ़, असम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा सेंटर फ़ॉर स्टडीज़ इन जर्नलिज़्म एंड मास कम्युनिकेशन ऑफ़ डिब्रूगढ़ के सहयोग से कथासंधि कार्यक्रम का आयोजन डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रांगण में किया गया जिसमें प्रसिद्ध असमिया लेखक तथा प्रसिद्ध असमिया दैनिक 'नियमिया वार्ता' के संपादक डॉ. फणींद्र कुमार देव चौधुरी को आमंत्रित किया गया था।

श्री चौधुरी की 20 से अधिक पुस्तकें

कहानी प्रस्तुत करते श्री फणींद्र कुमार देव चौधुरी

प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्होंने अपने लेखकीय अनुभव को साझा करते हुए कहा कि उन्हें नदी के किनारे का वातावरण हमेशा प्रभावित करता रहा है। बचपन से ही मैं अपना अधिकतर समय नदी के किनारे जो कि मेरे घर के पास है, व्यतीत करता रहा हूँ। मैं सदैव नदियों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहा हूँ। उन्होंने आगे कहा कि मेरे लेखन के द्वारा समाज में कोई परिवर्तन आया है, मुझे नहीं मालूम। मैं कभी लेखक बनना नहीं चाहता था, मैं केवल लिखने को प्रेम करता हूँ और मैं अपने दुख को कम करने के लिए लिखता हूँ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. अलक कुमार नरगोहाईं ने की। उन्होंने पत्रकारिता एवं साहित्य के बारे में चर्चा की। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कर्बी डेका हजारिका ने अकादेमी के कार्यक्रम कथासंधि की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा डॉ. देव चौधुरी का परिचय दिया।

बानी बसु

31 मई 2016, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा लब्धप्रतिष्ठ कथाकार बानी बसु के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन 31 मई 2016 को किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री गोपाल च. बर्मन ने श्रीमती बसु का स्वागत करते हुए उनका परिचय प्रस्तुत किया। श्रीमती बानी बसु ने अपने लेखकीय जीवन को श्रोताओं के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कहानी लेखन से अपना साहित्यिक जीवन उन्होंने आरंभ किया और इस विधा में अपनी अभिव्यक्ति को सहज जाना, तथा समय के अनुसार उपन्यास लेखन की तरफ़ उनका झुकाव नहीं हुआ। परंतु बाङ्ला मासिक 'देश' के तत्कालीन संपादक श्री सागरमय घोष ने एक बार उपन्यास लेखन के लिए आग्रह किया। उस समय तक उन्होंने एक कहानीकार के रूप में स्वयं को स्थापित कर लिया था। इस प्रकार वे उपन्यास लेखन की ओर उन्मुख हुईं। तब उनका प्रथम उपन्यास 'जन्मभूमि मातृभूमि' प्रकाशित हुआ। उन्होंने उन घटनाओं का वर्णन किया जिन्होंने उपन्यास लेखन के लिए उन्हें प्रेरित किया। तत्पश्चात् उनके उपन्यास नियमित रूप से 'देश' में प्रकाशित होने लगे। उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ 'स्वेत पथरेर थाला', 'एकुशे पा' (इक्कीस क़दम), 'मैत्रे जातक', 'गांधर्वी', 'पंचम पुरुष' तथा 'अस्तम गर्भ' है। उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित कई अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। एक प्रतिष्ठित कथाकार के अतिरिक्त उनकी पहचान एक अध्यापिका, एक निबंधकार, आलोचक, कवि और अनुवादक के रूप में भी है। बानी बसु की साहित्यिक उपलब्धियों में सत्रह उपन्यास, 6 पुस्तकों के अतिरिक्त कहानियों के कई संग्रह शामिल हैं। उन्होंने श्रोताओं के समक्ष कई यादगार घटनाओं को साझा किया और श्रोताओं ने भी इस चर्चा में भाग लिया। अकादेमी के सहायक संपादक गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

रबी स्वाईं

18 जून 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रसिद्ध कथाकार रबी स्वाईं के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन 18 जून 2016 को भुवेनश्वर में किया गया। श्री स्वाईं ने अपने लेखन यात्रा तथा मानव संघर्ष के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि वह कभी महान लेखक नहीं थे। उन्होंने आगे कहा कि लेखन के लिए समाज से ही प्रेरणा मिलती है। उन्होंने आगे कहा कि कभी नहीं सोचा था कि वे एक लेखक के रूप में पहचाने जाएँगे। उन्होंने कहा कि कभी-कभी तथ्य कल्पना से भिन्न होते हैं। तत्पश्चात् श्री स्वाईं ने अपनी तीन कहानियों 'दुर्घटना', 'ग्लोब' तथा 'सबुजा झरना' का पाठ किया। अकादेमी के ओडिया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अतिथि और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि कहानी प्रेम प्रसंग की तरह होता है जबकि उपन्यास विवाह की तरह। परामर्श मंडल के सदस्य श्री बनोज त्रिपाठी ने श्री रबी स्वाईं का परिचय प्रस्तुत किया जबकि अपर्णा मोहंती ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

कहानी पाठ करते श्री रबी स्वाईं

अस्मिता

12 मई 2016, श्रीनगर

12 मई 2016 को अपराह्न 3 बजे सेमिनार हॉल, जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर, एंड लैंग्वेजेज़, लाल मंडी, श्रीनगर में कश्मीरी भाषा के कवयित्रियों की साथ अस्मिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़मॉं आज़ुर्दा ने प्रतिभागियों का परिचय कराया तथा अस्मिता कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रो. आज़ुर्दा ने अकादेमी द्वारा कश्मीरी भाषा में किए जा रहे कार्यों का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में नसीम शेफ़ाई, फ़रीदा कौल, रूबिया जान, महफ़ूज़ा जान, मैमूना अख़्तर एवं शाहिदा शबनम ने अपनी कश्मीरी कविताओं का पाठ किया।

28 मई 2016, कलिम्पोङ

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कलिम्पोङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 28 मई 2016 को वर्शिप सेंटर, कलिम्पोङ में नेपाली लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्याक्रम का आयोजन किया गया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल की सदस्या प्रो. सुधा गुरुङ की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में श्रीमती भीमा राई तोलचा, श्रीमती मदना ओझा, श्रीमती कौशल्या मुखिया, श्रीमती सविता संकल्प और श्रीमती शीला लामा ने अपनी नेपाली कविताओं का पाठ किया। पठित कविताओं में पहाड़ों पर गुज़र-बसर कर रहे नेपाली समाज की कठिनाइयों, समस्याओं के चित्रण के साथ-साथ बदलते सामाजिक परिवेश ओर तज्जनित मानव मन की जटिलताओं की अभिव्यक्ति की गई थी। कार्यक्रम के आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम की संकल्पना पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा 'नवोदय योजना' के अंतर्गत प्रकाशित श्रीमती ललिता शर्मा के नेपाली कविता-संग्रह 'नउदाङ्गिएको सत्य' का विमोचन वरिष्ठ नेपाली लेखिका श्रीमती सानुमति लामा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन तथा अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन अध्ययन समिति के महासचिव श्री बी. बी. शर्मा द्वारा किया गया।

अस्मिता कार्यक्रम के प्रतिभागी

18 जुलाई 2016, बारीपदा, ओडिशा

साहित्य अकादेमी ने उत्तर ओडिशा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में यूनिवर्सिटी के ट्राइबल स्टडीज़ सेंट्रल हॉल में 18 जुलाई 2016 को संताली महिला साहित्यकारों के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी से पुरस्कृत लेखिका और विद्वान डॉ. दमयंती बेसरा ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत किया और अस्मिता कार्यक्रम की संकल्पना के बारे में बताया। श्रीमती सलिमा मरांडी, श्रीमती दलमा मुर्मू, श्रीमती सुमित्रा मुर्मू तथा सुश्री लक्ष्मी मणि मुर्मू ने कविताओं एवं कहानियों का पाठ किया जो दर्शकों द्वारा ख़ूब सराहा गया। इसमें संताल समाज एवं इसकी चुनौतियों का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया। डॉ. दमयंती बेसरा ने समाज के दूसरे क्षेत्र में कार्यरत अधिक से अधिक महिलाओं को साहित्य लेखन के लिए प्रोत्साहित करने का अनुरोध किया। अंत में साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बायें से : श्रीमती सुमित्रा मारा, सुश्री लक्ष्मी मणी मुर्मू एवं श्रीमती दलमा मुर्मू

विविध कार्यक्रम

मुलाक़ात

9 मई 2016, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा इरमोदम मियांगी अपुंबा खोरजी लुप (IMAKHOL), मणिपुर के सहयोग से 9 मई 2016 को कम्युनिटी हॉल, इंफ़ाल पूर्व में 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बेहारी सिंह तथा IMAKHOL के अध्यक्ष श्री केशो सिंह इरेङ्बा ने अध्यक्षता की। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए मणिपुरी तथा अन्य भाषाओं के साहित्य के विकास के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया। मुलाक़ात कार्यक्रम उन युवा रचनाकारों को एक मंच उपलब्ध कराने का माध्यम है जिसमें युवा रचनाकार सीधे अपनी रचनाओं द्वारा अपने पाठकों से रूबरू होते हैं।

अपने आरंभिक वक्तव्य में श्री एच. बिहारी सिंह ने 'मुलाक़ात' कार्यक्रम तथा अकादेमी की अन्य गतिविधियों के बारे में चर्चा की। कार्यक्रम में निर्मला राजकुमी, वाय नॅदिनी ने अपनी कविता पाठ, श्री वाहेङ्बम रोमन मैती ने अपनी कहानी एवं ख. सुनिता ने अपने उपन्यास के कुछ अंश पढ़कर सुनाए। श्रोताओं ने पढ़ी गई रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रियाएँ भी दीं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री केशो सिंह ने अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

व्यक्ति एवं कृति - पुलक बनर्जी

28 मई 2016, डिब्रूगढ़, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी के डॉ. भुपेन हज़ारिका

श्री पुलक बनर्जी

सेंटर फ़ॉर स्टडी ऑफ़ परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स के सहयोग से श्री पुलक बनर्जी के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन 28 मई 2016 को किया गया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कर्बी डेका हजारिका ने अपने स्वागत वक्तव्य में कार्यक्रम 'व्यक्ति एवं कृति' के महत्त्व को रेखांकित किया जिसके द्वारा जनसाधारण का समाज के गणमान्य व्यक्ति से अंतर्ण वार्तालाप का अवसर प्राप्त होता है। डॉ. प्राणजीत बोरा ने प्रसिद्ध गायिका पुलक बनर्जी का अतिथियों से परिचय कराया। श्री बनर्जी लेजेंड एवं असमिया संगीत के पुरोधा ने अपने रमणीय भाषण से दर्शकों का मन मोह लिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार साहित्य ने उनके जीवन को समृद्ध बनाया, उन्होंने अपने जीवन में शांति और ख़ुशी संगीत में पाई। उन्होंने पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के रूप में विभिन्न साहित्यिक कृतियों की सुखदायक भूमिका को स्वीकार किया। मधुर गायक ने अपने भाषण में संगीत एवं साहित्य को उद्धृत करते हुए दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

व्यक्ति एवं कृति - रामानंद बंद्योपाध्याय

17 जून 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा प्रसिद्ध कलाकार रामानंद बंद्योपाध्याय के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने श्री बंद्योपाध्याय का स्वागत करते हुए श्रोताओं से उनका परिचय कराया। श्री बंद्योपाध्याय ने अपने जीवन पर पुस्तकों के प्रभाव का वर्णन करते हुए कहा कि पुस्तकें उनके जीवन का अभिन्न अंग हैं और वे पुस्तकों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरे बचपन के दिनों में टैगोर के 'सहजपथ' तथा 'बर्म परिचय' ने मेरे जीवन पर गहरी छाप छोड़ी, विशेषतः नंदलाल बोस के चित्रण ने। अपने युवावस्था में वे अपने पैतृक घर की दीवारों को रेखाकृतियों द्वारा गंदा कर दिया करते थे। लेकिन उनकी इस शरारत के लिए कभी डाँटा नहीं गया बल्कि उनके माता-पिता ने उनकी कलात्मक कौशल को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। जब उनका दाख़िला शांतिनिकेतन में हुआ, वे नंदलाल बोस के प्रत्यक्ष शिष्य थे। वहाँ उन्हें रामकिंकर बैज, विनोद बिहारी तथा अन्य श्रेष्ठ कलाकारों से परिचित होने का मौक़ा मिला। कला भवन की शिक्षा व्यवस्था ने देश के अग्रणी कलाकारों की प्रतिभा को बढ़ाने में मदद की। एक पुस्तक का अध्ययन करते हुए उनका कलाकार मस्तिष्क अनायास कैनवास पर एक तसवीर का चित्रण होता है जो उस रचना की अभिव्यक्ति होती है।

अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के

श्री रामानंद बंद्योपाध्याय

संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने श्री रामानंद बंद्योपाध्याय की भारतीय कला और संस्कृति में विशाल योगदान की प्रशंसा की।

आविष्कार - नलिनी जोशी

10 मई 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 'आविष्कार' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत प्रख्यात शास्त्रीय गायिका और नृत्यांगना डॉ. नलिनी जोशी के गायन का कार्यक्रम 10 मई 2016 को साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

डॉ. नलिनी जोशी अपने साथियों के साथ शास्त्रीय गायन प्रस्तुत करती हुई

प्रारंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम की संकल्पना के बारे में बताते हुए डॉ. जोशी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

डॉ. जोशी ने 'माधव तोर कत करब बड़ाई' एवं 'कनक भूधर शिखर वासिनी' (विद्यापति), 'मैं तो साँवरे की रंग राची' एवं 'हरि तुम हरो जन की भीर' (मीरांबाई), 'प्रभुजी मेरे अवगुन चित न धरो' (सूरदास) तथा 'मन लागो मेरो यार फ़क़ीरी में' एवं 'बीत गए दिन भजन बिना रे' (कबीरदास) पदों की संगीतमय प्रस्तुति की। उनकी कुछ प्रस्तुतियों में सहगायिका के रूप में डॉ. प्रियंका जोशी ने उनका साथ दिया। हारमोनियम पर श्री आशिक कुमार और तबले पर श्री सुभाषकांति दास ने उनकी संगति दी। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आविष्कार - स्वप्न गुप्त एवं ताप्ती गुप्त रवींद्रनाथ : सुर ओ बानी

30 मई 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आविष्कार कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 30 मई 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया जिसमें टैगोर गीत के प्रसिद्ध कलाकार श्री स्वप्न गुप्त तथा रवींद्रनाथ ठाकुर के विशेषज्ञ एवं आलोचक ताप्ती गुप्त को आमंत्रित किया गया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए आमंत्रित विद्वानों का परिचय दिया। प्रो. ताप्ती गुप्त ने शीर्षक के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा गीत वीणा से उत्पन्न एक संगीत यंत्र है जिसकी सहायता से प्राचीन कवि गीत गायन या कविता पाठ करते थे। टैगोर के गीत सार्थक संदेशों का सौंदर्यशास्त्र हैं जो गीत और कविता का आदर्श सम्मिश्रण है। उन्होंने टैगोर के गीतों को सार्वभौमिक कहा तथा यह भी कहा कि एक गायक को भी इसे अपनी प्रस्तुति के द्वारा सार्वभौमिक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। टैगोर का प्रथम गीत स्वप्न गुप्त द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रो. ताप्ती गुप्त ने गीत की व्याख्या करते हुए इसकी तुलना मिल्टन के 'पैराडाइज़ लॉस्ट' से की। उन्होंने आगे कहा कि धर्म आत्मा की अभिव्यक्ति में मदद करता है। उन्होंने कहा कि टैगोर के कई गीतों में प्रकाश एवं अंधकार के महत्त्व को देखा जा सकता है। प्रो. गुप्त ने कहा कि टैगोर अपने गीतों में किसी भी पौराणिक

बायें से : श्रीमती ताप्ती गुप्त एवं श्री स्वप्न गुप्त

पृष्ठभूमि की व्याख्या नहीं कर रहे होते हैं तथा उनका प्रत्येक गीत एक रत्न है और गीत, राग और ताल का एक संतुलित सम्मिश्रण है।

मेरे झरोखे से

17 जून 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध कहानीकार जयंती रथ को बनज देवी पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। श्रीमती रथ ने कहा कि बनज देवी एक कहानीकार एवं कवयित्री के रूप में समान रूप से सफल थीं।

श्रीमती जयंती रथ ने आधुनिक ओडिया साहित्य की सबसे उत्कृष्ट समझदार महिला लेखिका बनज देवी का स्वागत किया। बनज देवी ने अपने वक्तव्य में अपनी उपलब्धियों का सारा श्रेय अपने माता-पिता तथा अपने परिवार के सदस्यों को दिया। उन्होंने कहा कि इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि समाज और मीडिया में महिला सहनशीलता की चर्चा की जाती है। जीवन एवं प्रकृति की जिज्ञासा ने हमेशा उनके लेखन को प्रभावित किया है। उन्होंने आगे कहा कि श्रमिकों का दुख, दंगा पीड़ितों और आतंकवाद, शादी और तलाक़, सामाजिक विसंगतियाँ उनके लेखन के कुछ विशेष

बायें से : पितबस राउतरे, जयंती रथ, गौरहरि दास एवं बनाज देवी

विषयवस्तु हैं। वह सपने और विश्वास के साथ अपनी यात्रा की तरफ़ बढ़ रही हैं।

अकादेमी के ओडिया परामर्श मंडल के सदस्य श्री पितबास राउतरे ने स्वागत किया तथा बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लोक : विविध स्वर

5 जून 2016, राँची

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन 5 जून 2016 को राँची (झारखंड) में आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री रमेश मरांडी के नेतृत्व में बोकारो से पधारे कलाकारों ने बाहा, सोहराय, लाग्ने और डोंग नामक पारंपरिक संताली लोकगीतों और नृत्यों की प्रस्तुति की। प्रस्तुति के पूर्व उनके द्वारा इन परंपराओं का संक्षिप्त परिचय भी प्रस्तुत किया गया। चूँकि संताल नृत्य प्रस्तुतियों में सामाजिक भागीदारी प्रमुखता से होती है। इसलिए कार्यक्रम के अंत में कलाकारों के साथ उपस्थित जनसमुदाय ने भी अपनी भागीदारी दर्ज कराई। कार्यक्रम का संचालन और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने किया।

लोक कार्यक्रम का एक दृश्य

मई-अगस्त में संपन्न साहित्यिक कार्यक्रमों की सूचि

मई 2016		
1 मई 2016	साहिबगंज, झारखंड	संताली लेखक सम्मिलन का आयोजन।
1 मई 2016	साहिबगंज, झारखंड	प्रसिद्ध संताली लेखक श्री ठाकुर प्रसाद मुर्मू के साथ 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम जिसमें उन्होंने प्रख्यात संताली लेखक श्री सूर्यानंद हेंब्रम के जीवन एवं कृति पर अपना भाषण दिया।
7-8 मई 2016	हैदराबाद	तिलंगाना उर्दू अकादमी के सहयोग से दो-दिवसीय राजेंद्र सिंह बेदी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
8 मई 2016	कुरस्याँग, प.बंगाल	गोरखा जन पुस्तकालय, कुरस्याँग के सहयोग से 'भारतीय नेपाली गज़ल' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
8 मई 2016	कुरस्याँग, प.बंगाल	गोरखा जन पुस्तकालय, कुरस्याँग के सहयोग से नेपाली के विख्यात कवि श्री मदन कुमार ओझा के साथ 'कवि-सँधि' कार्यक्रम का आयोजन
8 मई 2016	कुरस्याँग, प.बंगाल	गोरखा जन पुस्तकालय, कुरस्याँग के सहयोग से नेपाली के प्रमुख कवियों के साथ 'नेपाली गज़ल पाठ' का आयोजन।
9 मई 2016	नई दिल्ली	'टैगोर और गाँधी : दुविधाएँ, संवाद, मतभेद' शीर्षक परिसंवाद का आयोजन।
9 मई 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	इरमदम मियामगी अपुंबा खोरजेई लप, अवाँग पोटसंगबम के सहयोग से मणिपुरी के युवा लेखकों के साथ 'मुलाकात' कार्यक्रम का आयोजन
10 मई 2016	नई दिल्ली	डॉ. नलिनी जोशी, प्रसिद्ध गायिका के साथ 'अविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन।
10 मई 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	मलेम अईकोल के सहयोग से 'मणिपुरी संस्कृति एवं साहित्य में मिथक' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
11 मई 2016	चुराचंदपुर, मणिपुर	नॉर्थ इस्ट सेंटर फ़ॉर ओरल लिट्रेचर के सहयोग से 'ह्मार, पइते, टँखुल और थोदोई कुकी भाषाओं के उत्थान में जनजाति साहित्य का योगदान' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
11 मई 2016	नई दिल्ली	हिंदी के युवा लेखकों के साथ 'मुलाकात' कार्यक्रम का आयोजन।
12 मई 2016	श्रीनगर	कश्मीरी लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
13 मई 2016	कालीकट, केरल	एन.वी. कृष्ण वरियर स्मारक ट्रस्ट, कालीकट के सहयोग से 'एन.वी. कृष्ण वरियर तथा भारतीय कविता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
13 मई 2016	श्रीनगर	कश्मीरी भाषा के कवियों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
13 मई 2016	बांसवारा, राजस्थान	राजस्थानी की प्रमुख लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
14-15 मई 2016	श्रीनगर	'तुलनात्मक साहित्य' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन।
14-15 मई 2016	उदयपुर, राजस्थान	'राजस्थानी मौखिक साहित्य' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन।
18-19 मई 2016	मुंबई	'उत्तर-पूर्व एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
19 मई 2016	बेंगळूरु	'प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति : जीवन एवं दृष्टि' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
19-21 मई 2016	माउंट आबू, राज.	'बहुभाषी अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
21 मई 2016	पुरी, ओडिशा	'चिल्का एवं कोणार्क' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।

21 मई 2016	क्योंझार, ओडिशा	संताली के प्रमुख लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
22-23 मई 2016	खुर्दा, ओडिशा	पाइका विरोध के 200वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 'विरोध और ओडिया साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
24-25 मई 2016	आगरा	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से 'डॉ. नागेंद्र जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन।
25 मई 2016	आगरा	हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री लीलाधर जगुड़ी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
25 मई 2016	नई दिल्ली	'बहुभाषी कहानी पाठ' कार्यक्रम का आयोजन।
26 मई 2016	नूनमती, गुवाहाटी	असम जातीया विद्यालय के सहयोग से असमिया के विख्यात लेखक डॉ. नागेन साइकिया के साथ 'आलोचक के साथ एक शाम' कार्यक्रम का आयोजन।
26-27 मई 2016	गुवाहाटी	सहापेडिया के सहयोग से 'भारत में भक्ति परंपरा' विषयक कार्यशाला का आयोजन।
27-28 मई 2016	कलिंपोङ, प.बंगाल	नेपाली साहित्य अध्ययन समिति के सहयोग से 'पारस्मणि प्रधान के जीवन एवं कृति' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
27 मई 2016	डिब्रूगढ़, असम	असमिया के प्रतिष्ठित लेखक डॉ. फनेंद्र कुमार देवचौधुरी के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
27 मई 2016	कमिंपोङ, पं.बंगाल	नेपाली साहित्य अध्ययन समिति के सहयोग से नेपाली के प्रतिष्ठित लेखक डॉ. नर बहादुर दहाल के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
28 मई 2016	डिब्रूगढ़, असम	असमिया के प्रमुख गायक सुश्री पुलक बनर्जी के साथ 'व्यक्ति और कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
28 मई 2016	त्रिवेंद्रम, केरल	वाईएमसीए के सहयोग से मलयाळम् लेखकों के साथ 'आमने सामने' शीर्षक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
28 मई 2016	कलिंपोङ, प.बंगाल	नेपाली साहित्य अध्ययन समिति के सहयोग से नेपाली की प्रमुख लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
28-29 मई 2016	अगरतला, त्रिपुरा	संस्कृति विभाग, भारत सरकार के सहयोग से 'अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
30 मई 2016	कोलकाता	स्वप्न गुप्ता (प्रसिद्ध गायक) एवं तपति गुप्ता (प्रमुख विद्वान) के साथ 'रविंद्रनाथ टैगोर : सुर एवं वाणि' विषयक 'अविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन।
31 मई 2016	कोलकाता	बाङ्ला कथाकार सुश्री बानी बसु के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
जून 2016		
3-5 जून 2016	राँची, झारखंड	'नेपाली-संताली कहानी अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
4 जून 2016	बेंगळूरु	ओ.एन.वी. कुरुप का लेखन विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'ई पुरातना किन्नारी' पुस्तक का विमोचन तथा ओ.एन.वी. कुरुप पर अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन।
4 जून 2016	नई दिल्ली	साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
5 जून 2016	देहरादून, उत्तराखंड	दून विश्वविद्यालय के सहयोग से 'उत्तर भारतीय भाषाओं में प्रकृति एवं साहित्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
5 जून 2016	राँची, झारखंड	संताली के प्रमुख लेखक श्री बादल हेंब्रम के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।

5 जून 2016	राँची, झारखंड	संताली के प्रमुख कवि श्री अदित्तो माँडी के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
5 जून 2016	राँची, झारखंड	'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें रमेश मरांडी ग्रूप द्वारा बाहा, लग्ने, डाँग एवं सोहरे गीत एवं नृत्य की प्रस्तुति।
7 जून 2016	नई दिल्ली	'सामाजिक परिवर्तन के लिए साहित्य : पाठ एवं विमर्श' विषयक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
11-12 जून 2016	बेंगळूरु	'उत्तर-पूर्व एवं दक्षिणी साहित्य उत्सव' का आयोजन।
13 जून 2016	नई दिल्ली	विभिन्न भारतीय भाषाओं की लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
13 जून 2016	कोलकाता	बाङ्ला के प्रमुख कवि श्री मृदुल दासगुप्ता के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
17 जून 2016	कोलकाता	प्रमुख कलाकार श्री रामानंद बंद्योपाध्याय के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
17 जून 2016	भुवनेश्वर	'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें ओडिया के प्रमुख लेखक श्री जयंती रथ ने ओडिया के विख्यात लेखक डॉ. बनज देवी पर अपने विचार व्यक्त किए।
18 जून 2016	भुवनेश्वर	ओडिया के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार डॉ. रबी स्वायन के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
18 जून 2016	भुवनेश्वर	ओडिया के विख्यात कवि डॉ. दिलीप दास के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
18 जून 2016	गुवाहाटी	आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के सहयोग से 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें असमिया की प्रमुख लेखिका सुश्री बीबी देवी बोबरुआ ने असमिया के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. लखया हीरा दास के जीवन एवं कृति पर अपने विचार व्यक्त किए।
18 जून 2016	कोकराझार, असम	'मौखिक काव्य, प्रदर्शन एवं सौंदर्यशास्त्र' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
19 जून 2016	उज्जैन, म.प्र.	हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कवि डॉ. चंद्रकांत देवताले के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
19 जून 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	अशंगबा कम्यूनिकेशन के सहयोग से 'फ़िल्म एवं साहित्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
19-20 जून 2016	बताद, असम	बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'बोडो लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
20 जून 2016	उज्जैन, म.प्र.	विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के सहयोग से 'शिव मंगल सिंह सुमन' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
20 जून 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	हुइयेन लनपाव के सहयोग से 'मणिपुरी भाषा के विकास में समाचार पत्रों की भूमिका' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
21 जून 2016		योग दिवस के अवसर पर योग शिविर-सह व्याख्यान का अकादेमी के मुख्य कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजन।
21 जून 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	नहरोल साहित्य प्रेमी समिति के सहयोग से 'च. कलाचंद सिंह शास्त्री' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
22 जून 2016	बेंगळूरु	ओडिया के लब्धप्रतिष्ठ लेखक एवं महत्तर सदस्य श्री रमाकांत रथ के साथ पारस्परिक चर्चा का आयोजन। इस अवसर पर श्री रमाकांत रथ पर अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन।
24-26 जून 2016	श्रीनगर	कश्मीरी-पंजाबी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन।
25 जून 2016	बेंगळूरु	विख्यात इतिहासकार प्रो. एस. शेट्टर के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
25-26 जून 2016	बेंगळूरु	सुचित्रा सिनेमा एवं कल्चरल एकेडमी के सहयोग से 'कन्नड काव्यशास्त्र के पक्ष' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।

25-26 जून 2016	अहमदाबाद	'सिंधी कवियों के साथ वार्तालाप' कार्यक्रम का आयोजन।
26 जून 2016	सिद्दपुर, कर्नाटक	प्रयोग लिट्रेरी एंड कल्चरल एसोसिएशन के सहयोग से 'साहित्य मंच : कवि समय' कार्यक्रम का आयोजन।
26 जून 2016	जोरहाट, असम	असम साईंस राइटर्स एसोसिएशन के सहयोग से 'असमिया विज्ञान एवं साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
27 जून 2016	श्रीनगर	'कश्मीरी-पंजाबी लघुकथा' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
28 जून 2016	नई दिल्ली	मराठी एवं हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री दयानेश्वर मुले के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
28 जून 2016	कोडुवेली, केरल	सी.एच.एम.के.एम. गवर्नमेंट कॉलेज के मलयाळम् विभाग के सहयोग से साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
28 जून 2016	गुवाहाटी	कॉटन कॉलेज के सहयोग से असमिया के विख्यात लेखक डॉ. समीर तांती के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
29 जून 2016	गुवाहाटी	असम साहित्य सभा के सहयोग से असमिया के युवा लेखकों के साथ 'मुलाकात' कार्यक्रम का आयोजन।
29-30 जून 2016	कोलकाता	बाङ्ला-नेपाली तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश कार्यशाला का आयोजन।
30 जून 2016	कुरनूल, केरल	के.वी.आर. गवर्नमेंट महिला कॉलेज के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
30 जून 2016	नई दिल्ली	विभिन्न भाषाओं की लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
30 जून 2016	बताद, असम	बोडो विभाग, उदलगिरी कॉलेज, असम के सहयोग से 'बिहुराम एवं उनकी साहित्यिक रचनाएँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
जुलाई 2016		
3 जुलाई 2016	चित्रदुर्ग, कर्नाटक	अभिरुचि साहित्य एवं सांस्कृतिक फ़ोरम, चित्रदुर्ग के सहयोग से 'बेलागिरी कृष्ण शास्त्री' जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
4 जुलाई 2016	नई दिल्ली	महिला अध्ययन केंद्र, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली के सहयोग से 'क्षमा देवी राव' विषयक परिसंवाद एवं अस्मिता कार्यक्रम का आयोजन।
4-5 जुलाई 2016	अगरतला, त्रिपुरा	अंग्रेज़ी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय के सहयोग से 'विलुप्तप्राय ध्वनियों की ख़ामोशी : भारत के उत्तर-पूर्व एवं दुनिया में विलुप्त होने के कगार पर साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
8 जुलाई 2016	वाराणसी, उ.प्र.	डॉ. शंभूनाथ सिंह शोध संस्थान, वाराणसी के सहयोग से 'शुंभुनाथ सिंह' जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
8 जुलाई 2016	नई दिल्ली	मराठी, सिंधी, हिंदी एवं बाङ्ला भाषा के लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
9-10 जुलाई 2016	गोवा	इंस्टीट्यूट मेंज़ेस ब्रगंजा, गोवा के सहयोग से 'उत्तर-पूर्व एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
14 जुलाई 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	अकादेमी के नार्थ-इस्ट सेंटर फ़ॉर ओरल लिट्रेचर द्वारा 'चार जनजातीय पारंपरिक गीतों के प्रकार और क़िस्में : इनपुई, नागा, कोयरेंग, अयमोल एवं कोम जनजातियों के संदर्भ में' विषयक साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन।
15-21 जुलाई 2016		साहित्य अकादेमी और नेपाल एकेडमी, काठमांडू, नेपाल के बीच समझौता ज्ञापन के तहत सात सदस्यीय नेपाली लेखकों के प्रतिनिधि मंडल का भारत दौरा।

16 जुलाई 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	अकादेमी के नार्थ-इस्ट सेंटर फ़ॉर ओरल लिट्रेचर द्वारा 'पारंपरिक गीतों के प्रकार और क़िस्में : कायेराव/थांगल, छोथे एवं खराम जनजातियों के संदर्भ में' विषयक साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन।
16 जुलाई 2016	नई दिल्ली	नेपाली लेखकों के प्रतिनिधिमंडल के साथ दिल्ली स्थित प्रमुख भारतीय लेखकों का पारस्परिक विचार-विमर्श कार्यक्रम का आयोजन।
16 जुलाई 2016	बारीपदा, ओडिशा	नॉर्थ ओडिशा यूनिवर्सिटी, बारीपदा के सहयोग से हो भाषा के लेखकों के साथ 'जनजातीय लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
17-18 जुलाई 2016	बारीपदा, ओडिशा	नॉर्थ ओडिशा यूनिवर्सिटी, बारीपदा के सहयोग से 'संताली भाषा का इतिहास' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
18 जुलाई 2016	बारीपदा, ओडिशा	नॉर्थ ओडिशा यूनिवर्सिटी, बारीपदा के सहयोग से संताली की प्रमुख लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
18 जुलाई 2016	त्रिवेंद्रम	वाइ.एम.सी.एस., त्रिवेंद्रम के सहयोग से 'आमने सामने' कार्यक्रम का आयोजन।
18 जुलाई 2016	नई दिल्ली	'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
19-20 जुलाई 2016	चेन्नै	'उत्तर-पूर्व एवं दक्षिणी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
21 जुलाई 2016	तिरुपति	तेलुगु विभाग, एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति के सहयोग से 'रायलसीमा की लेखिकाओं की कहानियों में महिलाओं की छवि' विषयक 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
21 जुलाई 2016	नई दिल्ली	अंग्रेज़ी, हिंदी एवं ओडिया के लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
22 जुलाई 2016	त्रिची	'एन. सुब्बु रेड्डीयार' जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
21-24 जुलाई 2016	गोवा	गोवा विश्वविद्यालय एवं गोवा कोंकणी एकेडमी के सहयोग से 'अनुभाष्य : कोंकणी और अंग्रेज़ी में समालोचनात्मक लेखन पारस्परिक अनुवाद की ओर' विषयक संगोष्ठी तथा तीन दिवसीय अनुवाद कार्यशाला का आयोजन।
23 जुलाई 2016	लखनऊ, उ.प्र.	'अली जव्वाद ज़ैदी' जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
23 जुलाई 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	आर.के. मनीसाना चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से 'जी. सुरचंद शर्मा : जीवन एवं कृत्य' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन।
23-24 जुलाई 2016	गोवा	कला एवं संस्कृति निदेशालय, गोवा सरकार के सहयोग से 'डाक्यूमंट्री फ़िल्म फेस्टिवल' का आयोजन।
24 जुलाई 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	मणिपुरी टीचर्स एसोसिएशन के सहयोग से 'एच. द्विजामनी शर्मा' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
24 जुलाई 2016	कुरुक्षेत्र, हरियाणा	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहयोग से 'हरियाणा की कविता-कथा' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
25 जुलाई 2016	नम्बोल, मणिपुर	मणिपुरी विभाग, कोंगखामपेट गवर्नमेंट कॉलेज के सहयोग से 'समकालीन मणिपुरी साहित्य में महिला उपन्यासकारों का स्थान' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
26 जुलाई 2016	करबी अंगलाँग, असम	बोडो साहित्य सभा के सहयोग से बोडो के विख्यात लेखक श्री अरबिंदो उज़िर के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
26 जुलाई 2016	करबी अंगलाँग, असम	बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन।
26 जुलाई 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	मणिपुरी विभाग, एन.जी. कॉलेज, इंफ़ाल के सहयोग से 'टी. थोयबी देवी : जीवन एवं कृति' विषय

		पर साहित्य मंच का आयोजन।
26 जुलाई 2016	जयपुर, राजस्थान	सेंटर फ़ॉर एडवांस स्टडी, दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय के सहयोग से राजस्थानी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. कलानाथ शास्त्री के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
26 जुलाई 2016	जयपुर	सेंटर फ़ॉर एडवांस स्टडी, दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय के सहयोग से 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें संस्कृत के प्रमुख लेखक डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास ने लब्धप्रतिष्ठ संस्कृत लेखक एवं विद्वान डॉ. बटुकनाथ शास्त्री पर अपना व्याख्यान दिया।
27 जुलाई 2016	नई दिल्ली	प्रख्यात गायक, संगीतकार एवं गीतकार एवं संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष, श्री शेखर सेन के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
27 जुलाई 2016	उदलगुरी, असम	'बोडो काव्य में कलात्मक अभिव्यक्ति' विषयक साहित्य मंच का आयोजन।
28 जुलाई 2016	लखीमपुर, असम	'बोडो भाषा में बोली रूपांतरण' विषयक परिसंवाद एवं 'बोडो कथाकार सम्मिलन' का आयोजन।
28 जुलाई 2016	मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार	हिंदी विभाग, बी.आर. अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय के सहयोग से 'जानकी वल्लभ शास्त्री' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
29 जुलाई 2016	मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार	हिंदी विभाग, बी.आर. अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय के सहयोग से 'नलिन विलोचन शास्त्री' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
29 जुलाई 2016	अनंतपुर, आंध्र प्रदेश	तेलुगु भाषा संरक्षण समिति, अनंतपुर के सहयोग से 'विद्वान विश्वन' जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
29 जुलाई 2016	अनंतपुर, आंध्र प्रदेश	तुलुगु लेखक, समालोचक एवं शोधक डॉ. कोलाकालुरी इनॉक के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
29 जुलाई 2016	सिरसी, कर्नाटक	एम.एम. कला एवं विज्ञान कॉलेज, सिरसी के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
29 जुलाई 2016	कोरापुट, ओडिशा	ओडिया भाषा के युवा लेखकों के साथ 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन।
29 जुलाई 2016	कोलकाता	अकादेमी प्रकाशन 'एंथालॉजी ऑफ़ बाङ्ला शार्ट स्टोरीज़' एवं अन्य पुस्तकों का विमोचन कार्यक्रम। इस अवसर पर 'महर्षि मनोरंजन भट्टाचार्य' शीर्षक साहित्य मंच का भी आयोजन।
29 जुलाई 2016	नई दिल्ली	अंग्रेज़ी, हिंदी, पंजाबी एवं उर्दू के प्रमुख लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' का आयोजन।
29 जुलाई 2016	नई दिल्ली	नॉन-कॉलेजिएट वुमन एजुकेशन बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के सहयोग से प्रमुख लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
30 जुलाई 2016	भुवनेश्वर	जानी मानी वैज्ञानिक एवं ओडिशी नृत्य की विद्वान डॉ. प्रियंबदा मोहंती हेजमदी के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
30-31 जुलाई 2016	शिलॉंग, मेघालय	अंग्रेज़ी एवं विदेशा भाषा विश्वविद्यालय, शिलॉंग के सहयोग से 'अखिल भारतीय कवि सम्मेलन' का आयोजन।
31 जुलाई 2016	भुवनेश्वर, ओडिशा	'सुरेंद्र मोहंती' पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
अगस्त 2016		
2 अगस्त 2016	नई दिल्ली	बाङ्ला की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका श्रीमती महाश्वेता देवी की याद में शोक सभा का आयोजन। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा निर्मित महाश्वेता देवी पर वृत्तचित्र भी प्रदर्शित की गई।
3 अगस्त 2016	नई दिल्ली	'भाषांतर भारत : भारत का पठन' विषय पर 'साहित्य मंच' का आयोजन।
4 अगस्त 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह का आयोजन जिसमें 24 भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ठ अनुवाद के लिए अनुवादकों को अलंकृत किया गया।

5 अगस्त 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	'अनुवादक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें पुरस्कृत अनुवादकों ने अपने अनुभव साझा किए।
5 अगस्त 2016	मन्नरगुडी, तमिलनाडु	सेंगामाला थ्यार एजुकेशन ट्रस्ट वुमन कॉलेज, मन्नारगुडी के सहयोग से 'महिला लेखन : दर्द एवं दृष्टि' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
5-6 अगस्त 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों/विद्वानों को आमंत्रित किया गया।
6 अगस्त 2016	कोलकाता	'महत्तर सदस्यता' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें बाङ्ला के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री निरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को साहित्य अकादेमी का सर्वश्रेष्ठ सम्मान 'महत्तर सदस्यता' से अलंकृत किया गया।
6 अगस्त 2016	त्रिची	कावेरी महिला कॉलेज के सहयोग से 'कविग्नार कलैवानन अप्पुलिंगम' शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
8 अगस्त 2016	नई दिल्ली	ओडिया की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका डॉ. यशोधरा मिश्रा के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
9 अगस्त 2016	चेन्नै	बाङ्ला की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका श्रीमती महाश्वेता देवी एवं लब्धप्रतिष्ठ तमिल लेखक एवं समाजसेवी श्री ज्ञानकूथन की याद में शोक सभा का आयोजन।
12 अगस्त 2016	नई दिल्ली	हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्री स्वयं प्रकाश के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन
13 अगस्त 2016	भुज, गुजरात	कच्छ विश्वविद्यालय, भुज के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
14 अगस्त 2016	पलक्काड, केरल	मुंदुर कृष्णन कुट्टी स्मारक ट्रस्ट, पलक्कड के सहयोग से 'केरल साहित्य के मानचित्र पर पलक्कड की अपनी पहचान' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
16 अगस्त 2016	नई दिल्ली	हिंदी के मशहूर नाटककार श्री दया प्रकाश सिन्हा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
17 अगस्त 2016	कालीकट, केरल	मलयाळम् विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय के सहयोग से 'मलयाळम् में दलित लेखन' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
17-18 अगस्त 2016	कोलकाता	जादोपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'कवि गोष्ठी' कार्यक्रम का आयोजन।
19 अगस्त 2016	शिमला	संत बेडे कॉलेज, शिमला के सहयोग से 'हिमालय की गूँज : स्थानीय एवं वैश्विक धारणाएँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
19 अगस्त 2016	नांदेड, महाराष्ट्र	भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अभ्यास संकुल स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड के सहयोग से 'श्रम की संस्कृति एवं पिछले 25 वर्षों का मराठी साहित्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
20 अगस्त 2016	काँचीपुर, मणिपुर	नृत्य एवं संगीत विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्य, अनुवाद एवं नृत्य व संगीत की शिक्षा के लिए अंतः विषय दृष्टिकोण' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
20 अगस्त 2016	आदीपुर, गुजरात	सिंधी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. नामदेव ताराचंदानी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
20-21 अगस्त 2016	लखनऊ	साहित्य अकादेमी और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अमृतलाल नागर' जन्मशतवार्षिकी समारोह का आयोजन। इस अवसर पर पुस्तक विमोचन एवं चित्र प्रदर्शनी का भी आयोजन। कार्यक्रम के पश्चात् संध्या में 'युगावतार' एवं 'नागर कथा' का मंचन।
20-21 अगस्त 2016	बताद, असम	बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'चित्तरंजन मुछारी के उपन्यासों में बोडो सामाजिक परिदृश्य का प्रतिबिंब' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
21 अगस्त 2016	विशाखापत्तनम	मोज़ैक लिट्रेरी एसोसिएशन के सहयोग से 'तेलुगु साहित्य का अनुवाद : प्रवृत्तियाँ एवं तकनीक

		(अनुवाद अनुभव)' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
21 अगस्त 2016	विशाखापत्तनम	मोज़ैक लिट्रेरी एसोसिएशन के सहयोग से तेलुगु के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री चिंताकिंदी श्रीनिवास राव के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
21 अगस्त 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	सांस्कृतिक मंच, मणिपुर के सहयोग से 'मणिपुरी साहित्य में अनुवाद का महत्त्व' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन।
21 अगस्त 2016	अहमदाबाद	सिंधी के विख्यात लेखक श्री हुंदराज बालवानी के साथ 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें उन्होंने लब्धप्रतिष्ठ सिंधी लेखक श्री जेठो लालवाणी के व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व पर अपना व्याख्यान दिया।
21 अगस्त 2016	अहमदाबाद	प्रख्यात चित्रकार श्री भँवर पँवार के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
21-25 अगस्त 2016		भारत-चीन सांस्कृतिक विनिमय के तहत पाँच सदस्यीय चीनी लेखकों के दल का भारत दौरा।
21 अगस्त 2016	नई दिल्ली	'चीनी-भारतीय साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
21 अगस्त 2016	कडप्पा, आंध्र प्रदेश	गवर्नमेंट कॉलेज फ़ॉर मेन के सहयोग से 'साहित्य मंच : रायलसीमा लघुकथा - सामाजिक जागरुकता' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
21 अगस्त 2016	काँचीपुर, मणिपुर	मणिपुरी विभाग, मणिपुरी विश्वविद्यालय के सहयोग से 'समाकालीन मणिपुरी उपन्यास : एक महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
23 अगस्त 2016	इंफ़ाल	लेइमारोल खोरजेकोल के सहयोग से 'पंडित अटोमबापु शर्मा : जीवन एवं कृत्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
23 अगस्त 2016	इंफ़ाल	मणिपुर सांस्कृतिक विश्वविद्यालय के सहयोग से मणिपुरी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. रतनकुमार सिंह के साथ 'आलोचक के साथ शाम' कार्यक्रम का आयोजन।
23 अगस्त 2016	मुंबई	चीनी लेखक मंडल का मुंबई दौरा, इस अवसर पर स्थानीय लेखकों के साथ साहित्यिक विमर्श कार्यक्रम का आयोजन।
24 अगस्त 2016	नई दिल्ली	पंजाबी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से पंजाबी के विख्यात लेखक डॉ. सुखजीत के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
24-25 अगस्त 2016	अहमदाबाद	गुजरात साहित्य परिषद के सहयोग से 'उत्तर-पूर्व एवं पश्चिमी साहित्य सम्मिलन' का आयोजन।
26 अगस्त 2016	कोलकाता	'पर्यावरण एवं साहित्य' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन।
26 अगस्त 2016	बेंगळूरु	कन्नड के विख्यात उपन्यासकार श्री श्रीधर बनवासी के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
26 अगस्त 2016	बेंगळूरु	कन्नड विभाग, क्राइस्ट विश्वविद्यालय के सहयोग से 'कन्नड में अल्पसंख्यक साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
26 अगस्त 2016	चेन्नै	अकादेमी पुरस्कृत तमिळ कविता संग्रह का तेलुगु अनुवाद 'मा ऊरी नादी' का विमोचन समारोह का आयोजन।
26 अगस्त 2016	गुवाहाटी	बोडो विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के सहयोग से 'शैलीविज्ञान एवं बोडो उपन्यास' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
26-27 अगस्त 2016	चेन्नै	तेलुगु विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय के सहयोग से 'समाकालीन तेलुगु और तमिळ साहित्य - तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
27 अगस्त 2016	पुणे	दकन मुस्लिम इंस्टीट्यूट के सहयोग से 'तसव्वुफ़ और भक्ति की शेरी रिवायत' शीर्षक से परिसंवाद का आयोजन।

27 अगस्त 2016	कोकराझार, असम	बोडो विभाग, बोडोलैंड विश्वविद्यालय के सहयोग से 'भारतीय साहित्य का अभिनंदन एवं अनुवाद : साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संबंधों का एक पथ' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
27 अगस्त 2016	नालबारी	अंग्रेज़ी विभाग, बारभाग कॉलेज के सहयोग से 'असमिया साहित्य में उत्तर-आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
27-28 अगस्त 2016	राँची	रमणीका फ़ाउंडेशन एवं ऑल इंडिया लिट्रेरी फोरम के सहयोग से 'आदिवासी साहित्यिक जातरा' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
28 अगस्त 2016	गोवा	कोंकणी कला, साहित्य केंद्र, करचोरम के सहयोग से कोंकणी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. अशोक कामत के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
28 अगस्त 2016	गोवा	कोंकणी कला, साहित्य केंद्र, करचोरम के सहयोग से साहित्य मंच का आयोजन।
28 अगस्त 2016	वडोदरा	कँवर्रम कला केंद्र, वडोदरा के सहयोग से 'साहित्य मंच' का आयोजन।
28 अगस्त 2016	येल्लापुर, कर्नाटक	कन्नड साहित्य परिषद् के सहयोग से 'साहित्य मंच : कवि काव्य' का आयोजन।
28 अगस्त 2016	गुवाहाटी	अजित बरुआ अनुरागी समाज, गुवाहाटी के सहयोग से अंग्रेज़ी के विख्यात लेखक डॉ. जयंत महापात्रा के साथ 'कवि अनुवादक' कार्यक्रम का आयोजन। श्री अनुभव तुलासी ने असमिया में अनुवाद प्रस्तुत किया।
28 अगस्त 2016	राउरकेला, ओडिशा	प्रगति उत्कल संघ, राउरकेला के सहयोग से 'ओडिया साहित्य में शहरीकरण के प्रभाव' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
28 अगस्त 2016	वडोदरा	कँवर्रम कला केंद्र के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ सिंधी लेखक श्री श्रीचंद केसवाणी के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
29 अगस्त 2016	नई दिल्ली	साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं पंजाबी के वरिष्ठ लेखक डॉ. गुरदयाल सिंह के निधन पर शोक-सभा का आयोजन।
29 अगस्त 2016	विरमगम, गुजरात	देसाई चंदुलाल मनीलाल आर्ट्स एंड कमर्स कॉलेज के सहयोग से गुजराती के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
29 अगस्त 2016	संभलपुर, ओडिशा	संभलपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'समकालीन ओडिया कविता' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन।
29 अगस्त 2016	नगाँव, असम	असमिया के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री येशे डोरजी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
30 अगस्त 2016	नागरकोएल, तमिलनाडु	एस.टी. हिंदु कॉलेज के सहयोग से 'टी.पी. पेरुमल' शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन।
30 अगस्त 2016	तरनतारन, पंजाब	पंजाबी की प्रतिष्ठित लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
30 अगस्त 2016	हैदराबाद	तेलुगु विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज फ़ॉर वुमन के सहयोग से 'तिलंगाना महिला लेखन' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
30 अगस्त 2016	हैदराबाद	तेलुगु विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज फ़ॉर वुमन के सहयोग से तेलुगु के वरिष्ठ कवि डॉ. अम्मांगी वेणुगोपाल के साथ 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन।
30 अगस्त 2016	सावली, गुजरात	श्री बी.के. पटेल आर्ट्स एंड एल.एम. पटेल कॉमर्स कॉलेज के सहयोग से गुजराती के प्रमुख लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
31 अगस्त 2016	कोलकाता	बाङ्ला के विख्यात कवियों के साथ 'कवि गोष्ठी' का आयोजन।
31 अगस्त 2016	नई दिल्ली	भारतीय प्रकाशन महासंघ के सहयोग से दिल्ली पुस्तक मेला के दौरान 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।

नए प्रकाशन

असमिया

असमिया शिशु साहित्य निर्बाचितो चुटी गल्पो
सं. एवं सं. सांतनु तामुली
पृ. 336, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-5019-2

गणदेवता
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय, अनु. सुरेन तालुकदार
पृ. 288, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-3110-8 (पुनर्मुद्रण)

प्रतिश्रुति
ले. काशी बहादुर श्रेष्ठ, अनु. पूर्ण कुमार सरमा
पृ. 80, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-5015-4

संजीबन (रूसी उपन्यास)
ले. लियो टॉल्सटाय, अनु. अनु बरुआ
पृ. 572, रु. 310/-
ISBN : 978-81-260-1279-4 (पुनर्मुद्रण)

विष्णु प्रसाद राभा (विनिबंध)
ले. इस्माईल हुसैन
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3197-9 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला

अचिंत्य कुमार सेनगुप्त (विनिबंध)
ले. रबिन पॉल
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2907-5 (पुनर्मुद्रण)

बनफूल (विनिबंध)
ले. विप्लव चक्रवर्ती
पृ. 76, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2117-8 (पुनर्मुद्रण)

बंगिया शब्दकोश (खंड-1 एवं 2)
ले. हरिचरण बंद्योपाध्याय
पृ. 2472, रु. 1000/-
ISBN : 978-81-260-2661-6 (पुनर्मुद्रण)

चायारेखा (अ.पु. अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अमिताभ घोष, अनु. मौसुमी बोस
पृ. 300, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-2217-5 (पुनर्मुद्रण)

ईश्वर चंद्र विद्यासागर (विनिबंध)
ले. हिरणमोय बंद्योपाध्याय
अनु. सुधीर कुमार चौधुरी
पृ. 78, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2125-3 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी गल्प संकलन
सं. एवं सं. भीष्म साहनी
अनु. सुबीमल बासक
पृ. 430, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-3103-0 (पुनर्मुद्रण)

कबिता चारजा (अ.पु. तमिळ उपन्यास)
विभिन्न लेखकों द्वारा रचित
पृ. 148, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-5020-8

पनबंदी रघु
ले. काशीनाथ सिंह, अनु. नानी सुर
पृ. 144, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-5033-8

मैथिली गल्प संकलन
सं. एवं सं. कामाख्या देवी,
अनु. गौरी सेन
पृ. 132, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-2910-5 (पुनर्मुद्रण)

राहुल सांकृत्यायन (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
अनु. स्नेहलता चटोपाध्याय
पृ. 68, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5025-3 (पुनर्मुद्रण)

श्री राधा (ओडिया कविता-संग्रह)
ले. रमाकांत रथ, अनु. कलिपाडा कोनार
पृ. 116, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-5027-7 (पुनर्मुद्रण)

बोडो

बाङ्ला गल्पो संकलन (खंड 1 एवं 2)
सं. एवं. सं. अनिल कुमार बोरो एवं इंदिरा बोरो
पृ. 476, रु. 280/-
ISBN : 978-81-260-5025-3

बाङ्ला गल्पो संकलन (खंड 4)
सं. एवं. सं. अनिल कुमार बोरो एवं स्वर्ण प्रभा चैनारी
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 528, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5026-0

डोगरी

भाऊ च दसख्त
ले. कैलाश वाजपेयी
अनु. पद्मा सचदेव
पृ. 112, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4952-3

बाणभट्ट की आत्म कथा
ले. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
अनु. ओम गोस्वामी
पृ. 256, रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-5044-3

डेहरा च अजबी उगडे न सारहे बूटे
ले. रस्किन बॉंड, अनु. निर्मल विनोद
पृ. 119, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-5040-6

इक चित्ता चाननी दी
ले. कर्तार सिंह दुग्गल, अनु. शशि पठानिया
पृ. 148, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5039-0

किशन स्मेलपुरी (रचना संचयन)
सं. नरसिंहदेव जमवाल
पृ. 248, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-4947-9

कोहरे च क़ैद रंग
ले. गोविंद मिश्र, अनु. उषा व्यास
पृ. 198, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4940-0

रोमल सिंह भदवाल (विनिबंध)
ले. अर्चना केसर
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5122-9

अंग्रेज़ी

23 हिंदी शॉर्ट स्टोरीज़
सं. जैनेंद्र कुमार
पृ. 224, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-0126-2 (पुनर्मुद्रण)

अ सर्टेन सेंस : पोएम्स बाय जिबनंदा दास
अनु. एवं संपा. सुकांत चौधुरी
पृ. 127, रु. 50/-
ISBN : 81-260-1515-2 (पुनर्मुद्रण)

अ वुमेन रोप
ले. भवानी प्रसाद मिश्र, अनु. अलका त्यागी
पृ. 130, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4999-8

अंथालोजी ऑफ़ बेंगाली शार्ट स्टोरीज़
सं. सुनील गंगोपाध्याय
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 519, रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-4254-8

बैक अगेन एंड अगेन
ले. राजम कृष्णन
अनु. आर. बालचंद्रन
पृ. 188, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4244-9

बिघर (कथा भारती श्रंखला)
ले. भालचंद्र नेमाडे
अनु. संतोष भूमकर
पृ. 254, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-2845-0

कंप्लीट वर्क्स ऑफ़ कालिदास (खंड-2)
अनु. चंद्र राजन
पृ. 398, रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-1484-2 (पुनर्मुद्रण)

गोरा
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. सुजीत मुखर्जी
पृ. 498, रु. 170/-
ISBN : 978-81-260-1801-7 (पुनर्मुद्रण)

हाऊ मच स्पेस डज़ ऐन इंडियन राइटर नीड?
(संवत्सर व्याख्यान - 27)
भालचंद्र नेमाडे
पृ. 20, रु. 30/-
ISBN : 81-260-4149-7 (पुनर्मुद्रण)

ह्यूमनिस्ट सोशल विज़न ऑफ़ ए 'जंगल पोएट'
(कन्नड कवि कुवेंपू की चयनित कविताओं का संकलन)
अनु. एन.एस. रघुनाथ
पृ. 176, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4852-2

इन द ह्युमन हार्ट (नवोदय श्रंखला के अधीन)
ले. शीमांता भट्टाचार्य
पृ. 42, रु. 65/-
ISBN : 978-81-260-4990-5

इंडियाज़ इंटेलेक्चुअल ट्रेडिशंस
(संगोष्ठी आलेख)
सं. राघावल्लभ त्रिपाठी
पृ. 244, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5047-5

इंसाइकलोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिट्रेचर (खंड 3)
(संशोधित संस्करण)
मुख्य संपादक - इंद्रनाथ चौधुरी
पृ. 3376, रु. 1000/-
ISBN : 978-81-260-4758-1

जीवन स्मृति
ले. सीतादेवी खंडिगा
अनु. पूरबी दास एवं रत्नमाला स्वाइं
पृ. 136, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4892-2

का. ना. सुब्रमण्यम
ले. धंजय प्रकाश
अनु. सुजाता विजय राघवन
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5010-9

लेटर्स फ्रॉम द विलेज (अ.पु. मणिपुरी कविता-संग्रह)
ले. रघु लेसंगथम
अनु. सलाम रूपचंद्र सिंह
पृ. 80, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-5155-7

लाइक मिस्ट थ्रू वैली
ले. एच.एस. शिव प्रकाश
पृ. 48, रु. 85/-
ISBN : 978-81-260-5155-7

मधुपुर बोहुदूर एंड अदर स्टोरीज़
ले. शीलभद्र, अनु. ज्योतिर्मोय प्रोधनी
पृ. 132, रु. 85/-
ISBN : 978-81-260-4065-0

नेशनल बेबलियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिट्रेचर सेकेंड सीरीज़ (1954-2000), खंड XI (अंक II) सिन्धी
सं. एम.के. जेटली
पृ. 290, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4759-8

न्यु धशांस (अ.पु. तमिळ उपन्यास)
ले. पोन्नीलन, अनु. एस. नागराजन
पृ. 936, रु. 555/-
ISBN : 978-81-260-4980-6

सबद (विश्व कविता का संग्रह)
विश्व कविता उत्सव दिनांक 21-24 मार्च 2014 में पढ़ी गई कविताओं का संकलन
सं. के. सच्चिदानंदन
पृ. 270, रु. 375/-
ISBN : 978-81-260-4745-1

शंकराचार्य (विनिबंध)
ले. एस. बी. रघुनाथाचार्य
पृ. 182, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1575-7

सुब्रमण्यम भारती खंड-1 (कविता-संग्रह)
सं. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 637, रु. 950/-
ISBN : 978-81-260-5008-6

द बीलेटेड स्प्रिंग (अ.पु. बाङ्ला उपन्यास)
ले. बिमल कार
अनु. नीता सेन समर्थ
पृ. 289, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-0664-1 (पुनर्मुद्रण)

द इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ़ रवींद्रनाथ टैगोर (खंड 1)
सं. सिसिर कुमार दास
पृ. 670, रु. 575/-
ISBN : 978-81-260-1295-4 (पुनर्मुद्रण)

द इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ़ रवींद्रनाथ टैगोर (खंड V)
सं. सिसिर कुमार दास
पृ. 812, रु. 650/-
ISBN : 978-81-260-5047-5 (पुनर्मुद्रण)

द हंट
ले. फनी मोहंती, अनु. जतींद्र मोहन मोहंती
पृ. 97, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4256-2

गुजराती

समय असमय (ओडिया कविता)
ले. ब्रजनाथ रथ, अनु. रेणुका सोनी
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4922-6

हिंदी

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
पृ. 98, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1658-8 (पुनर्मुद्रण)

बाबा फ़रीद (विनिबंध)
ले. बलवंत सिंह आनंद, अनु. जगदीश
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1582-5

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-1)
सं. कमलेश्वर
पृ. 392, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5049-9

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-2)
सं. कमलेश्वर
पृ. 498, रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5050-5

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-3)
सं. कमलेश्वर
पृ. 356, रु. 275/-
ISBN : 978-81-260-5051-2

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-4)
सं. कमलेश्वर
पृ. 370, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5052-9

ईसुरी (विनिबंध)
ले. अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'
पृ. 148, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5062-8

ग़ालिब (विनिबंध)
ले. एम. मुजीब, अनु. रमेश गौड़
पृ. 97, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0424-9 (पुनर्मुद्रण)

गाँधी मानुष
ले. शरत कुमार मोहंती, अनु. सुजाता शिवेन
पृ. 736, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4765-9

मैथिलीशरण गुप्त (विनिबंध)
ले. रेवती रमण
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-756-9 (पुनर्मुद्रण)

नलिन विलोचन शर्मा रचना-संचयन
सं. एवं सं. गोपेश्वर सिंह
पृ. 616, रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-5063-5

पाकिस्तानी कहानियाँ
सं. इंतज़ार हुसैन एवं आसिफ़ फ़र्रुख़ी
अनु. अब्दुल बिस्मिल्लाह
पृ. 312, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-1199-5 (पुनर्मुद्रण)

परम अबिचंदानी (विनिबंध)
सं. नामदेव ताराचंदानी
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4916-5

परमाणु बम की छाया में (जापानी कविता संग्रह)
अनु. हरजेंद्र चौधरी एवं मिकी युइशिरो
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5060-4

मोहन राकेश (विनिबंध)
ले. प्रतिभा अग्रवाल
पृ. 82, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2607-4 (पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. एवं अनु. प्रभाकर माचवे
पृ. 55, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2426-1 (पुनर्मुद्रण)

समकालीन हिंदी कविता
सं. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 267, रु. 115/-
ISBN : 978-81-260-2739-2

सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबंध)
ले. सुधा चौहान
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2737-8 (पुनर्मुद्रण)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (विनिबंध)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 95, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2736-1 (पुनर्मुद्रण)

श्री नारायणगुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. एच.बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-6061-1

श्री रणछोड़
ले. रमाकांत रथ, अनु. सुजाता शिवेन
पृ. 136, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5046-8

तौशाली की हंसो (उपन्यास)
ले. जसवंत सिंह कंवल
अनु. रंजीत कौर
पृ. 248, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5057-4

कन्नड

आलापने
ले. अब्दुल रहमान
अनु. तमिल सेलवी
पृ. 128, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4679-1

भविष्यतु कथेगलू
ले. राना नायर, अनु. एच. एस. मंजुनाथ
पृ. 296, रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-5153-3

कविते उदयसिदगे
ले. मेरिन माडर्न, अनु. लता गुत्ती
पृ. 128, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4679-1

कश्मीरी

अर्जन देव मजबूर (विनिबंध)
ले. प्रेमी रुमानी
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4964-6

सैयद मीरक शाह (विनिबंध)
ले. एहसान शालिमारी
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5085-7

कोंकणी

काल प्राच्यो घड़ी (अ.पु. पंजाबी कविता)
ले. वनीता, अनु. चंद्रिका पदगाँवकर
पृ. 156, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5125-0

मैथिली

मैथिली उपन्यासक विकास (संगोष्ठी आलेख)
सं. अशोक अविचल
पृ. 274, रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-5042-0

ओ समय (पार्ट-1)
ले. सुनील गंगोपाध्याय, अनु. ताराकांत झा
पृ. 448, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5041-3

हरयल अर्य
ले. निरंजन तस्नीम, अनु. पंकज पराशर
पृ. 164, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4951-6

तत्त्वमसी
ले. ध्रुव भट्ट, अनु. नरेश कुमार विकल
पृ. 184, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4941-7

मलयाळम्

नवीन तमीझ चिरुकयाकल
ले. सा. कंडासामी, अनु. के.एस. वेंकिटचलम
पृ. 272, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5142-7

मणिपुरी

अटप्पा लोंगिवरिमा चा
सं. एवं सं. एन. कुंजमोहन सिंह
पृ. 170, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-3107-8 (पुनर्मुद्रण)

मराठी

पु. शी. रेगे यौंची निवडक कविता
सं. प्रकाश देशपांडे
पृ. 208, रु. 175/-
ISBN : 81-7201-262-4 (पुनर्मुद्रण)

सत युगोस्लाव लघुकथा
अनु. गौरी देशपांडे
पृ. 60, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-5129-8 (पुनर्मुद्रण)

वान-हंसी
ले. इब्सन, अनु. मामा वारेरकर
पृ. 140, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5127-4

नेपाली

भारतीय नेपाली नाटक संचयन
सं. एवं सं. लक्ष्मण श्रीमल
पृ. 458, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5036-9

ओड़िया

1950 परवर्ती ओडिया कविता
सं. एवं सं. भगवान जयसिंह
पृ. 260, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4223-4 (पुनर्मुद्रण)

अभिनय चंद्रगुप्त
ले. जयशंकर प्रसाद
अनु. कृष्ण चरण रथ
पृ. 152, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-2302-8 (पुनर्मुद्रण)

आदिवासी मौखिला साहित्य परंपरा
सं. एवं सं. चित्रसेन पसायत
पृ. 144, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-2457-5

बाघ तपुरे रति (अ.पु. असमिया कहानी-संग्रह)
ले. अपूर्वी सरमा
अनु. ज्योत्स्ना बिस्वाल राउत
पृ. 172, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4087-2 (पुनर्मुद्रण)

कान्हू चरण चयनिका
सं. एवं सं. मनोरंजन प्रधान
पृ. 488, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4215-9 (पुनर्मुद्रण)

क्योंथी नाहीं सेथी (अ.पु. हिंदी कविता-संग्रह)
ले. अशोक वाजपेयी
अनु. विद्युत पर्वा गप्तायत
पृ. 164, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5016-1

ओडिया कथाधारा
सं. एवं सं. प्रतिभा रे
पृ. 336, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-3379-9 (पुनर्मुद्रण)

मंडन मिश्र (विनिबंध)
ले. उदयनाथ झा अशोक
अनु. श्रीनिवास आचार्य
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4971-4

संतालीन लोक कहानी
सं. एवं सं. जितेंद्रनाथ मुर्मू
अनु. दमयंती बेसरा
पृ. 140, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-5023-9

विज विज ऋतु
ले. पल्लवी नायक
पृ. 91, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5022-2

पंजाबी

आधुनिक भारतीय कविता-संग्रह (हिंदी)
(1950-2010)
सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
अनु. अमरजीत कौंके
पृ. 260, रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-5092-5

एक गली विकाऊ नाही
ले. ना. पार्थसारथी
अनु. रवि रविंदर
पृ. 180, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-5087-1

किशन सिंह (विनिबंध)
ले. हरभजन सिंह भाटिया
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5088-8

कयाप
ले. मनोहर श्याम जोशी
अनु. राजीव सेठ
पृ. 180, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-5086-4

वाणभट्ट दी आत्म कथा
ले. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, अनु. बलदेव सिंह
पृ. 302, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4882-3

राजस्थानी

पखेरु
ले. रामलाल
अनु. परमेश्वर लाल प्रजापत
पृ. 184, रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-4754-3

संस्कृत

द्राक्षावल्ली
सं. हर्षदेव माधव
पृ. 244, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5048-2

सिंधी

सिंधी उपन्यास जी चूँद तन्क़ीद
सं. लक्ष्मी खिलाणी
पृ. 184, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5126-7

तमिळ

अग्निसाक्षी
ले. ललितांबिका अंतराजनम
अनु. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-0586-6

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल, अनु. एच. बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5175-5

चेमीन
ले. शिवशंकर पिल्लै, अनु. सुंदर रामस्वामी
पृ. 352, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-0713-3

चित्तुक्कुरु वियाप पोल
सं. आर. मीनाक्षी
पृ. 160, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5002-4

धनुषकोडी रामासामी (विनिबंध)
ले. आर. कमारासू
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5012-3

कविताई माळाराम कलाम
ले. मेडर्न, अनु. रामगुरुनाथन
पृ. 160, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5011-6

नवीन तमिळ चिरुकथैगल
सं. सा. कंडासामी
पृ. 320, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-0891-1 (पुनर्मुद्रण)

नूरु वदमोझी कथइगल
ले. पद्म शास्त्री, अनु. अलामेलु कृष्णन
पृ. 256, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5009-3

सिर कदिका असाई
ले. डी. सुजाता देवी
अनु. के.एम.के. इलंगो
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5001-7

तेलुगु

मा उरी नादी
सं. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम, अनु. एन. गोपी
पृ. 104, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-5148-5

उर्दू

1084 की माँ (बाङ्ला क्लासिक)
ले. महाश्वेता देवी, अनु. विक़ार नासिरी
पृ. 118, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4867-0

आराम कुर्सी (अ.पु. तमिळ उपन्यास)
ले. थोपिल मुहम्मद मीरान
अनु. श्रवण कुमार वर्मा
पृ. 292, रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-4872-4

बलराज कोमल (विनिबंध)
ले. भुपिंदर अज़ीज़ परिहार
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4874-8

हिंदुस्तानी मख़ज़नुल मुहावरात
(दुर्लभ पुस्तक श्रृंखला)
ले. चिरंजी लाल, परि. शमीम तारिक़
पृ. 532, रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-4869-4

कबीर की कथाएँ
ले. राम आसरा राज़
पृ. 240, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4871-7

शहज़ादा दाराशिकोह, खंड-1
(सा.अ. पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय, अनु. ख़ुर्शीद आलम
पृ. 640, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4873-1

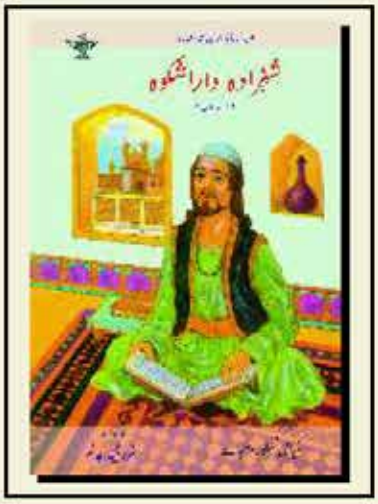

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित